आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
जून–2024, RNI-50756
वर्ष-34, अंक-403 मूल्य 150/-

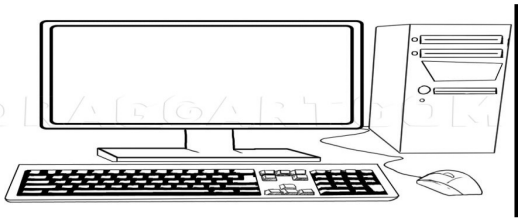

अपनी बात...

प्रिय समस्त!

जून 2024 के अंक में जान कर थोड़ा विलंब रखा गया। 1 जून को जहां लोकसभा चुनावों का समापन था वहीं 4 जून को लोकप्रिय सरकार के गठन केलिए मतगणना का दिन तय था। यह कहना सच्चाई से मुख मोड़ने के समान होगा कि साहित्य का राजनीति या सत्ता से कोई सरोकार नहीं होता। साहित्य में समस्त समकाललीन गतिविधियों का निर्वहन होता है कुछ कम कुछ अधिक।

इन चुनावी सरगरमियों से अलग हट कर आइये कुछ विशेष साहित्यिक गतिविधियों की चर्चा कर ली जाय।

मित्र एवं बहु-विधा लेखक श्री विष्णु सक्सेना जी का आमंत्रण था। दिनांक 12 मई को अमर भारती साहित्य संस्कृति संस्थान के तत्वावधान में उनकी सद्य प्रकाशित लघुकथा पुस्तक 'अँधेरों से आगे' का लोकार्पण व काव्य गोष्ठी का आयोजन गाजियाबाद में एमएमएच कॉलेज परिसर के सन्निकट प्रस्तावित था। श्री विष्णु सक्सेना बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं, कुशल साहित्यकार हैं। उन्हें उनके खंड काव्य 'सुनो राधिके' पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से पुरस्कृत भी किया जा चुका है। जैसा कि मैंने कहा श्री विष्णु सक्सेना विविध आयामी व्यक्तित्व का नाम है। उनकी लघुकथाएं इस बात की तसदीक करती हैं। संगृहीत संकलन की लघुकथाएं आकार में, शिल्प में छोटी दिखाई अवश्य पड़ती हैं किन्तु

उनकी मारक क्षमता बहुत दूर वाली है। रविवार को विष्णु सक्सेना के लघुकथा संग्रह 'अंधेरों से आगे' का लोकार्पण व काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। वेस्ट माडल टाउन स्थित फ़ूड चेज कैफ़े में हुए इस कार्यक्रम में उपस्थित साहित्यकारों ने जहां 'अंधेरों से आगे' पुस्तक में संकलित लघुकथाओं के कथ्य एवं शिल्प पर अपने विचार रखे, वही गोष्ठी में कवियों ने समकालीन विषयों पर शानदार रचनाओं की प्रस्तुति से समां बांध दिया।

लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध लघुकथाकार बलराम अग्रवाल ने अपने संबोधन में कहा कि कथा कहने की विभिन्न विधाओं जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक की तरह ही लघुकथा भी अब एक सशक्त विधा के रूप में हिन्दी साहित्य में स्थापित हो चुकी है। आज पठन-पाठन की संस्कृति कुछ कमजोर पड़ रही है, बड़े उपन्यास

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

या लंबी कहानियाँ पढ़ने का धैर्य बहुत कम पाठकों में बचा है। ऐसे में अच्छी लघुकथाओं की आवश्यकता है। अपने कथ्य, शिल्प और आकार के चलते लघुकथाएं पाठकों के बीच बहुत ही लोकप्रिय बन गई हैं। कहावतों की पृष्ठभूमि में छिपी कथाओं का भी इस संदर्भ में उन्होंने ज़िक्र किया। श्री बलराम अग्रवाल के सम्बोधन के बाद लघुकथा के कथ्य एवं शिल्प विधान पर विमर्श को आगे बढ़ाते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष के आसान से मैंने कहा कि लघुकथा की शब्द

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

सीमा को लेकर समीक्षकों के बीच अभी तक एक राय क़ायम नहीं हो पायी है। कोई 500 शब्दों में लिखी कथा को लघुकथा बता रहा है तो कोई 1000 शब्दों में लिखी कथा को। इस संबंध में कुछ स्पष्ट नियम तय किए जाने आवश्यक हैं।

इससे पूर्व सुरुचि सक्सेना ने चंडीगढ़ के वरिष्ठ साहित्यकार फूलचन्द मानव व डॉ रमेश कुमार भदौरिया ने वरिष्ठ गीतकार डॉ धनंजय सिंह की समीक्षात्मक टिप्पणियों का पाठ किया।तत्पश्चात् सुरेंद्र अरोड़ा व ओमप्रकाश कश्यप ने पुस्तक में वर्णित लघुकथाओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कविता की तरह लघुकथा में भी प्रतीकों व बिंबों को महत्वपूर्ण बताया। इस अवसर पर विष्णु सक्सेना ने अपनी दो लघुकथाओं का अपने अंदाज में पाठ भी किया।

इस अवसर पर आयोजित काव्य गोष्ठी में डॉ योगेंद्र दत्त शर्मा, वेद शर्मा वेद, जगदीश पंकज, डॉ आर के भदौरिया, नेहा वैद, अवधेश सिंह बंधुवर, तूलिका सेठ, प्रतिमा पुष्प (भदोही से पधारी) ने काव्य पाठ किया। अमर भारती साहित्य संस्कृति संस्थान के महासचिव प्रवीण कुमार ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

कार्यक्रम में वीना सक्सेना, सुरुचि सक्सेना, निधि राज व रूपक राज आदि साहित्य प्रेमी मौजूद रहे।

संपर्क भाषा भारती की प्रथम गोष्ठी 19 मई 2024

इस वज्र की गर्मी में गर्मी चढ़ी थी कि इस मास साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन अवश्य हो जाये।

संचालन होता था और वार्षिक Health India डाइरैक्टरि का प्रकाशन यहाँ से होता था।

दरअसल मासिक गोष्ठे के आयोजन का विचार पिछले काफी दिनों से आंदोलित कर रहा था।

राजधानी दिल्ली में 40 लोगों के सुव्यवस्थित बैठाने और साथ ही बड़े Ante-room और किचन स्पेस की उपलब्धता थी पर किसी न किसी कारण से यह आयोजन टलता जा रहा था।

पर, "स्टूडिओ" कहे जानेवाले इस फ्लैट में वर्षों से मेरा आना-जाना नहीं होता था। पहले वर्ष 2000 से यहाँ से 'निशेन्दु स्टूडिओ' का निशेन्दु आडिओ रिकॉर्डिंग स्टूडिओ तो कोविद काल तक यहाँ से भोजपुरी के संगीत निर्देशक (राजेश-सुमन वाले) सुमन किराये पर चलाते रहे। किन्तु उनके जाने के बाद से मेरा यहाँ आना भी बंद हो गया था।

खैर, जो स्थान किराये पर नहीं दिया गया था, उसमें टाइल इत्यादि लगवा कर छोड़ दिया गया था, यहाँ सफाई भी समस्या थी। इसके बाद कुछ स्थायी कुर्सी-मेज़ का प्रबंध अनिवार्य था, अंततः यह भी पूरा हुआ।

भारतीय लोक वीथिका

कार्यक्रम 19 मई 2024 को आयोजित करने की घोषणा करते ही एमसीडी विभाग की नींद टूटी, उन्होंने गली के पुनर्निर्माण का निर्णय ले लिया और पूरी गली पुराने ऊनी स्वेटर की तरह उकस डाली। गली की स्थिति देख कर मन हुआ कि कार्यक्रम फिर कुछ दिनों केलिए स्थगित कर दिया जाय।

पर, नहीं!

मैंने सोचा हर बार ऐसा कुछ न कुछ होता ही रहेगा। तो, 19 मई को अपराहन ढाई बजे से कार्यक्रम आयोजित हुआ। सुश्री :

(1) पुष्पा सिंह बिसेन

(2) चंद्रकांता सिवाल चंद्रेश

(3) प्राची कौशल

(4) कुसुम सिंह

(5) प्रतिमा पुष्प (भदोहीं)

(6) सविता सिंह सवि

सर्वश्री :

(7) खगेश शर्मा

(8) चंद्रकिशोर पाराशर

(9) दिनेश तिवारी

(10) दिनेश गौड़

(11) अरुण कुमार अरुण

(12) अरविंद मिश्रा

(13) राजेश प्रभाकर

(14) राजेश श्रीवास्तव

(15) सुभाष सिंह यादव

(16) पुष्प धन्वा

(17) विज्ञान व्रत

(18) सुरेन्द्र कुमार शर्मा

(19) विनय विक्रम सिंह

(20) विष्णु सक्सेना जी

को कार्यक्रम स्थल ढूँढ़ने में कठिनाई के चलते वापस लौटना पड़ा। किन्तु, उनका आशीर्वाद, स्नेह हमें प्राप्त हुआ।

इन सब के अतिरिक्त सुधी श्रोताओं की भी उपस्थिती रही।

सभी रचनाकारों ने उन्मुक्त स्वर और भाव में अपनी रचनाओं का पाठ किया।

कार्यक्रम साँय छह बजे तक जारी रहा। जून मास में अगले प्रस्तावित आयोजन की तिथि की घोषणा शीघ्र की जाएगी। पहले आयोजन की सफलता, प्रेरणा स्रोत रहेगी। व्यस्तता की वजह से फोटो खींच नहीं पाया, उन्हें मंगाया गया है।

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

जून-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय : कुछ कार्यक्रम...		2
2	पुस्तक समीक्षा	चाणक्य वार्ता : सतीश बब्बा	11
3	पुस्तक समीक्षा	वाङ छी : डॉ उपमा शर्मा	12
4	पुस्तक समीक्षा	किन्नर काव्य : संदीप मिश्र	16
5	कविता	दुर्गेश के दोहे : विनोद शर्मा	17
6	कविता	रवीन्द्र कुमार शर्मा	19
7	कविता	ब्रह्मानन्द गुप्त	19
8	कविता	रमेश मनोहरा	20
9	लघुकथा :	ज्योत्सना सिंह	20
10	लघुकथा :	सीता राम गुप्ता	21
11	कवितायें	दीपक कुमार	22
12	कविता	वीरेंद्र कौशल	22
13	कविता	राजपाल सिंह गुलिया	23
14	लघुकथा	मृत्युंजय कुमार	23
15	कविता	ब्रह्मानन्द गुप्ता	24
16	कविता	ललित प्रताप सिंह	24
17	कविता	विकास पाण्डेय विदीप्त	24
18	लघुकथा : अधिक	नीना सिन्हा	25
19	लघुकथा : हाँ! मैं शादी नहीं करना चाहती	जयचंद प्रजापति	25
20	कविता	विकास तिवारी	26
21	लघुकथा : बेकसूर	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'	26
22	कहानी : हम सब हत्यारे हैं	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'	27
23	जब आरंभ हुआ भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम	कृष्ण कुमार यादव	30
24	कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया	34
25	21वीं सदी में महिलाओं का समाज में दृष्टिकोण	छविन्दर कुमार	35
26	रक्तदान से ज़िंदगी का उपहार	आकांक्षा यादव	40
27	प्रतिस्पर्धा और अवसाद	विनय बंसल	45
28	कविता	डॉ केवल कृष्ण पाठक	46
29	गीत	सूर्य प्रकाश मिश्र	46
30	कहानी : सुखी राजकुमार	अनुवाद : सुशांत सुप्रिय	49
31	लघुकथा	सोनल मंजू श्री ओमर	53
32	जब वृक्षों की रक्षा केलिए दे दी कुर्बानी	कृष्ण कुमार यादव	55
33	कविता	डॉ वीरेंद्र प्रसाद	58

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
34	पर्यावरण पर चार कवितायें	डॉ रामशंकर भारती	61
35	पुस्तक समीक्षा : अँधेरों से आगे	ओम प्रकाश कश्यप	64
36	कविता	रेखा शाह आरबी	69
37	कविता	रवीन्द्र कुमार शर्मा	69
38	प्री-वेडिंग : एक फिजूलखर्च	प्रिय देवांगना 'प्रियू'	71
39	कविता	बबिता सिंह	72
40	कविता	निर्मला कुमारी	76
41	कविता	नवीन माथुर पंचोली	76
42	कविता	रमेश कुमार सोनी	81

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा
प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

पुस्तक समीक्षा :

चाणक्य वार्ता

भारतीय डाक विभाग की लचर व्यवस्था के तहत विलम्ब से मिले चाणक्य वार्ता (पाक्षिक) पत्रिका का अंक - 9, वर्ष - 9, 1 से 15 मई, 2024 जिसमें मेरी रचना कविता 'मेरी मां' प्रकाशित की गई थी, प्राप्त हुई!

साथ में चाणक्य वार्ता वर्ष - 9, अंक 8, 16 - 30 अप्रैल, 2024 (पाक्षिक) राजभाषा हिंदी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका प्राप्त हुई। जो संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज स्मृति विशेषांक के रूप में था।

ISSN नंबर के साथ कवर पेज पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की छवि उनके तेज के साथ पूरी पत्रिका की रौनक बढ़ा रही थी।

कवर पेज पर ही आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का विचार - 'शक्तिशाली मन को कोई हरा नहीं सकता' पत्रिका के विचारों पर चार-चांद लगा रहा था।

पत्रिका की कितनी भी प्रशंसा करूं कम ही होगी। यह गौरवशाली 200 वां अंक मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण भी था।

कवर पेज पलटते ही एक चिट जिसे अपने लिए मैं चिट्ठी भी कह सकता हूं। लेकिन उसमें जो लिखा था "समीक्षा हेतु सादर भेंट" वह मेरे लिए विस्मयकारी था।

वास्तव में चाणक्य वार्ता अपने आप में एक दस्तावेज हुआ करती है लेकिन यह विशेषांक जो साक्षात परब्रह्म परमात्मा स्वरूप महापुरुष पर आधारित है और जो स्वयं अपने आप में प्रकृति हैं, भला मैं उनके अंक पर कौन सी समीक्षा लिखूंगा लेकिन इस बड़ाई को मुझे देने वाले संपादक महोदय का मैं हृदय से आभारी हूं।

प्रथम पृष्ठ में ही संत शिरोमणि का चित्र अपने आप नमन करने के लिए शीश झुक जाता है। जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित प्रधानमंत्री आयरलैंड और बहुत सी देशी विदेशी हस्तियों के नाम जिन्होंने श्रद्धांजलि पत्र भेजा था नाम अंकित थे जो बहुत ही सराहनीय हैं।

पृष्ठ 2 पर अनेक छवियां जो नरेन्द्र मोदी और सर संघ प्रमुख मोहन भागवत आदि हस्तियों के साथ आचार्य श्री विद्यासागर जी की छवियां शोभायमान हो रही थी।

पृष्ठ संख्या 3 और 4 पर अनुक्रमणिका और पृष्ठ संख्या 5 पर पाठकों के पत्र जो बहुत ही प्यारे और सराहनीय हैं।

भला मैं कौन सी समीक्षा लिखूंगा लेकिन संत शिरोमणि विद्यासागर जी के बारे में जानकारी प्राप्त कर मैं धन्य जरूर हो गया हूं।

पृष्ठ संख्या 8 पर संत शिरोमणि विद्यासागर महाराज के बारे में जो अद्भुत और संग्रहणीय जानकारी दी गई है और कुण्डलपुर में और नेमावर में डा. अमित जैन जी द्वारा लिखित उनके स्वभाव, रहन सहन आदि तथा उनसे डॉ. अमित जैन जी जब जब और जैसी स्थिति में मिलन हुआ तथा कुण्डलपुर में अंतिम बार आशीर्वाद लेते हुए जो पृष्ठ संख्या 9 में उकेरित छवि और अमरकंटक में आचार्य शिरोमणि विद्यासागर जी को शास्त्र भेंट की अमर छवि पत्रिका की उत्कृष्टता को दर्शाती है।

पृष्ठ संख्या 10 में खंड 1 परिचय में महारज जी का संपूर्ण परिचय देकर पत्रिका का कद और बढ़ गया है।

पृष्ठ संख्या 11 में श्रमण संघ के आगामी आचार्य निर्णायक श्रमण मुनि श्री समय सागर जी महाराज का विस्तृत परिचय पत्रिका की गुणवत्ता में चार-चांद लगा रहा है।

खंड 2 श्रद्धांजलि पृष्ठ संख्या 12 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और पृष्ठ संख्या 13 में आयरलैंड के प्रधानमंत्री का संदेश हू ब हू छापा गया है।

अगले पृष्ठों में नितिन गडकरी आदि राजनेताओं के संदेश हू ब हू पृष्ठ संख्या 29 तक भरे पड़े हैं। जो पत्रिका और आचार्य शिरोमणि विद्यासागर जी महाराज के महत्व को रेखांकित करती है।

आगे पृष्ठ संख्या 38 तक प्रवासी साहित्यकारों और जानी मानी हस्तियों के संदेशों से भरे हुए हैं।

पृष्ठ संख्या 39 में खंड 3 में महत्वपूर्ण लेख/ साक्षात्कार जिसके लेखक स्वयं भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं इसी लेख के अंतर्गत एक चित्र भी है जिसमें भोपाल में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन करते, शीश झुकाए हुए नरेंद्र मोदी हैं और आचार्य श्री के शिष्य भी वहां मौजूद हैं।

इसी लेख में है कि, आचार्य जी जैसे व्यक्तियों के कारण ही, आज पूरी दुनिया को जैन धर्म और भगवान महावीर के जीवन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है। वो जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणाश्रोत रहे। विभिन्न पंथों, परंपराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सानिध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया।

मैं विशेष रूप से आने वाली पीढ़ियों से यह आग्रह करूंगा कि वे राष्ट्र निर्माण के प्रति संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की प्रतिबद्धता के बारे में व्यापक अध्ययन करें। वे हमेशा लोगों से किसी भी पक्षपात पूर्ण विचार से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया करते थे। वे मतदान के प्रबल समर्थकों में से एक थे और मानते थे कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने हमेशा स्वस्थ और स्वच्छ राजनीति की पैरवी की।

पृष्ठ संख्या 40 में चंद्रगिरी में आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त करते नरेन्द्र मोदी का चित्र है और इसी पृष्ठ पर उनका आलेख समाप्त होता है। यह लेख / साक्षात्कार पत्रिका की गुणवत्ता दर्शाता है।

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी द्वारा लिखित लेख आचार्य श्री विद्यासागर -- व्यक्तित्व एवं कृतित्व सराहनीय है। बहुत सी जानकारियों से परिपूर्ण है।

ब्र. जयकुमार निशांत और डॉ. सुनील जैन संचय इनके लेख भी बहुत अच्छे जानकारी पूर्ण हैं।

डॉ. अमित कुमार जैन 'आकाश' ने तो गागर में सागर भर दिया है। उन्होंने बहुत ही ढंग से पंडित भूरामल शास्त्री के बारे में अच्छी जानकारी दी है। और प्रिंस जैन ने अच्छी प्रस्तुति दी है।

ब्र. जिनेश मलैया, राकेश मोहित और न्यायमूर्ति विमला जैन ने बहुत ही अच्छा लिखा है।

साक्षात्कार, विद्वानों की दृष्टि में आचार्य श्री और देश भर के विद्वानों के आचार्य श्री के प्रति अच्छे विचार और साक्षी जैन का लेख मूकमाटी महाकव्य में नारी का उदात्त स्वरूप और भी उनके साहित्यिक संरचनाओं के बारे में लिखे गए एक एक शब्द संग्रहणीय और प्रशंसनीय हैं।

अंकुर जैन द्वारा लिखित संस्मरण अद्वितीय है। डॉ. अरिहंत कुमार जैन की कविता साधक जीवन की सार्थकता बहुत ही सराहनीय है।

धीरेन्द्र मिश्र जो चाणक्य वार्ता के व्यूरो चीफ हैं उनकी प्रस्तुति बहुत ही सराहनीय है।

सिनेमा. टेलीविजन. आयोजन. सम्मान डॉ. महेश्वर की प्रस्तुति बहुत ही सराहनीय है।

कुल मिलाकर यह अंक अनोखा, अद्वितीय और अद्भुत, संग्रहणीय है। मैं इसकी समीक्षा लिखूंगा ऐसी मुझमें क्षमता कहां है। मैंने तो आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में चंद श्रद्धा सुमन अर्पित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि, प्रबुद्ध पाठक एवं विद्वत पत्रिका के संपादक एवं सदस्यों को यह पसंद आएगी।

एक स्वर्णिम पुष्पों की माला में,
मैं चंद वाक्य पुष्प पिरोने चाहे,
आचार्य श्री के चरणों में,
मैंने श्रद्धा सुमन चढ़ाने चाहे!!

प्रतिक्रिया की आशाओं और आकांक्षाओं को हृदय तल पर स्थित करते हुए बस इतना ही। चाणक्य वार्ता पाक्षिक पत्रिका पत्रिका ही नहीं दस्तावेज इसका हर अंक हुआ करता है। लेकिन यह विशेषांक तो बहुत ही सुन्दर अद्वितीय और अद्भुत संग्रहणीय है।

डॉ. सतीश "बब्बा"

ग्राम+ पोस्टाफिस= कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208. मोबाइल - 9451048508, 9369255051.

गहन अनुभूतियों की कहानियों का संग्रह 'वांग छी '

कहानियाँ देश और समाज की वे वास्तविक तस्वीर होती हैं जिन्हें कथाकार संवेदनाओं की अथाह गहराइयों में डूब कर सृजित करता है। 'वांग छी' कहानी संग्रह से गुज़रते हुए मन अनायास ही कथाकार के पात्रों की पीड़ा से जुड़ जाता है। ये कहानियाँ उर्वर संवेदनाओं की उपज हैं जो पाठक के हृदय पर बहुत समय तक स्थान बनाये रहती हैं।

इस कहानी संग्रह की पहली कहानी 'खिरनी' पढ़ते हुए पाठक के भीतर खिरनी-सी ही मिठास अनायास घुल जाती है। बचपन कितना निश्छल और मासूम होता है। कथाकार ने कहानी को बड़े सुंदर बिम्बों से सजाया है। खिरनी चम्बल और मालवा में पाया जाने वाला छोटा-सा एक दुर्लभ फल है बिल्कुल प्रेम के सदृश। प्रेम पगी नायिका खिरनी की मिठास में डूबी रहती है और नायक की आँखे बचपन से ही रेस में प्रथम आने के सपने बुनती हैं। प्रेम-स्मृतियों की पूँजी सँभाले कथा नायिका जिसे प्रेम में नीम भी मीठा लगता है लेकिन जिंदगी की भाग दौड़ में अव्वल आने के लिए बहुत तेजी से दौड़ने वाला नायक जो अभी भी नायिका की कोमल भावनाओं के प्रति उतना ही संवेदनहीन है। इस कहानी में अधूरे प्रेम की कसक गलतान खिरनी की मिठास को नीम की कड़वाहट में तब्दील कर देती है और पाठक पर प्रेम में डूबी लड़की का जादू देर तक छाया रहता है।

सरहदों का बँटवारा किसी मनुष्य के जीवन को किस हद तक प्रभावित कर सकता है, इस बात का अहसास हमें संग्रह की शीर्षक कहानी 'वांग छी ' में शिद्दत से होता है। दो सीमाओं में बँटे देश के व्यक्तियों का भी बँटवारा हो जाता है। इस लाइन के इस पार से उस पार जाने के नियम इतने सख्त हैं कि व्यक्ति चाह कर भी इस पार से उस पार अपनों से मिल नहीं सकता। वांग छी के घर दो देशों में बस गये लेकिन ज़रूरत पर वे सीमा-रेखाओं की बाधा से न इधर के हो पाते हैं न उधर के. वे एक भी जगह सही समय पर उपस्थित न रह सके। कैसी विडम्बना है कि अफ़सरों के दिल भी पत्थर के हो जाते हैं, जहाँ संवेदनाओं की कोई सुनवाई नहीं।

टॉल्स्टॉय के शब्दों में कथानक सदा जीवन के कोलाहल से, वर्तमान समय के जीवंत अंतर्विरोध से उत्पन्न होता है। यह किसी सामाजिक अंतर्विरोध के प्रकटीकरण की चाबी है। मनीष वैद्य की कहानियाँ इस कसौटी पर पूरी तरह खरी उतरती हैं। ये कहानियाँ जीवन की सहज घटनाओं से स्वाभाविक और अकृत्रिम रूप से संवेदनाओं को उथल-पुथल कर पन्नों पर उतरी हैं। इसीलिए ये कहानियाँ हमें बेहद प्रामाणिक लगती हैं, जैसे वे अपने ही आसपास घट रही कोई बात कह रहे हों। वे किसी भी तरह से कहीं अविश्वसनीय नहीं होती हैं।

इन कहानियों के कथानक यथार्थ और बदलते समय की परिस्थितियों

से उपजे हैं। वो तथाकथित विकास, तेज़ी से बदलते समय के गाँव, शहर ,टैक्नोलॉजी और इससे पुराने व्यवसाय पर उत्पन्न हुआ संकट, दो देशों के बीच की सीमा-रेखा पर कड़वाहट से किसी व्यक्ति पर पड़ने वाले असर के माध्यम से बदलते समय की स्थितियों का लेखक चित्रण ही नहीं करते अपितु उन पर वैचारिक मत भी रखते हैं। इनकी कहानियों में राजनीति,समाज और जीवन की आलोचनात्मक व्याख्या है। ये कहानियाँ मनुष्य के दु:खों पर ऊँगली रखती हैं, जीवन को समझने का व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करती हैं, इसलिए मनीष वैद्य लोकजन के बेहद लोकप्रिय कथाकार हैं। उन्होंने अपने इस नए संग्रह में शामिल कहानी चूहेदानी, एचएमटी 3511, कंधे पर घंटाघर, अगन मानुष, पहले जोड़, फिर घटाव फिर जोड़ और जुगलबंदी में विकास की अंधी दौड़ और टेक्नोलॉजी की वजह से पिछड़ते पुराने कारोबार के सतत ह्रास से लोगों की आजीविका पर उपजे संकट से विपन्न लोगों की मन स्थिति पर बखूबी कलम चलाई है।

कहानी के बारे में इस्पहानी भाषा के महान रचनाकार बोर्खेज ने लिखा है कि सृष्टि की रचना करने वाले ने सृष्टि के आरम्भ में ही कहानी लिख दी थी। हर दौर का लेखक उसे अपने-अपने ढंग से लिखता है।

इसी बात को चरितार्थ करते हुए मनीष वैद्य संवेदनशील कथाकार हैं। रूस-यूक्रेन के युद्ध की पीड़ा से उपजी संवेदनाओं को कथावस्तु बनाकर उन जैसा कथाकार ही 'स्कायलैब' जैसी संवेदनशील प्रेम कहानी लिख सकता है। युद्ध से पहले किसी को यूक्रेन जैसे छोटे देश में बहुत ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी लेकिन रूस के उसे युद्ध में तहस-नहस करने से देश-दुनिया के लोगों को यूक्रेन से एक विशेष लगाव हो गया। युद्ध में यूक्रेन के हताहत सैनिकों और मलबे के ढेर में बदलते शहरों को देख शायद ही कोई ऐसा संवेदनशील व्यक्ति होगा जिसकी आँखें नम न हुई हों।

मनीष वैद्य इन संवेदनाओं को रिजवाना के माध्यम से यूँ लिखते हैं " कितनी सुंदर सलोनी है यह दुनिया लेकिन हमने आज इसे किस मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया है। उसने कभी दुनिया के नक्शे में यूक्रेन नहीं देखा, लिहाजा उससे उसका जुड़ाव कभी किसी रूप में नहीं रहा लेकिन अभी जब से रूस ने उसे नेस्तनाबूद करना शुरू किया है, यूक्रेन अनदेखा-अनजाना होते हुए भी उसके दिल के एक हिस्से में धड़कने लगा है। "

रिजवाना अपनी पोती रिजा के मोबाइल पर आये मैसेज को देख अनायास ही चालीस साल पहले के उन हालातों में पहुँच जाती है जब रूस और अमेरिका में उपग्रह भेजने की होड़ सी मच गई थी। स्काईलैब उपग्रह का टनों वजनी मलबा गिरने वाला था।लोग डरे-सहमे थे कि इतना भारी उपग्रह जिस जगह गिरेगा तो वहाँ के लोग बचेंगे भी कि नहीं। ऐसे हालातों में करीम और रिजवाना भी अपनी मोहब्बत को लेकर चिंतित थे। दोनों इस आसमानी आफ़त के गुज़रने के बाद एक होने का सोच रहे थे। आसमानी आफ़त एक निर्जन स्थान पर गिर गई। दुनिया बच गई। जब करीम को पता चलता है रिजवाना की शादी कहीं और हो गई, स्काईलैब की आफ़त से बच गया लेकिन उसके प्रेम की दुनिया लुट गई। वह पूछना चाहता है -"क्या दुनिया बची रही? पर किससे पूछे? "

कहानी अपने दूसरे उत्कर्ष को छूती है जब रिजवाना को अंशुल में करीम नज़र आता है। दुनिया चाँद पर पहुँच गई। बहुत कुछ बदला लेकिन दो प्रेम करने वालों के हालात आज भी वैसे ही हैं। क्या बदला? कुछ भी तो नहीं।

शिल्पगत दृष्टि से इन कहानियों की भाषा सरल और जीवंत है। शैली और शब्द चयन एक निरंतर सृजनशील साहित्यकार की शैली का आनंद देते हैं। यद्यपि कुछ कहानियों की विषय वस्तु एक ही धरातल से ली गई है लेकिन कहीं भी दोहराव नहीं लगता। हर कहानी एक से बढ़कर एक लगती है। उनमें आम आदमी का डर, उसकी भावानुभूतियाँ बड़े ही मनोविश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत की गई हैं। निसंदेह यह एक उत्कृष्ट कहानी संग्रह है जो पाठकों के मन पर देर तक असर छोड़ेगा।

वांग छी (कहानी संग्रह)
लेखक- मनीष वैद्य
प्रथम संस्करण फरवरी 2024
मूल्य- 275 रुपये
सेतु प्रकाशन, नोएडा

डॉक्टर उपमा शर्मा, बी-1/248, यमुना विहार, दिल्ली 110053
8826270597

किन्नर काव्य -एक समीक्षात्मक दृष्टि

पुस्तक- किन्नर काव्य
(ट्रांसजेंडर पर केंद्रित डॉ महेंद्र भीष्म के उपन्यास "किन्नर कथा" का काव्य अनुवाद)
लेखक~श्री आशीष कुलश्रेष्ठ
सम्प्रति-उत्तर प्रदेश सरकारी विभाग में निदेशालय स्तर पर सेवारत
प्रकाशक~प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
संस्करण-प्रथम (2021)/ मूल्य-200 /पृष्ठ -151

किसी बहुचर्चित पुस्तक का अनुवाद लिखना जितना चुनौती पूर्ण कार्य होता है उससे कहीं अधिक उसके अनुवाद पर कुछ समीक्षात्मक लिखना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

लेकिन जब कोई अनुवाद अनुवाद न होकर उसे पुस्तक का विधा परिवर्तन मात्रा प्रतीत हो तो चर्चा लाजिमी हो जाती है।

महेंद्र भीष्म के उपन्यास किन्नर कथा के काव्य रूप किन्नर काव्य के

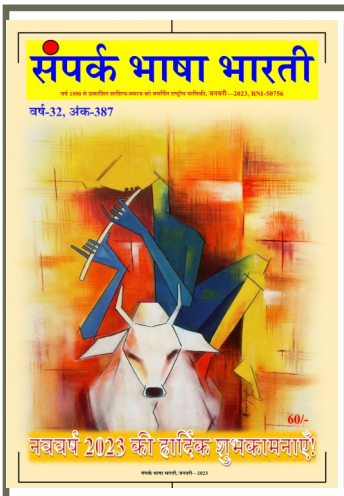

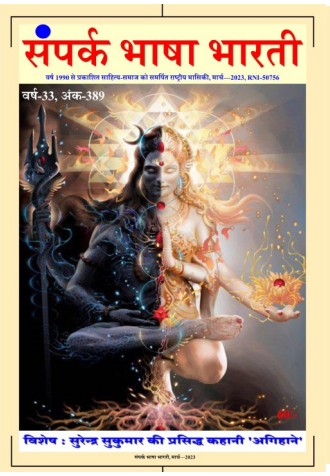

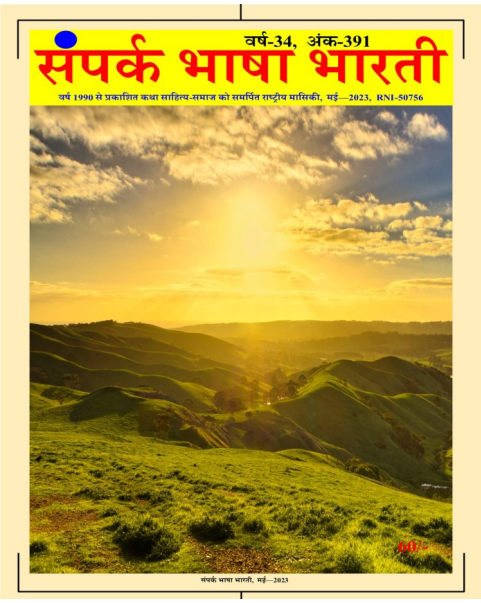

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

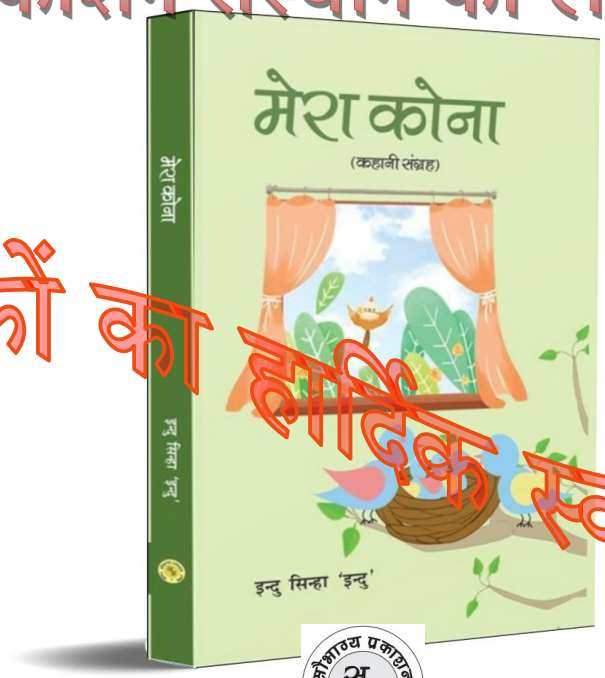

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

रचयिता आशीष कुलश्रेष्ठ जी एक प्रभावशाली रचनाकार हैं।

इस पुस्तक में पूरी रचनात्मकता के साथ उनके काव्य सौष्ठव की उपस्थिति हम सहज महसूस कर सकते हैं। वे इस बात के लिए बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने वंचित तबके की पीड़ा को शाश्वत काव्य स्वर प्रदान किया है। समाज के अस्पृश्य वर्ग के निजी जीवन में झांकने का साहस किया है।

कुल 26 भागों में समायोजित यह काव्य अनुवाद किन्नर काव्य, आशीष कुलश्रेष्ठ जी की काव्यात्मक दक्षता और संप्रेषण क्षमता का जागृत प्रमाण है।

शिल्प की सरलता और भाषा की सहजता ने इस पुस्तक को बेहद प्रभावी बना दिया है। भाषा, कथ्य, तथ्य, भाव पक्ष के सुदृढ़ संतुलन ने किन्नर काव्य को मूल्यांकन का हकदार बनाया है।

कहानियों के नाट्य रूपांतरण की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उपन्यास के काव्य रूपांतरण की यह अनूठी पहल, साहित्य में नवाचार का शोभित उदाहरण प्रस्तुत करेगा।

साहित्य समाज का दर्पण भी होता है और सामाजिक चेतना का सजग प्रेरक भी। साहित्य सदैव युगीन चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। सामाजिक विसंगतियों और विद्रूपताओ के विरुद्ध विभिन्न विमर्श आंदोलनो का साहित्य सदैव साक्षी रहा है। चाहे आधी आबादी की अस्मिता के संघर्ष से जुड़ा स्त्री विमर्श आंदोलन हो, चाहे दलित आदिवासी चेतना के स्वर को मुखर करता है दलित विमर्श हो। इन विमर्शों की श्रृंखला में विकलांग और किन्नर विमर्श भी उल्लेखनीय है।

हमारे पौराणिक रामायण रामचरितमानस और महाभारत में किन्नरों का उल्लेख मिलता है।

जयशंकर प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी में, पांडे बेचन शर्मा उग्र ने अपनी कुछ कहानियों में और महाप्राण निराला ने चतुरी चमार में किन्नर विमर्श को रेखांकित किया है। राहुल सांकृत्यायन ने भी किन्नरों पर लेखनी चलाई है।

किन्नर कथा में बुंदेलखंड अंचल के जैतपुर रजवाड़ों के महाराज जगत सिंह बुंदेला अपने क्षेत्र के बेहद प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे। उनके यहां जुड़वा बेटियों का जन्म होता है, जिनका नाम सोना और रूपा रखा जाता है। सोना के किन्नर रूप में पैदा होने से बात मां सभी से छिपा कर रखती है। एक दिन जैसे ही राजा को इसका पता लगता है वह दीवान पंचम सिंह को बुलाकर सोना की हत्या की योजना बनाते हैं। मां इस बात के खिलाफ है वह सोना को पालने के लिए तैयार है। लेकिन राजा के समक्ष मजबूर हो गई।

लंबे वाद विवाद के बाद सोना के मुंह में अफीम चटाकर दीवान को ठिकाने लगाने के लिए सौंप दिया जाता है। लेकिन संवेदनशील दीवान पंचम सिंह ने उसे किन्नर तारा के सुपुर्द कर दिया और यह हिदायत भी दी कि इस घटना को सदैव गुप्त रखना।

किन्नर सोना उर्फ चंदा तारा के डेरे पर पलती, बड़ी होती है। तारा का भतीजा मनीष चंदा से बेहद प्रेम करता है। यहां तक कि जब उसे चंदा के किन्नर होने का पता चलता है तब भी उसके प्रेम में कोई शिथिलता नहीं आती।

किन्नर चंदा बधाई गीत के लिए इतनी प्रसिद्ध हो गई थी कि रईस घरों से उसे बधाई गाने के लिए बुलाया जाता था।

संयोग से वह अपने ही घर अपनी छोटी बहन के विवाह में नाच गाने के लिए सम्मिलित हुई। चंदा को यह रहस्य पता लग जाता है कि उसका इसी घर में सोना के रूप में जन्म हुआ था।

लेकिन इस बात से वाकिफ होने से आक्रोशित उसका भाई कुंवर सिंह आवेश में उसे गोली मार देता है। घायल चंदा अपनी असली मां की गोद में सर रखकर अपनी व्यथा कहती है। "मां भैया मुझे कोई दुख नहीं है। आप लोगों की गोद में जगह मिल गई बस मेरी यात्रा पूरी हुई। बहुत थक गई हूं मां। खूब सोना चाहती है तुम्हारी सोना। अब सुकून से मर सकूंगी। हिजड़ा का अभिशप्त जीवन जीते जीते आपकी गोद में बहुत शांति मिली है। ईश्वर से मेरे लिए प्रार्थना करना कि मेरा अगला जन्म आपके कोख से हो, वही मेरे पिता हों लेकिन मैं हिजड़ा पैदा न होऊं।

सोना को अस्पताल ले जाया जाता है वहां उसकी बहन और जीजा चिकित्सा के लिए उसे कनाडा ले जाते हैं। एयरपोर्ट पर उसे मिलने मनीष भी पहुंच जाता है और इस तरह सुखांत घटनाक्रम के साथ इस उपन्यास का अंत होता है।

कुल मिलाकर इतना सा ही किन्नर कथा का कथानक है लेकिन किन्नर कथा की संवेदना की बुनावट का फलक बेहद व्यापक है। उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें प्रमाणिक तत्वों को भी कथानक के साथ संप्रक्त करके इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि वह चरित्र , कथ्य , तथ्य के साथ विवेचना का केंद्र बनते हैं।

डॉ महेंद्र भीष्म कृत किन्नर कथा केवल उपन्यासित कृति मात्र न होकर किन्नरों के संदर्भ में गहन अध्ययन और अथक अन्वेषण का दस्तावेज है जो उपन्यास की स्वरूप में प्रस्तुत हुआ।

किन्नरों के स्वरूपों, उनके सामाजिक आर्थिक आधारों के साथ-साथ समस्या का निदान भी उपन्यास में उपस्थित है।

किन्नर कथा लैंगिक विकलांगता के कारण तृतीय लिंगी की समस्याओं और अधिकारों के लिए जूझते संघर्षों और मानवीय अस्तित्व व स्वाभिमान के अन्वेषण की कथा यात्रा है जिसे उपन्यासकार ने तार्किकता और संवेदनशीलता के साथ से लिपिबद्ध किया है।

किन्नरों का राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित संगठन समूह है। देश में उनके 450 धाम और उतने ही गुरु धाम है भारत में इनकी संख्या लगभग 15 लाख है। जिनमें नकली हिजड़ों की संख्या आधे से भी अधिक है। वे विभिन्न शाखाओं में विभक्त हैं जिसकी विशद चर्चा इस उपन्यास में

की गई।
यह सामाजिक विडंबना है कि किन्नरों के प्रति अभी भी लोगों का रवैया नकारात्मक ही है। जन्म विवाह अथवा अन्य मांगलिक कार्यक्रमों में उन्हें बुलाया जाता है लेकिन यजमान का व्यवहार उपेक्षा से भरपूर रहता है। आशीर्वाद लेने की औपचारिकता परंपरा के अंतर्गत की तो जाती है लेकिन समाज के अमानवीय व्यवहार और अछूत से भी बदतर आचरण ने इन्हें नारकीय जीवन जीने के लिए विवश कर दिया।
सामाजिक मान्यता है कि किन्नर की शुभकामनाओं व आशीर्वाद का फल मिलता है। यदि ये अप्रसन्न हो जाए तो उनकी बददुआएं लगती हैं। उपन्यासकार ने इस मान्यता को स्वीकार नहीं किया। उसकी मान्यता है की असली किन्नर आशीर्वाद मंगल कामना ही देने में विश्वास रखता है। वह कभी बद्दुआ नहीं देता। इसीलिए डॉक्टर महेंद्र भीष्म, किन्नरों को मंगलामुखी संबोधन के पक्षधर हैं।
किन्नर समूह में जन्मजात हिजड़ो का महत्वपूर्ण स्थान होता है जिन्हें दूसरा कहा जाता है लेकिन इनकी संख्या कम है। नकली हिजड़ो के अतिक्रमण से असली हिजड़े पार्श्व में है और इन्हीं नकली हिजड़ों की वजह से किन्नर समुदाय बदनाम है।
डॉ महेंद्र भीष्म अपने प्रकथन में लिखते हैं " हिजड़ा कहलाना किसी मर्द को अच्छा नहीं लगता। पिघला शीशा सा कानों में उतरता है और हिजड़ा को हिजड़ा कहो तो गाली नहीं लगती। पर कहीं अंतर में उसके मन में टीस जरूर लगती है। आखिर ईश्वर ने उसके साथ अन्याय क्यों किया। क्यों हम सब उसे अपने से दूर सामाजिक दायरे से बाहर रखते चले आए। उसके प्रति हमारी सोच में अश्लीलता का चश्मा क्यों चढ़ा रहता है।
हमें हिजड़ों को समाज के मुख्य धारा से जोड़ना होगा। उन्हें मान सम्मान देना होगा। उन्हें त्यागने की नहीं अपनाने की जरूरत है।
हम उनके दर्द को बांटे उन्हें हिजड़ा नहीं इंसान समझ समझें।
एक बात तय है संविधान में भले ही थर्ड जेंडर के लिए कोई प्रावधान बना दिया जाए लेकिन इस वर्ग को भारतीय समाज की स्वीकार्यता प्राप्त करने में अभी समय लगेगा। समाज के अवचेतन मस्तिष्क में बैठा गहरा उपेक्षा, हेयता भाव किसी कानूनी बैसाखी के सहारे किन्नर समाज के साथ न्याय नहीं कर सकता।
जब तक सामाजिक नैतिक मान्यताएं पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर मनुष्यता के धरातल पर सहज नहीं होती हैं तब तक कोई कानून इस समस्या के व्यापक समाधान के लिए कारगर नहीं साबित हो सकता।
मुझे विश्वास है कि आशीष कुलश्रेष्ठ जी की पुस्तक किन्नर काव्य थर्ड जेंडर से जुड़े विमर्श में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और किन्नर समुदाय की विषमताओं से सीधा संवाद करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

उत्तर प्रदेश सरकारी विभाग, लखनऊ में निदेशालय स्तर पर सेवारत आशीष कुलश्रेष्ठ जी कविता कहानी उपन्यास आलेख समीक्षा आदि विधाओं में बेहद समृद्ध लेखन करते हैं। आपकी रचनाएं देश की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है और तमाम प्रतिष्ठित संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है।
एक बेहतर काव्य अनुवाद के लिए आशीष जी को असीम बधाई अनंत शुभकामनाएं।

संदीप मिश्र सरस, पता-शंकरगंज-बिसवां(सीतापुर)उ प्र(261201)
मोबा-(9450382515)

दुर्गेश के दोहे

संशय

संशय मन मत पालिए, संशय करे तबाह।
संशय की दीवार को, दो इक पल में ढाह।

बदलें कब हालात

हुनरमंद करते सदा, नित नयी करामात।
काहिल बैठा सोचता, बदलें कब हालात।

जुमलों की सौगात

अपनी अपनी सब कहें, सुने नहीं पर बात।
बिन मांगे सबको मिले, जुमलों की सौगात।

बेगारी के भाव

समझौतों से चल रही, जीवन की यह नाव।
हर दिन बढ़ते ही गए, बेगारी के भाव।

ग़म रहें गुमनाम

साहस की शमशीर से, कटते बंद तमाम।
खुशियां अंग संग रहें, ग़म रहें गुमनाम।

विनोद वर्मा दुर्गेश, तोशाम, जिला भिवानी,

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-9-4**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 208
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

रवींद्र कुमार शर्मा

काश मेरा भी बचपन लौट आये
जब से नन्हीं परी हमारे घर है आई
जिंदगी में जैसे बहारों को खींच कर है लाई
नन्हीं चिड़िया की तरह फुदकती रहती है सारा दिन
पूरे घर में खूब उसने उछल कूद है मचाई

दादा के साथ ही बाहर है घूमती
खेलती है खाना है खाती
दादा की बाहों के झूले में झूलती
न जाने चुपके से कब है सो जाती

चुपके से पूजा के कमरे में है जाती
बाबा की खड़ाऊं को माथे से है लगाती
जब भी मिलती किसी से राधे राधे है बुलाती
अम्मा की छड़ी को इधर उधर है फैंक आती

छुपा छिप्पी खेलती पर्दे के पीछे छुप जाती
ढूंढो ढूंढो पर्दे के पीछे से आवाज लगाती
दादा को जब दरवाजे के पीछे ढूंढ लेती
पकड़ लिया बोलकर जोर से खिलखिलाती

दादा का हाथ पकड़कर घूमने है जाती
भागो भागो कहकर नन्हें कदम है बढ़ाती
तितली देख कर पकड़ने को है दौड़ती
आजा आजा कह कर पास है बुलाती

पूरा दिन घर में इधर उधर घूमती शोर मचाती
रोने लगती जब चलते चलते है गिर जाती
मेरे फूंक मारने से दर्द हो जाता छू मन्त्र
ऐसा मान कर फिर हंसने खेलने है लग जाती

तोतली जुबान में न जाने क्या क्या कहती
हमारे नहीं समझने पर बार बार वही दोहराती
जैसे में करता वैसे ही पूरी नकल उतारती
कभी चश्मा निकालती कभी फोन ले जाती

काश मेरा भी बचपन लौट आये
न चिंता न डर हर तरफ उछल कूद मचाये
कभी मम्मी कभी पापा की गोद में चढ़ जाए
कोई डांटे तो झट से दादा से लिपट जाए

अहंकार की गर्द को झाड़ती

सरलता के पोंछे से,फर्श को चमकाती
मिथ्याभिमान के दागों को छुड़ाती

घृणा के बर्तनों को,
प्रेम जल से मांजती।
दिल की सेल्फ में पड़ी,
अस्त-व्यस्त महत्वाकांक्षाओं की ,
किताबों को जमाती।
संयमित करती।

उसके रोज के काम ने,
मेरे दिल को बना दिया उपवन।
सुंदर संवेदनशील ।
जीवन संगिनी के सवाल पर,
घरवालों, मित्रों, रिश्तेदारों के ,
आए अनेक सुझाव।
मुझे कोई सुझाव,
नहीं आया रास।

मेरे दिल के कैनवास को ,
घेरे थी वह सांवली लड़की।
दुबली पतली लड़की की,
उपस्थिति सदा रही।
मेरे दिल को सजाने संवारने में।
जी हां वह मेरी जीवन संगिनी,
थी, है, रहेगी।
जीवन के आज भी,
जीवन के बाद भी।

ब्रह्मानंद गुप्ता ब्रह्मपाद,
हिंडौन सिटी राजस्थान

खुशबू भरे फूल

पैसों से जो भी रखें, रमेश बहुत लगाव
दूजों के प्रति ना रहें, उसको आदर भाव

जिसके आंगन में उड़े, सुबह-शाम ही धूल
अब मसीहा! खिला वहां, खुशबू भरे फूल

बचाए जंगल राज को, देखो ये कानून
वरना होते रोज़ ही, चौराहे पर ख़ून

भाई-चारे की करो, कायम आप मिशाल
जिसे देखकर जगत भी, होवे खूब निहाल

काले धंधे से सजी, जिनकी हरेक शाम
उनके जीवन में मिला, देख खूब आराम

दूसरों का हक़ छिनकर, पाते जो सम्मान
झेलेंगे एक दिन यहां, बहुत बुरा अपमान

मिले जहां अपमान तो, जावे ना उस द्धार
विष भरी बातें उसकी, करें नहीं स्वीकार

पैसों में बसे जिसके, हरदम ही जब प्राण
रहता उसका दिल यहां, रमेश जी पाषाण

हरदम ही निरोग रहे, आपका यह शरीर
दिन प्रतिदिन सदैव बढ़े, इसकी ही तासीर

जब भी पड़ती आप पर, बुरे समय की मार
मत घबराएं आप कभी, हिम्मत रखिये यार

रमेश मनोहरा
शीतला माता गली जावरा (म.प्र.)
457226, जिला रतलाम
मो. 9479662215

शिकायत का टोकरा

सब उसे मंदबुद्धि कहते थे किंतु साल्विया हमेशा उसे स्पेशल कहती। उसकी हर बात अन्य सभी से अलग थी। जब सब सो रहे होते तब वह जाग रहा होता। यही नहीं उसे सुख और दुःख में फ़र्क़ करना भी नहीं आता था। इसी वजह से किसी भी सभा में या तो लोग उसका मज़ाक़ बना लेते या फिर उसे मार-पीटकर वहाँ से निकाल देते और वह भटकता हुआ साल्विया के सामने आ खड़ा होता और वह उससे बड़े प्यार से पूछती -" स्पेशल,क्या हुआ?"

उस वक़्त वह साल्विया के पालतू जानवरों के साथ खेलने लगता। थोड़ी देर बाद वह पूछ ही बैठता- "साल्विया, सुख और दुःख क्या होता है?"

उसकी मासूमियत पर साल्विया प्रभु पर खीझ उठती और कहती- "स्पेशल, तुमको मैं अच्छी लगती हूँ यह सुख है और वे लोग अच्छे नहीं लगते यह दुःख है।"

बहुत देर तक वह बार-बार साल्विया की बात दोहराता रहता। उसके ऐसा करने पर साल्विया का सारा ग़ुस्सा काफ़ूर हो जाता और वह प्यार से उसका माथा चूम लेती थी। उस रात ईश्वर के ऊपर से साल्विया का विश्वास पूरी तरह डगमगा गया था। जब स्पेशल को चोट लगी थी और वह उसके पास न आकर जाने कहाँ चला गया था तब से वह हर रोज़ ऊपरवाले के दर पर जाकर अपनी शिकायतों का टोकरा ख़ाली करती और उन्हें दोष देकर ही पानी पीती। आज जब वह ईश्वर के ऊपर अपना रोष जताकर आ रही थी तब उसने देखा स्पेशल खड़ा था। उसे देखते ही बोला- "साल्विया,मुझे सब पता चल गया।"

"स्पेशल,तुम कहाँ चले गए थे?"

"जादूगर के साथ था। मैंने जादू सीखा तुम देखोगी?"

कहते हुए वह साल्विया की टोकरी को खोलकर उससे पंक्षियों को उड़ाते हुए वह बोलने लगा-

"साल्विया,उड़ना ही सुख है। इन्हें उड़ने दो। जादूगर की पिटारी में दुःख है।"

दर्द को जहां का तहां खड़ा पाकर साल्विया की शिकायत का टोकरा और भारी हो गया।

ज्योत्सना सिंह,
ओमेक्स, गोमती नगर, लखनऊ

लघुकथा:

लूट-खसोट

टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिस्री बेचनेवाले ने गली में प्रवेश किया और ज़ोर से आवाज़ लगाई, '' टूटे-फूटे पीतल-ताँबे से गोलागिरी बदलवा लो।'' कुछ ही देर में टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिस्री बदलवाने वालों की भीड़ सी लग गई। कुछ ख़रीददार थे तो कुछ तमाशबीन भी थे। कोई पीतल का टूटा चम्मच हाथ में लिए था तो कोई काँसे की फूटी कटोरी। किसी के हाथ में ताँबे का कोई टुकड़ा था तो किसी के हाथ में एल्युमीनियम का पिचका हुआ कोई बेपहचान सा बर्तन। थोड़ी ही देर में जब भीड़ छँट गई तो एक बारह-तेरह साल का लड़का सावधानी से इधर-उधर देखता हुआ पीतल का एक बड़ा सा लोटा लिए हुए आया और गोलागिरी बेचनेवाले से कहा, ''इसका गोला-मिस्री दे दे।'' लोटा पुराना या टूटा हुआ नहीं अपितु नया सा और मज़बूत लग रहा था।

स्थिति स्पष्ट थी फिर भी गोलागिरी बेचनेवाले ने पूछा, '' लोटा कहीं से चुराकर तो नहीं लाया है?'' ''नहीं, अपने घर से लाया हूँ। ये कोई काम नहीं आता इसलिए माँ ने कहा कि इसका गोला-मिस्री ले ले, '' लड़के ने दृढ़तापूर्वक कहा। गोलागिरी बेचनेवाले ने नज़रें इधर-उधर घुमाईं और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाने के बाद कि कोई नहीं देख रहा है सावधानी से लड़के के हाथ से लोटा लेकर अपने अब तक आए हुए स्क्रैप के नीचे रख लिया और अंदाज़े से लड़के को थोड़ी सी गोलागिरी और मिस्री पकड़ा दी। जब लड़के ने कहा कि बस इतनी सी ही तो उसने और थोड़ी सी गोलागिरी और मिस्री लड़के को थमा दी। लड़का गोलागिरी और मिस्री लेकर शीघ्रता से जिधर से आया था उससे दूसरी तरफ निकल गया।

लोटे का सौदा निपटाकर गोलागिरी बेचनेवाला जैसे ही आगे बढ़ा मैंने पीछे से आवाज़ लगाई, ''अरे ओ गोलागिरी बेचनेवाले! रुक ज़रा।'' गोलागिरी बेचनेवाला रुक गया। मैंने उसके पास पहुँचकर उसे डाँटते हुए कहा, ''वो लोटा निकाल।'' उसने अनजान बनने की कोशिश करते हुए पूछा, ''कौन सा लोटा?'' मैंने कहा, ''वही लोटा जो अभी-अभी हमारा लड़का घर से चोरी से उठाकर लाकर तुझे दे गया है। तुझे शर्म नहीं आती बच्चों को चोरी करना सिखाते और उनसे चोरी का माल ख़रीदते? और बीस रुपए के नए लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री पकड़ा दिया!'' मैंने एक-एक रुपए के दो सिक्के उसकी छाबड़ी पर फेंकते हुए कहा, '' निकाल जल्दी से लोटा नहीं तो अभी बुलाता हूँ आसपास के लोगों को। तेरी वो ठुकाई करेंगे भूल जाएगा बच्चों से चोरी करवाना।'' गोलागिरी बेचनेवाले ने लोटा निकालकर फ़ौरन मेरे हवाले कर दिया और उसने वहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही ग़नीमत समझी।

यह घटना मेरे साथ नहीं बल्कि नंदकिशोर के साथ घटित हुई थी। इस घटना को सुनाने के बाद नंदकिशोर ने कहा, ''वो तो मैं अपने घर की खिड़की के पास खड़ा हुआ सब देख रहा था कि तभी पड़ौस में रहनेवाला एक लड़का लोटा लेकर आया और उसके बदले में जो भी गोला-मिस्री मिला लेकर चला गया। यदि मैं वहाँ नहीं होता तो गया था बीस रुपए का लोटा दो रुपए के गोला-मिस्री में। बीस रुपए के लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री। हद हो गई।

दुनिया में बेईमानी की कोई हद नहीं रही। जहाँ देखो वहीं लूट-खसोट मची है।'' एक सज्जन ने नंदकिशोर से पूछा, '' जब पड़ौसी को लोटा वापस किया होगा तो वो तो बड़ा ख़ुश हुआ होगा? उसने अपने लड़के की भी ठुकाई की होगी?'' ''लोटा पड़ौसी को क्यों देता? लोटे के बदले तो उसका लड़का गोला-मिस्री खा चुका था। मैंने तो अपनी अक़्ल लगाकर जेब से पैसे ख़र्च करके लोटा वापस लिया था गोलागिरी बेचनेवाले से, '' नंदकिशोर ने अपनी अक़्ल की डींग मारते हुए बुलंद आवाज़ में कहा।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली - 110034, मोबा0 नं0 9555622323

सिरफिरा

मैं हथेली पर सूर्य लिये फिरता हूँ,
जहाँ भी होता है तांडव अंधेरे का
मैं पहुँच जाता है।
मेरी उंगलियाँ जल रही हैं, कटकर गिर रही हैं,
पर मैं उसे फिसलने नहीं देता
दूर, घनी अंधेरी, भयानक घाटियों मे
तुंग शिखर पर सूर्य को छोड़ देता हूँ।
मुझे पता है.... उन अंधेरी घाटियों में भविष्य में
उजले-उजले बच्चे जन्म लेंगे
और एक कोई बूढा आदमी
उनसे कह रहा होगा कि
कभी कोई सिरफिरा यहाँ आया था
ये छोटी-छोटी जो पहाड़ियाँ हैं
उसकी जली हुई उंगलियाँ हैं
वह शिखर पर जो सूर्य है
वही उसे लाया था।
*****
दुनिया के सख्त सांचे में
जिद थी न ढलने की
दुनिया से अलग नये रूप मेंबदलने की,
पिघलकर बह जाने की चाह थी
जैसे बंद मुट्ठी से बह जाता है पानी,
जैसे सन्नाटे में बनती है कहानी,
कभी लगा ही नहीं उम्रदराज हो रहा हूं
बहती रही रगों में जवानी।
कहानी हर रात की थी, कविता हर बात की थी,
धमनियों में इतनी आग थी
कि जल उठता था पानी।
प्रेम हर मोड़ पर था,
रोमांस हर छोर पर था,
फटक जाए पास भी
बुढ़ापे में इतना दम न था
मेरे भीतर का वह युवा इतना कम न था
कि कोई आकर ढाल दे सांचे में
कस के रख दे खांचे में।
पर, आज क्यों लगता है कि
आग मंद हो रही है
दिल की वह विशाल कोठरी
सिकुड़ कर छोटी हो रही है,
बंद हो रही है.....
रोटी पर बेशक बनती हो कविता
पर शायद रोटी में इतनी भूख है कि
खा जाए दुनिया की समस्त कविताएं,
सारी कहानियां, और सबकी जवानी।

दीपक कुमार

....ख़ुद से कभी मुलाक़ात नहीं....

औरों से ही मिलते रहे
ख़ुद से कभी मुलाक़ात नहीं
दूसरों को ही जानते रहे
स्वयंम ही तो कभी जाना नहीं
औरों को अपना बनाते हुए
अपनों को ही भुला बैठे
सब कुछ तो याद करते हुए
अब कुछ भी तो याद नहीं
हर पल नये आयाम रहे धोखे के
असली चेहरा कभी देखा नहीं
सबको ही तो हंसाते हुए
बस अंदर ही अंदर रोते रहे
मेरा मेरा ही तो करते रहे
पैसे से झोलियाँ भरते रहे
असली झोली सदा ख़ाली रही
मेहनत की कह खाते रहे
ताउम्र ठगियां बस ज़ारी रहीं
जीवन भर चोरियां करते हुए
तेरा भी तो कुछ न चुरा पाया
असली मैल कभी धोया नहीं
बस कपड़े ही बदलते रहे
कुछ भी तो पाया नही
सब कुछ अपनाते हुए
जो पास रहा वह खो दिया
अपना ही कुछ लिखते रहे
जो हमें लिखा वह पढ़ा नहीं
सबको नसीहत देते रहे
अपनी हैसियत ही याद नहीं
औरों से ही मिलते रहे
ख़ुद से कभी मुलाक़ात नहीं
ख़ुद से कभी मुलाक़ात नहीं.....

वीरेन्द्र कौशल

गीत

रह - रह कर अब टूटी छत का,
दर्द भिगोता है .
अनहोनी का खटका मन में,
दहशत बोता है .

दूर गगन में चाँद गहन है,
संबंधों में बढ़ा दहन है,
बड़े - बड़ों की टोका -टाकी ;
तरुणाई को नहीं सहन है .
घर का गुड़ घर ही में फूटे,
वह घर होता है .

रात मोम सी जाए गलती,
रोज नई आशंका फलती,
करवट बदली कितनी लेकिन ;
नींद आँख से रही फिसलती .
रोज चोर की माँ जैसे घर,
छुपकर रोता है .

कौन किसे अब क्या समझाए ,
यही सोच छत झड़ - झड़ जाए ,
होठों से कोठों पहुँचाने ;
दीवारों ने कान लगाए .
चूँ - चूँ करके दरवाजा भी,
थूक बिलोता है .

राजपाल सिंह गुलिया, जाहिदपुर, झज्जर (हरियाणा)

बैकलेस

'क्या हाट लग रही है। पूरी आईटम...उम्र देखिए और उसका बैकलस अंदाज देखिए। इसी को कहते हैं बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम। ऐसी लेडीज ने ही समाज में औरतों को बदनाम कर रखा है' -कौशल ने डीजे में नाचते मेनका को देखकर कोल्डड्रिंक्स पीते हुए अपने फ्रेंड आकाश से कहा।

बैंक्वेट हॉल में मेनका की फ्रेंड आरती की इंगेजमेंट पार्टी चल रही है। रोमांटिक म्युजिक की ताल पर लोग थिरक रहे हैं। मेनका की उम्र चालीस के आसपास होगी। कौशल गर्ग आरती के रिश्तेदार हैं। उनकी उम्र पचास वर्ष है।

'क्या कहा आपने? फिर से कहिए जरा' -मेनका ने कौशल से गुस्से में कहा।

'जी, कुछ नहीं' -कौशल जी ने अनजान बनते हुए कहा।

'मैंने सब सुन लिया है। क्या आपके घर में बहू-बेटी ऐसा ड्रेस नहीं पहनती है?-मेनका ने पूछा।

'हां, पहनती हैं। मेरी एक बेटी है। लेकिन उसकी बात अलग है। उसकी उम्र पंद्रह वर्ष है। उसकी तो उम्र है ऐसे कपड़े पहनने की' -कौशल जी ने जवाब दिया।

'यही तो आप मर्दों का दोहरा मापदंड है। अपने परिवार की बहू-बेटी के लिए एक विचार और दूसरों के लिए नैतिकतावादी। मैं मानती हूं कि ड्रेस को अंग प्रदर्शन के रूप में यूज करने वाले भी हैं, लेकिन यही एकमात्र पहलू नहीं है। मेरा यह बैकलेस ड्रेस मुझे कांफीडेन्स देता है। यह मेरी फ्रीडम का प्रतीक है। यह मुझे खूबसूरती का सुखद एहसास कराता है। लंबे समय से हम औरतें समाज द्वारा थोपी गई कई वर्जनाओं को तोड़ने के लिए संघर्ष करती आई हैं। मेरी दादी कभी घूंघट से बाहर नहीं निकली। वहीं मेरी मां ने जब पहली बार नाइटी पहना था तो घर में बातें बनाई गईं। आप मर्दों ने हमें हमेशा केवल सेक्स ऑब्जेक्ट के रूप में देखा। हमारे फीलिंग्स से आपको कोई मतलब नहीं रहा। इसी कारण मेरे बैकलेस लुक पर आपका कमेंट्स आपके माइंडलेस होने का प्रमाण है। और हां, जहां तक मेरे हाॅट होने का प्रश्न है, वो तो मैं हूं'- मेनका ने कौशल को टका-सा जवाब दिया।

'लेडीज एंड जेंटलमैन कृपया स्टेज की ओर आ जाएं। रिंग सेरेमनी होने वाली है' -एंकर ने अनाउंस किया।

सभी स्टेज की ओर बढ़ चले। कौशल मेनका के बैकलेस वाले बोल्ड और ब्यूटीफुल लुक को निहारे जा रहा था।

मृत्युंजय कुमार मनोज, निराला एस्टेट, टेकजोन-4

वह सांवली लड़की....

वह सांवली लड़की,
दुबली पतली कृषकाय,
कभी नहीं रही,
मेरे कैनवास में ,
जीवन के डोमेन में।

वह रोज मेरे दिल में आती,
अपना काम निपटा कर चली जाती।
दिल के फर्श पर छाई,
- ब्रह्मानंद गुप्ता ब्रह्मपाद,

पैरों को समेटकर

जिन्दगी में अपने पैरों को समेटकर रखा जाये,
चादर जितनी हो उसी में लपेटकर रखा जाये!

क्यूं नोट करते है दूसरों की गलतियों का अम्बार
लिखना है तो लिखकर उसे सिलेटपर रखा जाये!

जब मौका पड़े तो उसको साफ कर सके हम
उतना तो यकीन अब किसी पर बनाकर रखा जाये!

मैनें भी किया हैं कई लोगों पर भरोसा अब तलक
मगर सोचा धोखों को सबसे छिपाकर रखा जाये!

कौन करेगा ये दोस्ती यारी और आशिकी पर यकीन
इसलिये 'ललित' प्रचारक सबको बताकर रखा जाये!

ललित प्रताप सिंह

1
एक है चाल इसकी सभी के लिए।
वक़्त रुकता नहीं है किसी के लिए।

तुम मिले चल पड़ी है इबादत मेरी,
ज्यों ख़ुदा मिल गया बन्दगी के लिए।

कोई, धोखा, मुहब्बत या नफरत करे,
चार दिन ही मिले ज़िन्दगी के लिए।

बीत जाएंगी रातें सत्ताइस तभी
पूर्णिमा आएगी चाँदनी के लिए।

हाथ पर तो बँधी है घड़ी लाख की,
है तड़प चैन की दो घड़ी के लिए।

2
ज़रा मैल मन का मिटाकर मिलो तो।
सुनो, सारे शिकवे भुलाकर मिलो तो।

छुपा है जो दिल में, मुझे तुम बताओ,
लबों पर हक़ीक़त सजाकर मिलो तो।

सनम देखता हूँ तुम्हारी ही राहें
बीती मुद्दतें , मुझसे आकर मिलो तो।

लिखूँगा बहुत ही सुहानी ग़ज़ल मैं,
जो अंजन नयन में लगाकर मिलो तो।

घिरी चाँद पर क्यों ये रेशम की बदली,
ज़रा ज़ुल्फ़ें रुख से हटाकर मिलो तो।

मिटेगा गहन नफरतों का अँधेरा
चिराग़े-मुहब्बत जलाकर मिलो तो।

भला रिश्ते ऐसे छुपाते हो क्यों तुम!
सभी को मेरा सच बताकर मिलो तो।

फ़क़त दाग़ औरों में क्यों ढूँढते हो!
नज़र आईने से मिलाकर, मिलो तो।

- विकास पाण्डेय विदीप्त

अधिक

"आपका घर मुझे बहुत पसंद है। चुन-चुन कर आपने फलों के पेड़-पौधे लगा रखे हैं। जब भी हरीतिमा के मध्य बैठने का तथा खुली हवा का आनंद लेने का मन होता है, मैं टहलते आपके घर की ओर आ जाता हूँ", पड़ोसी जी थे, "वैसे फलों से लदे पेड़ देखकर आनंद बड़ा आता है। काश मैंने भी अपनी पूरी जमीन में निर्माण न कर कुछ खुली जगह छोड़ी होती, तो जीवन में अधिक सुकून होता। खैर, आप लोग दो ही तो प्राणी हैं, इतने अधिक फल लगे हैं। कुछ पड़ोसियों में भी बाँटा करिए।" बोलकर हो-हो करके हँसने लगे।

विपिन बाबू ने कहा, "जी! अवश्य।" सहमति पर छद्म अपनापा दिखाते हँसने का अभिनय करते अपने घर की ओर चल दिए।

नाराज विपिन बाबू अपनी पत्नी की ओर मुखातिब हुए, "हमारी और उनकी जमीन का आकार समान ही तो है। हमने घर के आसपास क्रॉस वेंटिलेशन के लिए खुली जगह छोड़ी, पेड़-पौधे लगाए, उनकी सेवा-टहल की। यूँ तो आवश्यकता से अधिक फल लग जाएँ तो इंसान रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों में ही बाँटेगा। पर इस बात का उलाहना क्यों?

इन पड़ोसी भाई ने अपनी इंच-इंच जमीन में घर बनवाकर सब में किरायेदार लगा दिए हैं। मेरी पेंशन से अधिक तो उन्हें किराया आ जाता है। पर मैंने उनसे कब कहा कि हमारा स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। खर्चे अधिक हैं, मेरी पेंशन कम पड़ जाती है। आप भी दो प्राणी ही हैं, किराए के इतने अधिक पैसों का क्या करेंगे? पेंशन भी मिलती ही है। क्यों न उसमें से कुछ पैसे हमारे घर भिजवा दें? मैं भी अपने बगीचे के फल-फूल भिजवाता रहूँगा।"

पत्नी विपिन जी की नाराजगी एवं झल्लाहट समझते हुए मुस्कुरा कर रह गई, क्या कहती।

नीना सिन्हा/ पटना, बिहार

मां, मैं शादी नही करना चाहती

नेहा एक नए जमाने की लड़की है। वह नया सोंचती है।उसके ख्यालात नए हैं। उसके अंदर नयापन है। उड़ना चाहती है। नई वादियों में नए तराने जिंदगी की लिखना चाहती है। अब वह जवान हो गई है। शादी के योग्य हो गई है। मां उसकी अब सोंचती है कि नेहा में जो उड़ान है, वह ठीक है लेकिन शादी विवाह के बाद पति के घर रहना ही पड़ेगा उसे कैसे पति के घर रहना है। वह सारी चीज सीखे। "मां मै शादी नही करना चाहती। अपना घर छोड़कर दूसरे के घर मैं नही रहना चाहती हूं। शादी मै तभी करूंगी जब लड़का आकर हमारे घर रहे। हमारे घर रहने में क्या हर्ज है।जमाना बदल गया है" नेहा ने आवेश में आकर मम्मी को समझाया।

"पर बेटी जमाना ऐसा नही स्वीकार करेगा। इस तरह करने से बदनामी होगी। लोग क्या कहेंगे? "

"कुछ नही कहेंगे। मैं लडको जैसा रहती हूं। कोई कुछ नही कहता है। छोटे छोटे बाल रखती हू। जींस पहनती हूंसिगरेट पीती हूं। मर्दों जैसा गालियां देती हूं। शराब भी पीती हूं। रात में बारह एक बजे लडको के साथ घूम कर आती हूं। पार्टी होटल में जाती हूं। कुछ नही होगा मां"

"ऐसा कोई लड़का नही मिलेगा बेटी"

"एक लड़का है जो मेरे घर रहना चाहता है मां। सब लडको वाला सुविधा मुझे दी। लडको जैसा रखी। एक सुविधा ये भी दे दो मां।"

"पर बेटी तुम लड़की हो। तुम्हे लड़कियों जैसा रहना पड़ेगा"

"मां तुम तो मुझे लडको जैसा रखना चाहती थी। मुझे एकदम लडको वाला भाव भरी हो। लड़कियों वाला संस्कार आप ने दिया नही। मैं शराब पीती रही। सिगरेट पीती रही।आवारागर्दी करती रही। रोका नहीं। मुझे लड़कियों वाला सलीका सिखाया ही नही। अदब बताया नही। जब मै दुल्हन बन कर जाऊंगी तो वहां संस्कार अदब की ज़रूरत होगी।यह सब मैं कुछ नही कर पाऊंगी और मेरा रिश्ता टूट जायेगा फिर मैं यहीं आकर रहूंगी। यही आकर रहना ही है तो ऐसे लड़के से शादी करूं ताकि मेरा रिश्ता बचा रहे मां"

यह कहकर नेहा फफक फफक रोने लगी। नेहा की मां समझ गई कि मेरी बिटिया क्या कहना चाहती है।

सच में बेटियां दूसरो के घर ही रहेगी। बिटिया को बिटिया वाला संस्कार ही दो ताकि आगे चलकर दूसरे के घर में स्वयं को अर्जेस्ट कर सकें नहीं तो रिश्ता लगभग टूटना तय है।

जयचन्द प्रजापति 'जय',
जैतापुर, हंडिया, प्रयागराज मो.7880438226

उपवन की वे लताएँ, अब भी पुकारती हैं तुम्हें,
पर मेरे हृदय में बसती है अब भी तुम्हारी वही धुन।

संगम तट पर तुम्हारे साथ बिताए वे क्षण,
जैसे समय की धारा में खो गए हों हर इक पल।

सखा-सखी सब हैं यहाँ, पर तुम नहीं,
तुम्हारे बिना ये प्रेम का संसार पूरा नहीं।

कभी-कभी लगता है, जैसे तुमसे बिछड़ कर,
मैंने खो दिया हो जीवन का सबसे मधुर पल।

कहां ढूंढूं तुझे अब, किसमें तेरा रूप पाऊं,
हर किसी में खोजा तुझे, पर तुझसा न कोई पाऊं।

तेरे बिना अधूरा मैं, विकास मेरा अब ये मन कहे,
विरह की अग्नि में जलकर भी बहती प्रीत की धुन रहे।

विकास तिवारी

(लघुकथा)

बेकसूर

रेखा रोज की तरह आज भी अपनी माँ लीला के साथ डॉक्टर मैडम के घर झाड़ू पोछें के लिए आई थी| बीस वर्षीय रेखा की फुर्ती देखने लायक होती थी|पोछें लिए पानी की बाल्टी उठाते उठाते अचानक रेखा बेहोश हो गई थी| क्लिनिक जाने के लिए तैयार हो रही मेडम अचानक घबरा गई, उसने जाँच की तो पाया रेखा प्रेग्नेंट थी|यह तो प्रेग्नेंट है|

उसने लीला को बताया|

क्या ---|लीला के पैरों के नीचे जमीन खिसक गई किसका पाप है?कहाँ मुँह काला करती रही? लीला ने उसे वहीं पीटना शुरू कर दिया|

डॉक्टर मैडम बोली ऐसी गलती हो जाती है,चल मैं दवाई लिख देती हूँ|सब ठीक हो जाएगा|

मुझे बता तो कौन है वो?

तेरी शादी करवा देंगे |

रेखा चुप रही|

डॉक्टर मैडम बोली बता दे रेखा,अभी दो महीना ही हुआ है|उसने प्यार से रेखा के सिर पर हाथ रखा|

रेखा डरते डरते बोली,

साब ने एक दिन जबरदस्ती --|

अब डॉक्टर मैडम को चक्कर आने लगे|

फिर उसने तुरंत ही खुद को संभाल लिया,कुछ दिन बाद रेखा को तो घर रख लिया,प्रेगनेंट थी वो,और अपने पति को तलाक का नोटिस भिजवा दिया| क्योंकि बच्चा तो बेकसूर था|

इन्दु सिन्हा "इन्दु"

रतलाम (मध्यप्रदेश)

"हम सब हत्यारे हैं"

(कहानी)

आज हम सब आपकी अदालत मे है। आप जो भी फैसला सुनायेंगे हम सबको मंजूर होगा। आपके फैसले के खिलाफ हम कही भी नहीं जा सकते है क्योंकि आपके ऊपर कोई अदालत नहीं है कोई कोर्ट नही है।

आपकी कोर्ट मे भी ये केस बरसो बरस से चल रहे है, तारीख पर तारीख हम सबको मिलती रही है। लेकिन हम सब किसी तारीख पर कभी तो समय पर पहुंच पाये कभी हमने वकील को मोटी रकम देकर तारीख आगे बढ़वायी है। और हाँ, कभी तो हमने झूठे गवाह खडे करते केस का चेहरा ही बदलने की कोशिश की है। लेकिन छोटी छोटी कोर्ट से बच निकले है लेकिन हाईकोर्ट मे जब हमारे केस जायेंगे तो हमारे लिये कोई रास्ता नही बचेगा।झूठे गवाह भी मुकर जायेंगे, वकीलों की नहीं चल पायेगी हाई कोर्ट मे। हम सब अपने अपने अपराध स्वीकार करते है।हम सब हत्यारे है,हम सब खूनी है।

हम अपराधी है हम सब ये स्वीकार करते है देश में जो युवा बच्चों की आत्महत्याए हो रही है बच्चे आत्महत्याये कर रहे है उसके लिऐ बच्चो से ज्यादा हम दोषी है उनके माता पिता। किस प्रकार ? हम ये भी स्वीकार करते है।कई बार बच्चो पर अंको का प्रेशर बनाने लगते है, उसकी तुलना दूसरे बच्चों से करते है। जिससे बच्चा गिल्टी का शिकार हो जाता है। हममे से कई अपने बच्चों को ताने दे देकर मानसिक रूप से प्रताडित करते है तो कहीं उसे शारीरिक कष्ट भी देते है चोट भी पहुंचते रहे है।

आये दिन अखबारों में ये न्यूज देखने को मिलती है बोरखेल मे नन्हे बच्चे गिर गये और उनकी मौत हो गयी| नन्हे बच्चे जिनकी उम्र पाँच साल, सात साल, कही कही तो दूधमुहे होते है। बड़े बड़े गहरे खुदे गड्ढे में नन्हेबच्चो को निकालने के लिये प्रशासन की पूरी टीम दिन रात लगती है।जैसे कुछ समय पहले बोरवेल मे बच्चा गिर गया,पूरी टीम दिन रात लगी थी। साल भर के बच्चे,सात साल के बच्चे, खुले बोरवेल मे गिर करते हैं,घर वालो को पता ही नही चलता है बच्चो के प्रति क्या ये लापरवाही नहीं ?पूरी टीम मेहनत करती हैं।फिर भी वो बच्चा नही बचा पाते |इसमे हम प्रशासन को दोष देते है। जबकि हत्यारे तो हम है छोटे छोटे बच्चे खुदे हुए गहरे बोरवेल मे गिरते कैसे है? यही

समझ नहीं आता। कई केसो में ये देखा गया है घर परिवार वाले सभी आसपास ही रहते है फिर भी बच्चा गिर जाता 'है।मतलब हम मासूमो के प्रति लापरवाह रहते है।

हम ये भी कबूल करते है हमने अपनी बेटियो के पंख काटे है। पंख काटकर उनको हमने कैद किया है।जंजीरो से जकड़कर रखा है बेटियो को हमने बिना वजह की पाबंदी और हमारी संकुचित विचारधारा ने मार दिया है। हाँ, ये भी सच है मुट्ठी भर बेटियो ने दी गयी आजादी का गलत फायदा उठाया है। लेकिन इससे सभी बेटियो को दोषी नही माना जा सकता है। हम सब कुछ प्रतिशत बेटियो के गलत कदमो से डर जाते है आंतकित रहते है सभी बेटिया ऐसी ना हो जाये।

कुछ बेटियाँ आसमान मे तितली जैसी बनना चाहती है संतरगी रंगो से अपनी तरक्की की नयी परिभाषा लिखना चाहती है। कामयाब होना चाहती है। पढना चाहती है।अपनी प्रतिभा को निखारना चाहती है।हम अपनी बेटियो को डाँटते फटकारते रहते है,बिगडते है।हमलोग उनकी प्रशंसा नही करते है। हम कूपमंडूप है,हम इंसानी रूपी मेढको के लिये एक बंधी बंधायी लीक है जिस पर हम चलते रहते है। बेटियों के लिये हम वही निश्चित जीवन शैली ही सोचते है। इसके आगे का हम नहीं सोच पाते है। कही इसकी पढाई बीच मे छुड़वा देते है कही मारपीट करते हैं।पढ़ लिखकर क्या करेगी ? जाना तो पराये घर ही है। बेटिया बुझ जाती है, खुशियों को हम नाग के समान डस लेते है।

एक बात ये भी बतायेंगे, कि सदियो से सुनते आ रहे हैं, माँ देवी का रूप होती है भगवान होती है।ममता का सागर होती है।

लेकिन जज साहब,ऐसा सब दूर नही होता है।ये सदियो से एक सामान्य धारणा है।बेटियो पर अत्याचार करने मे माँ भी कम दोषी नही होती है,कही कही वो पत्थरदिल होती है। बेटियो पर अत्याचार करने मे वो भी पीछे नही हटती है।मार पीट के साथ हत्याये भी कर देती हैं ,जज साहब माँ हत्यारी भी होती है।

हम बेटियो की शारिरिक मानसिक दोनों रूपों मे हत्याए करते आ रहे है|लेकिन कोर्ट से बचते रहे है।

बेटियो को हम बेमेल शादियों के लिये भी दबाब बनाते रहते हैं।

और जबरदस्ती शादी भी कर देते है|

हम दहेज के लिये भी हत्याये करते है। हम ये नही कहते कि सभी दहेज के लोभी है। समाज में अच्छे लोग भी है जो दहेज नही लेते बेटी,बहुओ को प्यार दुलार सम्मान देते है। पर दहेज के लिये और शराबी कबाबी पतियो द्वारा जब बेटिया सतायी जाती है, तो हम अपनी परंपराओ की दुहाई देते हैं। बेटियो की मदद नहीं करते है।कम ही लोग ऐसे हैं जो बेटियो की मदद करते है।

हम बच्चो और बेटियो के प्रेम के भी दुश्मन है| सही है, कि समय बदल रहा है।लोग जाति धर्म से ऊपर उठकर भी शादियाँ कर रहे है करते रहे हैं।ये पुराने युग से चला आ रहा है।लेकिन हम लोग ठहरे "लकीर के फकीर" सड़ी गली जंजीरों को काटकर नही फैकते।झूठे अहम, घमन्ड अकड में रहते है।हम लोग छोटी सोच वाले हो जाते है।यहाँ पर।खुले दिल से स्वीकार नहीं कर पाते।

लेकिन जज साहब, कही कहीं बेटियो के चुनाव भी गलत होते है अपनी मरजी से घर से भागकर शादी करती है, फिर मार दी जाती है

और टुकडो में मिलती है। इसलिये आप फैसला सुनाते समय दोनो पक्षो पर नजर रखे, ध्यान दें।

एक अपराध हम ये भी स्वीकार करते है कि आज की पीढ़ी में संघर्ष करने की ताकत,मानसिक रूप से मजबूती समाप्त होती चली जा रही है। उसने कही हम भी जिम्मेदार है। टीवी एक्ट्रेस तनीशा शर्मा की आत्महत्या इस बात का सुबूत है।

हम लोगो ने लड़ना नही लिखाया बच्चियों को,बच्चो को मानसिक कमजोरी के चलते कई बार आत्महत्या करते है|जीवन इतना सस्ता नही होता किसी से ब्रेकअप होने के बाद खत्म कर दिया जाए। वो रिश्ता जीवन में एक ही रिश्ता नहीं होता,उसके पहले माता पिता जिन्होंने पालपोसकर इतना बडा किया अपने टेलेन्ट, अपने माता पिता को भूलकर अगर एक रिश्ता सबसे ऊपर मान लिया जाए तो खुद तनीशा भी कही ना कहीं दोषी है।

फ़िल्मी दुनिया में पिछले कुछ वर्षो से आत्महत्याए बढ गयी है।

जज साहब, ये आत्महत्याए नयी नहीं है,होती आयी है पहले भी। लेकिन सभी आत्महत्याए तो नही करते ?आज टी वी और फिल्मी दुनिया की नयी पीढी पुराने फिल्म स्टार के संघर्ष,मेहनत,लगन आँसुओ को नही पढ़ती| अगर बड़े बड़े सितारों के संघर्ष को पढ़ ले तो आत्महत्या की बात सपने मे भी नही सोचे।

दुनिया में अपनी जादू भरी आवाज से पहचानी जाने वाली लता दीदी का संघर्ष कभी पढ़ा है आज की पीढ़ी ने ?फिल्मी दुनिया शहंशाह बच्चन साहब का संघर्ष पढ़ा है ?लगातार अनेको फिल्मे फ्लॉप के बाद सफलता मिली है।अनेको बार उपेक्षा भी मिली क्या उन्होंने आत्महत्या का सोचा? ऐसे अनेको सितारे है जिनके प्रेम सम्बंध टूटे है|असफल हुए,असमय मौते हुई लेकिन आत्महत्या को नहीं संघर्ष को अपना हथियार बनाया और सफल हुए।

इसलिये जज साहब कही तो ये भी दोषी है।पूरी तरह से हम दोषी नही है| हमारी गलती ये है हमने संस्कार व्यवहार की शिक्षा नहीं दी है|इसके लिये हम कसूरवार है।

आज हम सब अपने पाप इसलिये भी स्वीकार करते हैं क्यों कि हम खुद की नजरो मे गिर चुके है। खुद की नजरो और आत्मा से गिरे,मरे व्यक्तियो को सुकून नहीं मिलता है।एक बैचेनी छटपटाहट होती है जो हमे चैन से रहने नहीं देती| हम सब जीवित जरुर है लेकिन मुर्दों के समान है|क्योंकि हमारी आत्माए मर गयी है।दया करुणा मर गयी है हमारे भीतर।हम सब हत्यारे है।हमें फाँसी दो जज साहब, हमें फाँसी दो जज साहब।

इन्दु सिन्हा"इन्दु"

रतलाम (मध्यप्रदेश)

जब आरंभ हुआ भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम

कृष्ण कुमार यादव

10 मई 1857 पर विशेष :

1857 : काल की शिला पर अंकित क्रान्ति

1857 के वर्ष का भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। यह वह वर्ष है, जिसे भारतीय वीरों ने अपने शौर्य की कलम को रक्त में डुबो कर काल की शिला पर अंकित किया था और ब्रिटिश साम्राज्य को कड़ी चुनौती देकर उसकी जड़ें हिला दी थीं। 1857 का वर्ष वैसे भी उथल-पुथल वाला रहा है। इसी वर्ष कैलिफोर्निया के तेजोन नामक स्थान पर 7.9 स्केल का भूकम्प आया था तो टोकियो में आये भूकम्प में लगभग एक लाख लोग और इटली के नेपल्स में आये 6.9 स्केल के भूकम्प में लगभग 11,000 लोग मारे गये थे। 1857 की क्रान्ति इसलिये और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि ठीक सौ साल पहले सन् 1757 में प्लासी के युद्ध में विजय प्राप्त कर राबर्ट क्लाइव ने अंग्रेजी राज की भारत में नींव डाली थी। विभिन्न इतिहासकारों और विचारकां ने इसकी अपने-अपने दृष्टिकोण से व्याख्यायें की हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और महान चिन्तक पं. जवाहरलाल नेहरू ने लिखा कि- ''यह केवल एक विद्रोह नहीं था, यद्यपि इसका विस्फोट सैनिक विद्रोह के रूप में हुआ था, क्योंकि यह विद्रोह शीघ्र ही जन विद्रोह के रूप में परिणित हो गया था।'' बेंजमिन डिजरायली ने ब्रिटिश संसद में इसे ''राष्ट्रीय विद्रोह'' बताया। प्रखर विचारक बी.डी. सावरकर व पट्टाभि सीतारमैया ने इसे "भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम", जॉन

विलियम ने "सिपाहियों का वेतन सुविधा वाला मामूली संघर्ष" व जॉन ब्रूस नॉर्टन ने ''जन-विद्रोह'' कहा। मार्क्सवादी विचारक डा. राम विलास शर्मा ने इसे संसार की प्रथम साम्राज्य विरोधी व सामन्त विरोधी क्रान्ति बताते हुए 20वीं सदी की जनवादी क्रान्तियों की लम्बी श्रृंखला की प्रथम महत्वपूर्ण कड़ी बताया। प्रख्यात अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक विचारक मैजिनी तो भारत के इस प्रथम स्वाधीनता संग्राम को अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखते थे और उनके अनुसार इसका असर तत्कालीन इटली, हंगरी व पोलैंड की सत्ताओं पर भी पड़ेगा और वहाँ की नीतियाँ भी बदलेंगी।

1857 की क्रान्ति को लेकर तमाम विश्लेषण किये गये हैं। इसके पीछे राजनैतिक-सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक सभी तत्व कार्य कर रहे थे, पर इसका सबसे सशक्त पक्ष यह रहा कि राजा-प्रजा, हिन्दू-मुसलमान, जमींदार-किसान, पुरूष-महिला सभी एकजुट होकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। 1857 की क्रान्ति को मात्र सैनिक विद्रोह मानने वाले इस तथ्य की अवहेलना करते हैं कि कई ऐसे भी स्थान थे, जहाँ सैनिक छावनियाँ न होने पर भी ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध क्रान्ति हुयी। इसी प्रकार वे यह भूल जाते है कि वास्तव में ये सिपाही सैनिक वर्दी में किसान थे और किसी भी व्यक्ति के अधिकारों के हनन का सीधा तात्पर्य था कि किसी-न-किसी सैनिक के अधिकारों का हनन, क्योंकि हर सैनिक या तो किसी का पिता, बेटा, भाई या अन्य रिश्तेदार है। यह एक तथ्य है कि अंग्रेजी हुकूमत द्वारा लागू नये भू-राजस्व कानून के खिलाफ अकेले सैनिकों की ओर से 15,000 अर्जियाँ दायर की गयी थीं। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के शब्दों में- ''सन् 1857 की क्रान्ति को चाहे सामन्ती सैलाब या सैनिक गदर कहकर खारिज करने का प्रयास किया गया हो, पर वास्तव में वह जनमत का राजनीतिक-सांस्कृतिक विद्रोह था। भारत का जनमानस उसमें जुड़ा था, लोक साहित्य और लोक चेतना उस क्रान्ति के आवेग से अछूती नहीं थी। स्वाभाविक है कि क्रान्ति सफल न हो तो इसे 'विप्लव' या 'विद्रोह' ही कहा जाता है।'' यह क्रान्ति कोई यकायक घटित घटना नहीं थी, वरन् इसके मूल में विगत कई सालों की घटनायें थीं, जो कम्पनी के शासनकाल में घटित होती रहीं। एक ओर भारत की परम्परा, रीतिरिवाज और संस्कृति के विपरीत अंग्रेजी सत्ता एवं संस्कृति सुदृढ हो रही थी तो दूसरी ओर भारतीय राजाओं के साथ अन्यायपूर्ण कार्रवाई, अंग्रेजों की हड़पनीति, भारतीय जनमानस की भावनाओं का दमन एवं विभेदपूर्ण व उपेक्षापूर्ण व्यवहार से राजाओं, सैनिकों व जनमानस में विद्रोह के अंकुर फूट रहे थे।

कहा जाता है कि इस क्रान्ति के बीज जनमानस के बीच बोने हेतु प्रतीकात्मक रूप में 'कमल' और 'चपाती' बाँटी गयीं। कमल का फूल हर सैनिक रेजीमेंटो में घुमाया जाता था, जहाँ वह हर किसी के हाथ से गुजरता था। जिस सैनिक के हाथ में यह कमल सबसे अंतिम में जाता,

वह अपने पास की रेजीमेंट तक यह कमल पहुँचा देता था और वहाँ भी यही प्रक्रिया होती थी। कमल का फूल स्वीकारने का कूट अर्थ यह था कि रेजीमेंट के सभी सिपाही क्रान्ति में भाग लेने के लिये तैयार हैं। इस तरह के सहस्त्रों कमल पेशावर से बैरकपुर तक विभिन्न रेजीमेंटो के अन्दर घुमाये गये। इसी प्रकार चपातियों को घुमाने के लिये चौकीदारों का इस्तेमाल किया गया। एक गाँव का चौकीदार चपाती लेकर दूसरे गाँव के चौकीदार तक पहुँचाता। चपाती मिलने पर वह चौकीदार थोड़ी सी स्वयं खाकर बाकी गाँव के दूसरे लोगों को खिला देता और फिर उसी तरह की चपातियाँ बनवाकर अपने पास के गाँव के चौकीदार तक भिजवा देता। चपातियाँ स्वीकारने का कूट अर्थ था कि उस गाँव की जनता क्रान्ति में भाग लेने के लिये तैयार है। धीरे-धीरे इस पद्धति से गाँव-गाँव और नगर-नगर क्रान्ति का संदेश पहुँचाया गया। कुछेक इतिहासकारों के अनुसार तमाम रजवाड़ां, सिपाहियों और जनमानस की भावनाओं को टटोल कर पूरे देश में एक ही दिन 31 मई 1857 को क्रान्ति आरम्भ करने का निश्चय किया गया और बहादुर शाह को सम्राट बनाकर नाना पेशवा को उनका प्रधानमंत्री बनाने की राजनीतिक व्यवस्था भी तय की गयी। पर वक्त को कौन मुट्ठी में बांध पाया है ..... सो मंगल पाण्डे की शहादत ने सिपाहियों को समय से पूर्व ही क्रान्ति का बिगुल बजाने पर मजबूर कर दिया। चूँकि उस समय संचार साधन इतने उन्नत नहीं थे, सो 11 मई को दिल्ली में हुयी घटना को पूरे देश में फैलने में महीने भर का समय लग गया।

1857 की क्रान्ति की शुरूआत एक तरह से 29 मार्च 1857 को कलकत्ता से 16 किलोमीटर दूर स्थित बैरकपुर छावनी में 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे द्वारा गाय की चर्बी वाले कारतूसों को चलाने से मना करने से हुई। जोर-जबरदस्ती करने पर मंगल पांडे ने अंग्रेज सार्जेंट मेजर जेम्स थार्नटन ह्रासन को परेड ग्रांउड में गोली मार दी। उसी समय लेफ्टिनेंट एडजुटेंट बेम्पडे हेनरी वॉग घोड़े पर सवार होकर आया तो वह भी मंगल पांडे की बन्दूक का निशाना बना। इसकी प्रतिक्रिया में 8 अप्रैल 1857 को अंग्रेजी शासन ने मंगल पांडे को फांसी दे दी तथा पूरी छावनी को भंग कर दिया। मंगल पांडे को इस क्रान्ति का पहला शहीद सिपाही कहा गया। इस घटना के कुछ दिन बाद ही 24 अप्रैल 1857 को मेरठ छावनी स्थित थर्ड लाइट कैवेलरी के 85 सिपाहियों द्वारा रंगून से आये गाय की चर्बी युक्त कारतूसों को हाथ लगाने से मना कर दिया गया। इन सभी सैनिकों को अंग्रेजी शासन ने बागी करार देकर 10-10 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाकर जेल में डाल दिया। 9 मई 1857 को उन्हें एक सभा में सार्वजनिक रूप से अपमानित कर व उनकी वर्दियाँ उतार कर हथकड़ी-बेड़ियाँ पहनाकर जेल भेज दिया गया। इससे बौखलाये मेरठ छावनी की तीन रेजीमेंटों के सिपाहियों ने अगले दिन रविवार, 10मई 1857 को जब अंग्रेज चर्च जाने की तैयारी कर रहे थे कि अचानक अंग्रेजी शासन से बगावत कर क्रान्ति का बिगुल बजा दिया और वहां शस्त्रागार को लूटकर सिपाहियों को जेल तोडकर छुड़ा लिया। इसके बाद इन विद्रोही सैनिकों ने दिल्ली की तरफ कूच किया जहाँ नेटिव इन्फेंट्री की

तीन रेजीमेंट मौजूद थीं। 11 मई को दिल्ली पहुँचकर इन सैनिकों ने लाल किले पर धावा बोल कैप्टन डगलस को मार गिराया और बहादुरशाह जफर से नेतृत्व की अपील की। तब तक इनके साथ अंग्रेजी शासन से त्रस्त लोगों का कारवाँ भी जुड़ता गया था और देखते ही देखते मेरठ में विद्रोही सैनिकों से आरम्भ इस स्वाधीनता संग्राम में राजाओं-नवाबों सहित किसान, मजदूर, हिन्दू, मुसलमान, महिलायें व सामान्य जन सभी शामिल होते गये। मेरठ एवं दिल्ली से चली इस चिंगारी ने शीघ्र ही देश के तमाम हिस्सों में हलचल पैदा कर दी। इस संग्राम का आखिरी बड़ा युद्ध 21 जनवरी 1859 को राजस्थान के सीकर में हुआ। सिर्फ उत्तर भारत ही नहीं अपितु इसका प्रभाव महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, गोवा, पांडिचेरी इत्यादि राज्यों में भी व्याप्त था।

12 मई 1857 को दिल्ली पर कब्जा पश्चात् 1857 की क्रान्ति का नेतृत्व दिल्ली में बहादुर शाह जफर ने किया। बहादुर शाह जफर ने बख्त खां कौ सैन्य नेतृत्व सौंपा और कई राजाओं को पत्र भेजकर अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने का आह्वान किया। लखनऊ में इस क्रान्ति के तारतम्य में 4 जून को अवध की बेगम हजरत महल ने अपने नाबालिग लड़के बिरजिस कादर को नवाब घोषित कर अंग्रेजों से लोहा लिया। ब्रिटिश सेना ने हारकर रेजीडेंसी में शरण ली, जिसमें क्रान्तिकारियों ने आग लगा दी। इसमें तमाम सैनिकों सहित ब्रिटिश रेजीडेंट हेनरी लारेंस की मौत हो गई। कानपुर में 5 जून को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह हुआ और नाना साहब ने क्रान्ति की बागडोर संभाली। तात्या टोपे व अजीमुल्ला खान के सहयोग से नाना साहब ने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर देकर आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया। झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी और जनरल ह्यूरोज द्वारा पराजित होने पर तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। कानपुर में क्रान्ति के सूत्रपात के समय से कदाचित कोई कोई ही मास ऐसा गया होगा जबकि तात्या टोपे ने किसी नये स्थान पर जाकर क्रान्ति का सन्देश न सुनाया हो या उत्साहहीन पराजित क्रान्तिकारी सेना का सुसंगठन न किया हो या युद्धक्षेत्र में किसी सेना का संचालन न किया हो। तभी तो गुरिल्ला युद्ध में माहिर तात्या टोपे हेतु अंग्रेजों ने लिखा कि- "यदि उस समय भारत में आधा दर्जन भी तात्या टोपे सरीखे सेनापति होते तो ब्रिटिश सेनाओं की हार तय थी।" इसी प्रकार फैजाबाद में मौलवी अहमदुल्लाह, मथुरा में देवी सिंह, मेरठ में करम सिंह, इलाहाबाद में लियाकत अली व बरेली में खान बहादुर खान ने क्रान्ति का नेतृत्व करते हुये अंग्रेजों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। बनारस, आजमगढ़, इटावा, अलीगढ़, बुलन्दशहर, मुरादाबाद, रुहेलखण्ड जैसे क्षेत्र भी इस क्रान्ति से अछूते नहीं रहे। बिहार में इस क्रान्ति का नेतृत्व जगदीशपुर के जमींदार कुंवर सिंह ने किया और आरा के निकट ब्रिटिश सैनिकों को पराजित किया। सिर्फ उत्तर प्रदेश और बिहार ही नहीं पंजाब व हरियाणा के लोगों ने भी इस क्रान्ति में आहुति दी। मेवात में सदरुद्दीन नामक किसान ने नेतृत्व की बागडोर संभाली तो पानीपत में बूअली कलंदर के इमाम के नेतृत्व में लोगों ने भाग लिया। पंजाब में इस क्रान्ति का असर तेजी से फैला और नतीजन अंडमान जेल में पहला क्रान्तिकारियों का जो जत्था भेजा गया, उसमें 206 पंजाब से थे।

महाराष्ट्र भी इस क्रान्ति से अछूता नहीं रहा और लगभग 20 स्थानों पर देशी सैनिकों व स्थानीय जनों ने इस क्रान्ति में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 1840 में सतारा के पूर्व राजा प्रताप सिंह के वकील रूप में लंदन जाने वाले रंगा बापूजी गुप्ते के नेतृत्व में 10 जून को सतारा व 13 जुलाई को पंढरपुर में क्रान्ति को प्रज्वलित किया गया। कोल्हापुर में इस बीच सैनिक विद्रोह हुए। हैदराबाद में सोनाजी पंत व रंगाराव पांडो, गंजम में राधाकृष्ण दण्डसेन, गोलकुंडा में चिंताभूपति व उनके भतीजे सन्यासी भूपति ने संघर्ष का आह्वान कर नेतृत्व किया। मछलीपट्टम व गुंटूर के इलाके भी क्रान्ति से अछूते नहीं रहे। कर्नाटक में जून 1857 में रामचन्द्र राव ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रचार किया। जुलाई में बंगलौर स्थित मद्रास सेना की 8वीं घुड़सवार सेना व अगस्त में बेलगाँव में 20वीं पैदल सेना की पलटन ने विद्रोह किया। कर्नाटक में मैसूर बीजापुर, शोरापुर, धारवाड़, कारवाड़, जमाखिंडी, नर्गुण्ड, कोप्पल, सतारा व बेलगाँव इत्यादि क्रान्ति के प्रमुख क्षेत्र रहे। प्रमुख क्रान्तिकारियों में राघोबा फड़नवीस, शांता राम फड़नवीस, सिद्दि बेनोवे इत्यादि रहे। तमिलनाडु में मद्रास चिंगलपुर, उत्तरी, अरकाट, सेलम, तंजौर, मदुरई कोयम्बटूर, तिरुनेलवेली क्रान्ति के प्रमुख केन्द्र रहे। जून 1857 में प्रथम मद्रास सैनिक पल्टन ने कूच करने से इन्कार कर दिया तो 27 जुलाई 1857 को चिंगलपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति भड़क उठी। यहाँ तक कि दो प्रमुख मन्दिर मनिपकम व पल्लवरम भी क्रान्तिकारियों के अड्डे बने और अरनागिरि व कृष्णा ने ज्योतिषी के भेष में क्रान्ति की ज्वाला पैदा की। केरल में कोचीन, कालीकट, किणलोर व त्रावणकर में लोगों ने अंग्रेजों के विरुद्ध इंडा उठाया। गोवा में इस क्रान्ति का नेतृत्व दीपूजी राणा ने किया। कानपुर में अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती देकर क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले नाना साहब अंत तक देश में स्थित अन्य क्रान्तिकारियों से सम्पर्क बनाए रहे। शोरापुर के राजा ने नाना साहब को विद्रोह के लिए संदेश भेजे और हैदराबाद के सोनाजी पंत ने एक पत्र रंगाराव पांडो के द्वारा नाना साहब को भेजा तो इसके जवाब में नाना साहब ने 18 अप्रैल 1858 को दक्कन के लिए एक घोषणा पत्र भेजा। इससे साफ है कि 1857 की क्रान्ति की ज्वाला समूचे देश में विस्तृत हुयी और इसमें सभी क्षेत्रीय, भाषायी, धार्मिक और जातीय सम्प्रदाय व वर्गों ने भाग लिया। उस समय के सरकारी दस्तावेजों में जानकारी मिलती है कि हिमालय की तराई अर्थात जम्मू से लेकर दक्षिण में हैदराबाद और पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर

पूरब में त्रिपुरा तक क्रान्ति की ज्वाला फैली। 1857 की क्रान्ति बैरकपुर व मेरठ के रास्ते दिल्ली से चारों तरफ चिंगारी की भांति फैल गयी। यद्यपि 20 सितम्बर 1857 को अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः कब्जा कर लिया, पर देश के अन्य भागों में क्रान्ति का ज्वार खत्म नहीं हुआ था। जैसे-जैसे क्रान्ति की खबर फैलती जाती, वैसे-वैसे लोग इसमें शामिल होते जाते। इस संग्राम का आखिरी बड़ा युद्ध 21 जनवरी 1859 को राजस्थान के सीकर में हुआ। इस संग्राम के दौरान हजारों व्यक्ति शहीद हुए, हजारों को निर्वासित किया गया, कई नेतृत्वकर्ता छिपकर नेतृत्व करने के लिए पलायन कर गए और बड़ी संख्या में लोगों को कैद में ठूँस दिया गया।

1857 की क्रान्ति की सफलता-असफलता के अपने-अपने तर्क हैं पर यह भारत की आजादी का पहला ऐसा संघर्ष था, जिसे अंग्रेज समर्थक सैनिक विद्रोह अथवा असफल विद्रोह साबित करने पर तुले थे, परन्तु सही मायनों में यह पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति पाने का राष्ट्रीय फलक पर हुआ प्रथम महत्वपूर्ण संघर्ष था। अमरीकी विद्वान प्रो. जी. एफ. हचिन्स के शब्दों में-''1857 की क्रान्ति को अंग्रेजों ने केवल सैनिक विद्रोह ही कहा क्योंकि वे इस घटना के राजद्रोह पक्ष पर ही बल देना चाहते थे और कहना चाहते थे कि यह विद्रोह अंग्रेजी सेना के केवल भारतीय सैनिकों तक ही सीमित था। परन्तु आधुनिक शोध पत्रों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह आरम्भ से सैनिक विद्रोह के ही रूप में हुआ, परन्तु शीघ्र ही इसमें लोकप्रिय विद्रोह का रूप धारण कर लिया।'' वस्तुतः इस क्रान्ति को भारत में अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध पहली प्रत्यक्ष चुनौती के रूप में देखा जा सकता है। यह आन्दोलन भले ही भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति न दिला पाया हो, लेकिन लोगों में आजादी का जज्बा जरूर पैदा कर गया। 1857 की इस क्रान्ति को कुछ इतिहासकारों ने महास्वप्न की शोकान्तिका कहा है, पर इस गर्वीले उपक्रम के फलस्वरूप ही भारत का नायाब मोती ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से निकल गया और जल्द ही कम्पनी भंग हो गयी। 1857 के संग्राम की विशेषता यह भी है कि इससे उठे शंखनाद के बाद जंगे-आजादी 90 साल तक अनवरत चलती रही।

कृष्ण कुमार यादव, पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002 मो.- 09413666599

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय -क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

आज के चार मोती

नर-नारी

यौवन पर आते ही नारी मदमाती बलखाती है।
चाल बदल जाती डग डग पर रूप कलश छलकाती है।।
कोई कुछ भी कहे मगर यह सच सुन लो दुनिया वालो,
पुरुषों की काया इस रस को पीने को अकुलाती है।।

2

अनायास उपजा सम्मोहन जिसे लुभाने लगता है।
अन्धा सा हो जाता उस पर काम फँसाने लगता है ।।
बेशक दोष पुरुष को दे दो फाँसी पर लटका दो पर,
नारी का पहनावा भी नर को उकसाने लगता है ।

3

काम वेग को वश में कर पाने की शक्ति नहीं सबमें ।
नारी नर की चाह नहीं हो यह अनुरक्ति नहीं सबमें।।
आकर्षण पर मर मिटने की मजबूरी होती नर की ,
संन्यासी हो कर रह जाएं ऐसी भक्ति नहीं सबमें।।

4

मेरी मंशा नहीं किसी देवी को आहत करने की।
नहीं चाह यह किसी पाप पर नर को राहत धरने की।।
किन्तु बताना चाह रहा हूँ खेल खिलाती प्रकृति यहाँ,
दाग लगाती कहीं कोशिशें करती चाहत भरने की ।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"
9424044284

21 वीं सदी में महिलाओं का समाज में दृष्टिकोण

महिलाएं समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । उनके बिना विकसित एवं समृद्ध समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है । अगर आप एक पुरुष यानि एक आदमी को शिक्षित कर रहे हैं तो आप सिर्फ एक आदमी को ही शिक्षित कर रहे हैं , परन्तु यदि आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर रहे हैं । समाज के विकास के लिए यह बेहद जरूरी है कि लड़कियों को शिक्षा में किसी तरह की कमी न आने दे , क्यों कि उन्हें ही आने वाले समय में लड़कों के साथ समाज को एक नई दिशा देनी है । सच्च माना जाए तो उस हिसाब से अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास ही कर पाएगा ,परंतु वहीं अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ-साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है । महिलाओं के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । उनकी प्रतिभा को अगर नजर अंदाज कर दिया जाए कि वो मर्द से कम ताकतवर तथा कम गुणवान है तो यह कहना ग़लत है कि भारत की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है!अगर उनकी क्षमता पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसका सीधा सा मतलब है कि आधा भारत अभी भी अशिक्षित है!'हां यदि महिलाएं ही पढ़ी लिखी नहीं होगी तो वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर पाएगा '। हमें ये समझना चाहिए कि अगर एक महिला अनपढ़ होते हुए भी घर को इतनी अच्छी तरह से संभाल रही है तो एक शिक्षित महिला समाज व देश को कितनी अच्छी तरह से संभाल लेगी व अच्छी तरह से संभाल भी रही है।

पहले महिलाओं की दशा दासियों से भी बद्तर थी । अगर कोई महिला लड़की को जन्म देती तो उसे या तो मार दिया जाता था या उसे घर के सदस्यों द्वारा प्रताड़ित किया जाता था। लड़की को जन्म देना पाप माना जाता था , उनसे सिर्फ यही उपेक्षा की जाती थी कि वे लड़के को ही जन्म दें , परंतु समय परिवर्तन के साथ हालात बदलते गए । अब लोग पहले से ज्यादा जागरूक हैं । अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना बाकी है । आज यदि महिलाओं की स्थिति की तुलना सैंकड़ों साल पहले से की जाए तो यही दिखाई देता है कि महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा अपने सपनों को साकार कर रही है । परंतु वास्तविक रूप में देखा जाए तो महिलाओं का विकास सभी दिशाओं में नहीं दिखाई देता खासकर ग्रामीण इलाकों में । अपने पैरों पर खड़ा होने के बाद भी महिलाओं को समाज की बेड़ियां तोड़ने में

अभी भी काफी लंबा सफर तय करना है । आज भी समाज की भेदभाव नजरों से बचना महिलाओं के लिए नामुमकिन सा दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि पुरुष और महिला के बीच की इस खाई को भरने के लिए अभी काफी समय और लग सकता है।

कई अवसरों पर देखा गया है कि महिलाओं के साथ निम्न दर्जे का व्यवहार किया जाता है! उन्हें अपने दफ्तरों में भी बड़ी जिम्मेदारी देने से मना कर दिया जाता है। समाज में महिलाओं के क ई ऐसे उदाहरण भी है जो छोटी उम्र की लड़कियों के लिए प्रेरणा है। इनमें ऐसी भी लड़कियां हैं जिनका खुद का परिवार ही उनका साथ देने को तैयार नहीं था पर उन्होंने अपने दम पर समाज की विचारधारा को बदल कर रख दिया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला पिछड़ेपन का एकमात्र कारण सही शिक्षा प्रबंधन का न होना है । गांव में पुरुष भी अपनी जिंदगी का एकमात्र लक्ष्य यही मानता है कि उसे सिर्फ दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करना है। ऐसे माहौल में पुरुषों से महिला सशक्तिकरण की उम्मीद करना बेकार है । महिलाओं को ज़रूरत है कि वे अपनी क्षमता को पहचानें और प्रयास करें कि अपने परिवार के साथ -साथ देश और समाज के विकास के प्रति भी अपनी भूमिका को निभा सकें! सरकार को भी ज्यादा से ज्यादा योजनाएं महिलाओं के विकास के लिए चलानी चाहिए। ये बदलाव तभी संभव है जब सारा समाज एक साथ खड़ा होकर सकारात्मक ढंग से काम करे।

अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करते तो यह साफ दिखाई देता है कि हालात में कुछ तो सुधार हुआ है। महिलाएं नौकरी करने लगी है। कई क्षेत्रों में तो महिला पुरुषों से भी आगे निकल चुकी है । दिन प्रतिदिन लड़कियां ऐसे कीर्तिमान बना रही है कि जिस पर न सिर्फ परिवार या समाज बल्कि पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है। महिलाओं के उत्थान में भारत सरकार द्वारा अनगिनत योजनाएं चलाई गई है जो महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही है! सरकार ने पुराने प्रचलनों को बंद करने के साथ- साथ उन पर रोक लगा दी है जिनमें मुख्य थे बाल विवाह , भ्रूण हत्या , दहेज प्रथा ,बाल मजदूरी व घरेलू हिंसा आदि। आज तक समाज महिला को बहन , मां , पत्नी और बेटी अ ादि विभिन्न रूपों में देखता है जो हर समय परिवार के मान सम्मान को बढ़ाने के लिए तैयार रहती है। शहरी क्षेत्रों में तो फिर भी हालात इतने खराब नहीं है पर ग्रामीण इलाकों में महिला कि स्थिति चिंताजनक है । सही शिक्षा व्यवस्था न होने के कारण महिलाओं की दशा दयनीय हो गई है। एक औरत बच्चे को जन्म देती है और पूरी निष्ठा के साथ जिम्मेदारियों को निभाती है,बदले में वह कुछ भी नहीं मांगती है और पूरी सहनशीलता के साथ बिना तर्क दिए अपनी भूमिका को निभाती रहती है।

महिलाओं के काम करने का तरीका ,सोचने का तरीका , व्यवहार आदि सब पुरुषों से अलग है । इन्हीं तथ्यों को माना जाए तो हम यह कह सकते हैं कि महिलाएं शारीरिक रूप से तथा मनोवैज्ञानिक तरीके से पुरुषों के बराबर नहीं है लेकिन महिलाएं पुरुषों से पीछे भी नहीं है । उदाहरण के तौर पर बच्चों की देखभाल को ही ले लें तो भारत में पुराने समय से ही महिलाओं के लिए समाज में एक लक्ष्मण रेखा सी बना दी गई है , जिसे लांघना उनके लिए लगभग नामुमकिन है। कई सालों से इन परंपराओं में कोई बदलाव नहीं आया है।

हमारे भारतीय समाज में नारी को बचपन से ही कुछ संस्कार दिए जाते हैं और वो संस्कार उसे सहेज कर रखने होते हैं जैसे धीरे बोलो,किसी के सामने ज्यादा मत हंसो , गंभीर बनो यानि समझदार बन कर रहना । हमारा पुरुष प्रधान समाज क्यों नहीं समझता है कि नारी प्रकृति का अनमोल उपहार है उसकी भी अपनी इच्छाएं और संवेदनाएं है जो उसे खूबसूरत बनाती है , वो ममता का एक रूप है और इस ममता रूपी नारी को हर रूप में हमेशा छल कपट ही मिला है , परंतु आज की नारी इन बातों को छोड़कर काफी आगे निकल चुकी है । आज नारी में आधुनिक बनने की होड़ लगी है!नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं , हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। आज नारी पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। झांसी की रानी (लक्ष्मीबाई) जैसी नारियों ने इतिहास में नारी शक्ति और त्याग को सिद्ध किया है। वास्तव में दमन का विरोध और प्रगतिशील नवीन विचारों को अपनाना ही नारी का आधुनिक होना है और ऐसा प्रत्येक युग में होता आया है।

नारी ने अगर कुछ कहा या किया तो उस पर उंगली उठा दी जाती ,या यहां तक कि रामायण में श्रीराम भी सीता माता की परीक्षा लेने से पीछे नहीं हटे , ये कहकर कि रावण के अपहरण करने की वजह से वो अपवित्र हो गई!यानि नारी पर जब श्रीराम चंद्र भगवान जी जो कि सभी के भगवान है उन्होंने भी माता सीता की परीक्षा लेकर साबित कर दिया कि नारी का महत्व उसके रहने से नहीं बल्कि पुरूष द्वारा बनाई परंपराओं में बंधकर रहना ही उसका कर्तव्य है और जब हमारे देश में माता सीता तक नहीं बच पाई तो हम तो एक सामान्य नारी है। परंतु समय बदल रहा है। अब नारी इन सभी बातों की परवाह किए बिना घर से बाहर निकल कर आधुनिक होने का परिचय दे रही है ,चाहे समाज आज उसे किसी भी प्रकार का दर्जा क्यूं न दे।

आज भारतीय नारी चार दीवारी से निकलकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है। शिक्षित होकर वह विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। आज उसकी प्रतिभा प्रत्येक क्षेत्र यानि साहित्य, चिकित्सा, विज्ञान , अंतरिक्ष ,सुरक्षा ,प्रशासन, राजनीति इत्यादि में आगे बढ़ रही है। आज नारी पुरुषों का व्यवसाय मानने वाले पुलिस विभाग में मुस्तैदी से अपना कार्य कर रही है । भारत की प्रथम महिला पुलिस अधिकारी किरण बेदी को कौन नहीं जानता। यहां तक कि हमारे हिमाचल प्रदेश के परिवहन निगम में एक महिला 'सीमा ठाकुर' बस चालक का कार्य निपुणता से कर रही है दूसरी देवभूमि की ही नीलकमल ठाकुर पहली महिला ट्रक चालक है वैसे ही दिल्ली परिवहन निगम में भी कई महिलाएं(देश का राजधानी क्षेत्र) जहां पर कि भारत में सबसे ज्यादा वाहन चलते हैं और ये महिलाएं बिल्कुल निपुणता से व समर्पित होकर बस संचालन करती है , इनमें सरिता , रिंपी इत्यादि है इनके अलावा दूसरे क ई राज्यों जैसे तमिलनाडु वहां कि वसंतकुमारी तो एशिया की पहली महिला बस चालक के रूप में प्रसिद्ध हुई है और भी ऐसे अनेकों उदाहरण है । केवल जमीन पर ही नहीं बल्कि हवा में फाईटर जेट विमान उड़ाने वाली क ई महिलाएं हैं । आज नारी अंतरिक्ष में जाने के साथ ही

हिमालय की दुर्गम चोटियों पर चढ़ रही है और ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ रही है जहां वो अपनी विजय का झंडा न फहरा रही हो । हमारे हिमाचल प्रान्त से ही बहुत कम उम्र की महिलाओं डिक्की डोल्मा और सोलन जनपद की बलजीत कौर इसका जीवंत उदाहरण है जिन्होंने कि संसार की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर सफल चढ़ाई करके ये साबित कर दिखाया है कि महिलाएं पुरुषों से कम नहीं है ।

नारी में विद्यमान उसकी प्रतिभा और प्रगति समाज के लिए आवश्यक है परंतु आधुनिकता के नाम पर समाज द्वारा नारी को दूषित करने का कोई अधिकार नहीं है, क्यों कि नारी का दर्जा मां ,बेटी ,किसी की अर्धांगिनी व साथ ही दुर्गा ,वीणावादिनी मां सरस्वती के रूप में पूजी जाती है, इसलिए उसको भी इनका सम्मान रखते हुए आगे बढ़ना है न कि रिश्तों को तोड़कर परिवार को अलग करके आधुनिकता को अपनाना है,वैसे भी नारी का दर्जा समाज को सम्मान दिलाने के लिए है,समाज को परिवार की तरह जोड़कर रखने के लिए है न कि तोड़ने के लिए।

आज की नारी काफी आगे बढ़ रही है उसकी वेशभूषा काफी हद तक बदल गई है,वो अब मनचाही वेशभूषा के लिए स्वतंत्र है । परंतु ज्यादातर लोग और नारी स्वंय अपनी आधुनिक वेशभूषा को और स्वच्छंद विचरण को ही नारी का आधुनिक होना माना रहे हैं, सिर्फ स्वतंत्रता को अपनाना ही आधुनिकता नहीं है। २१वीं सदी के समाज की बात की जाए तो आज भी महिलाओं को वे अधिकार प्राप्त नहीं है जिनकी वे हकदार है । आज भी उनसे क ई जगह घटिया व पाशविक व्यवहार किया जाता है,उन पर हावी होने की कोशिश की जाती है। यह सब हमें सोचने पर विवश करता है कि इतने सामाजिक जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रम चलने के बावजूद क्यों हर जगह सिर्फ महिलाओं को परेशान होना पड़ता है।

दुनिया और समाज में जिस तेजी से बदलाव हो रहा है उस हिसाब से महिलाओं के प्रति लोगों के नजरिए , मानसिकता और सोच में बदलाव नहीं हो रहा है। हम आज भी उसी पुरानी सोच और परंपरा की बात करते हैं। जिस सोच और परंपरा को कट्टरपंथी और समाज के तथाकथित ठेकेदार अपनी बातों को महिलाओं पर लादने की कोशिश करते रहे हैं और करते है।

महिला सशक्तिकरण के बारे में समाज के विभिन्न वर्गों , व्यवसायों एवं आर्थिक स्तरों से जुड़े व्यक्तियों की नजर में अलग-अलग मायने और दृष्टिकोण हैं। समाज में एक सोच के अनुसार पूरी तरह पाश्चात्य या अत्याधुनिकता को अपनाना ही सशक्तिकरण है। हमारे स्वतंत्र देश के संविधान में महिला और पुरुष के आधार पर नागरिकों में भेद नहीं किया गया बल्कि समान अवसर दिए हैं। केंद्र व राज्य स्तर पर महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए कल्याणकारी योजनाएं तथा निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था , अतिरिक्त पोषाहार ,स्वंय सहायता समूहों को बढ़ावा देना , छात्रवृत्ति तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देने आदि के माध्यम से महिलाओं को सहायता दी जा रही है।

इसके बावजूद अभी भी महिलाओं के संपूर्ण सशक्तिकरण की दिशा में बहुत कुछ किया जाना बाकी है और बहुत अधिक प्रयासों की आवश्यकता है । सरकार के साथ सहभागी बनकर हम सभी महिलाओं को आगे बढ़ना होगा ,ये कार्य लोकतंत्र की जड़ पंचायत से लेकर संसद तक संयुक्त रूप से किया जा सकता है , तभी हम अपने लक्ष्य में सफल सिद्ध होंगे ।

सहायक संदर्भ सूची :-----

(1) "महिला सशक्तिकरण : बाधाएं एवं संकल्प "---डा० प्रवीण शुक्ल

(2) "इक्कीसवीं सदी की ओर "----संपादक श्री सुमन कृष्ण कांत

(3) " महिला सशक्तिकरण की रुपरेखा " डा० सत्येंदु नाथ द्विवेदी

छविंदर कुमार

अनुसन्धित्सु , विद्या वाचस्पति हिन्दी

केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला , कांगड़ा , हिमाचल प्रदेश

संपर्क नंबर 98170----18700

छविंदर कुमार, अनुसंधित्सु विद्यावारिधी हिंदी केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, हि०प्र०

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-9-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 188
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

रक्तदान से दें जिंदगी का उपहार

विश्व रक्तदान दिवस (14 जून) पर विशेष

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

भारतीय संस्कृति में कई तरह के दान प्रचलित हैं, चाहे वह धन का हो, वस्तु का हो या सम्पत्ति का हो। हर दान के पीछे कोई न कोई भाव छुपा होता है। अक्सर लोग दान करते हैं, परंतु कुछ पाने के लिए। कोई ग्रह-नक्षत्र के दुष्प्रभावों से बचना चाहता है, कोई आराध्य को प्रसन्न करना चाहता है, जबकि कुछ लोग प्रसिद्धि पाने के लिए दान पुण्य करते हैं। आज के युग में इंसान में समर्पण की भावना विलुप्त होती जा रही है। वह अपने आप में सीमित होकर रह गया है। स्थिति तब अजीबोगरीब हो जाती है, जब किसी परिजन की जान खतरे में हो और लोग रक्तदान से पीछे हट जाते हैं। तमाम मौतें तो रक्त के अभाव में ही हो जाती हैं। ऐसे में यह बेहद चिन्ता का विषय है।

भारत में हर साल 15 लाख लोगों की रक्त की कमी के कारण मौत हो जाती है। एकमात्र रक्त ही है जो किसी प्रयोगशाला में नहीं बनाया जा सकता। हमारे वैज्ञानिक चांद, तारों पर पहुंच गये, टेस्ट ट्यूब बेबी पैदा कर लिया, जानवरों के क्लोन बना लिये परन्तु यदि कोई वस्तु अब तक नहीं बना सके तो वह है, मानव रक्त। अर्थात रक्त का विकल्प केवल और केवल रक्त ही है। कई बार जिंदगी के चिराग सिर्फ इसलिए बुझ जाते हैं क्योंकि उन्हें वक्त रहते रक्त नहीं मिल पाता। ऐसे में रक्तदान समय की माँग है। एक व्यक्ति को दिया गया रक्त न जाने कितने चेहरों पर मुस्कान ला सकता है। इसीलिए रक्त को जिंदगी का सबसे अनमोल रत्न माना जाता है। लेकिन रक्तदान

को लेकर समाज में तमाम भ्रांतियाँ व्याप्त हैं, जिसके चलते लोग रक्तदान करने से कतराते हैं।

रक्त केवल शरीर में बहने वाला तरल पदार्थ नहीं है, यह हमारी संस्कृति, परम्परा और हमारे आचार-विचार को प्रकट करने वाला साधन है। रक्त ने न जाने कितने परायों को अपना और अपनों को पराया कर दिया है। सड़क दुर्घटना में मरणासन्न व्यक्ति को जब कोई अपना रक्त देकर जीवन देता है तो वह अपने रक्तदाता का जीवन भर के लिए कृतज्ञ हो जाता है। मनुष्य के शरीर में वजन का 7 प्रतिशत रक्त होता है। एक सामान्य मनुष्य में 5-6 लीटर रक्त होता है, जबकि रक्तदान के दौरान मात्र 300 मिली रक्त लिया जाता है और शरीर इस रक्त की पूर्ति मात्र 24 घंटे में कर लेता है। एक यूनिट रक्त से 04 लोगों की जान बचाई जा सकती है क्योंकि अब रक्त को आवश्यकतानुसार चार रूपों में मरीज को दिया जाता है। रक्त में पाये जाने वाली लाल रक्त कणिकाएं (एरिथ्रोसाइट्स), श्वेत रक्त कणिकाएं (ल्यूकोसाइट्स), रक्त प्लेटलेट्स और रक्त समूह को आवश्यकतानुसार अलग-अलग या एक साथ मरीज को दिया जाता है। दुनिया में 90 प्रतिशत मामलों में रक्त के अवयवों का प्रयोग होता है, जबकि भारत में मात्र 15 प्रतिशत मामलों में ही उनका प्रयोग होता है। यहाँ 85 प्रतिशत मरीजों को पूर्ण रक्त चढ़ा दिया जाता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो यहाँ 7 प्रतिशत भारतीयों का ब्लड ग्रुप ओ-निगेटिव है। 0.4 प्रतिशत भारतीयों का ब्लड ग्रुप एबी-निगेटिव है। सबसे कम पाया जाने वाल ब्लड ग्रुप एबी-निगेटिव है।

रक्तदान को लेकर लोगों में तमाम भ्रांतियाँ हैं। मसलन रक्तदान से कमजोरी आ जाती हैं, रक्तदान करने से शरीर में खून कई माह बाद बनता है, रक्तदान करने से हेपेटाइटिस-बी व एड्स जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं या रक्तदान के बाद शरीर में जो खून बनता है वह अच्छा नहीं होता है। ऐसी तमाम भ्रांतियों से निजात पाने की जरूरत है। इसके लिए तमाम सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं प्रयासरत हैं, ताकि अधिकाधिक लोगों को जागरूक कर रक्तदान से जोड़ा जा सके। वस्तुतः आज सबसे ज्यादा जरूरत युवा पीढ़ी को रक्तदान जैसे संकल्पबद्ध अभियान से जोड़ने की है।

सामान्य तौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति वर्ष में चार बार रक्तदान कर सकता है। न्यूनतम तीन माह के अन्तराल पर रक्तदान किया जा सकता है। रक्तदान के लिए जरूरी है कि व्यक्ति की आयु 18 से 60 साल के बीच हो, वजन 45 किलोग्राम से कम न हो एवं रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा 12.5 व रक्तचाप 70-110 हो। इसके अलावा किसी संक्रामक बीमारी से ग्रसित व्यक्ति या गुर्दे, लीवर व हृदय की बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति को रक्तदान नहीं करना चाहिए। एस्प्रिन, एंटीबायोटिक्स डिप्रेशन की दवा और हार्मोन की दवा लेने वाले व्यक्तियों को रक्तदान न करने की सलाह दी जाती है, वहीं अल्कोहल का लगातार सेवन करने वाले व्यक्तियों को भी रक्तदान से बचना चाहिए। गर्भवती महिलाएं और एच.आई.वी. पॉजिटिव व्यक्ति रक्तदान नहीं कर सकते।

हाइपो या हाइपर थायराइड से पीड़ित व्यक्ति एवं डायबिटीज, अस्थमा, पीलिया व किडनी रोग से पीड़ित मरीज भी रक्तदान नहीं कर सकते। यही कारण है कि रक्तदान से पूर्व चिकित्सक द्वारा सामान्य जाँच करने के बाद ही रक्तदान किया जाता है। रक्तदान करने वाले व्यक्ति का रक्तचाप, रक्त शर्करा, हीमोग्लोबिन के परीक्षण के अलावा मलेरिया, एच.आई.वी., वी.डी.आर.एल, हेपेटाइटिस -बी, हेपेटाइटिस-सी इत्यादि का भी परीक्षण किया जाता है। रक्त दान से पूर्व कुछ सावधानियाँ जरूरी हैं। मसलन, खाली पेट रक्तदान नहीं करना चाहिए, रक्तदान से पूर्व किसी नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए एवं रक्तदान से पहले पर्याप्त नींद लेना जरूरी है। रक्तदान के बाद भी कुछ सावधानियाँ बरतनी होती हैं। मसलन - तेज धूप से बचें, 2-3 घंटे तक ड्राइविंग न करें, 4 घंटे तक धूम्रपान न करें और 24 घंटे तक अल्कोहल न लें। इसके अलावा 24 घंटां में 10-12 गिलास पानी और जूस जरूर पियें।

वस्तुतः रक्तदान का मकसद न तो प्रसिद्धि पाना है, न ही देवी-देवताओं को प्रसन्न करना बल्कि यह जनकल्याण की भावना से किया जाता है। समाजहित के लिए निःस्वार्थभाव से किया गया यह दान अतुलनीय है। जहाँ अन्य दान जीवन जीने का सहारा बनते हैं, वहीं रक्तदान तो नया जीवन ही प्रदान कर देता है। यही कारण है कि इसे महादान कहा जाता है। यह मानवता के प्रति संवेदनशक्ति तथा प्यार की अभिव्यक्ति है। रक्तदान से व्यक्ति एक तरफ तो दूसरे के जीवन को बचाता है, तो दूसरी तरफ स्वयं के शरीर में नयी स्फूर्ति प्राप्त करता है। चिकित्सा विशेषज्ञों की मानें तो रक्तदान से शारीरिक कमजारी नहीं वरन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। रक्तदान के बाद शरीर में 24 घंटे के भीतर नई रक्त कणिकाएं बन जाती हैं जो ऑक्सीजन को एक कोशिका से दूसरी कोशिका में ले जाने में और अधिक मजबूती से काम करती है, जिससे शरीर को रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। रक्त की आयु नब्बे दिन होती है, रक्तदान करने से हमारे शरीर की पुरानी रक्त कोशिकायें निकल जाती हैं और हमारी अस्थि मज्जा, नयी रक्त कोशिकायें बनाने लगती हैं जिससे हमारे शरीर में एक नयी उर्जा का संचार होता है। परिणामस्वरूप बीमारियां होने का खतरा कम हो जाता है। चिकित्सा विशेषज्ञों के मुताबिक समय-समय पर रक्तदान करने से बढ़ा हुआ कोलेस्ट्राल कम होता है जिससे हृदय संबंधी रोग का भी खतरा कम हो जाता है।

रक्तदान की शुरूआत कैसे हुई यह भी जानना दिलचस्प है। रक्तदान का आरंभ 17वीं शताब्दी से माना जाता है, लेकिन उस समय रक्त देते समय प्रायः रोगियों की मृत्यु हो जाती थी। इस मृत्यु को देखते हुए इंग्लैण्ड, फ्रांस और इटली जैसे देशों ने इसे पूर्णतः प्रतिबन्धित कर दिया, परंतु दक्षिण अमेरिका में बसे इंका सभ्यता के लोग, जो इससे पहले से एक आदमी का खून दूसरे में चढ़ाना सीख चुके थे, उनमें खून चढ़ाते समय बहुत कम लोगों की मृत्यु होती थी। उस समय इसका कारण ज्ञात नहीं था, लेकिन अनुमान लगाया गया

कि इंका सभ्यतावासी एक ही खून समूह वाले हैं, जबकि यूरोप में भिन्न-भिन्न रक्त समूह के लोग निवास करते हैं। ऐसे में इस दिशा में शोध आरंभ हुए और कार्ल लेण्डस्टाइनर (14 जून 1868-26 जून 1943) नामक विख्यात ऑस्ट्रियाई जीवविज्ञानी और भौतिकविद् को यह श्रेय जाता है कि उन्होंने रक्त में अग्गुल्युटिनिन की मौजूदगी के आधार पर रक्त का अलग अलग रक्त समूहों - ए, बी, एबी, ओ में वर्गीकरण कर चिकित्साविज्ञान में अहम योगदान दिया। इस महान खोज के चलते ही रक्त आधान (ब्लड ट्रांसफ्यूजन) संभव हो सका और वर्ष 1930 में इस महान वैज्ञानिक को शरीर विज्ञान में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्ल लेण्डस्टाइनर के जन्मदिन 14 जून को ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कालान्तर में रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए विश्व रक्तदान दिवस के तौर पर चुना।

वैश्विक स्तर पर बात करें तो प्रतिवर्ष 8 करोड़ यूनिट से ज्यादा रक्त, रक्तदान से जमा होता है। इसमें विकासशील देशों का योगदान 38 प्रतिशत होता है, जबकि यहाँ दुनिया की 82 प्रतिशत आबादी रहती है। वर्ष 1997 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 100 फीसदी स्वैच्छिक रक्तदान नीति की नींव डालते हुए यह लक्ष्य रखा था कि विश्व के प्रमुख 124 देश अपने यहाँ स्वैच्छिक रक्तदान को ही बढ़ावा दें। मकसद यह था कि रक्त की जरूरत पड़ने पर उसके लिए पैसे देने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए, पर अब तक लगभग 49 देशों ने ही इस पर अमल किया है। तंजानिया जैसे देश में 80 प्रतिशत रक्तदाता पैसे नहीं लेते। ब्राजील में तो यह कानून है कि आप रक्तदान के पश्चात किसी भी प्रकार की सहायता नहीं ले सकते। ऑस्ट्रेलिया के साथ साथ कुछ अन्य देश भी हैं जहाँ पर रक्तदाता पैसे बिलकुल भी नहीं लेते। पर दुर्भाग्यवश अपना भारत इसमें काफी पिछड़ा हुआ है या यूँ कहें कि लोग जागरूक नहीं हैं।

आँकड़ों पर गौर करें तो भारत में प्रतिवर्ष 1 करोड़ यूनिट रक्त की जरूरत होती है, जिसमें से 75 लाख यूनिट रक्त ही उपलब्ध हो पाता है। यानी करीब 25 लाख यूनिट रक्त के अभाव में हर साल सैकड़ों मरीज दम तोड़ देते हैं। प्रत्येक दो सेकेंड में एक व्यक्ति को रक्त की जरूरत होती है। दरअसल भारत में रक्त की जरूरत को पूरा करने के लिए प्रतिदिन 38 हजार रक्तदाताओं की आवश्यकता है। फिलहाल मांग का केवल 59 प्रतिशत रक्त ही स्वैच्छिक रक्तदान से हासिल होता है। शेष 41 फीसदी रक्त की जरूरत को पेशेवर रक्तदाताओं से खरीद कर पूरा किया जाता है। हालात यह हैं कि आज ब्लड बैंकों में कई पेशेवर डोनर्स जब-तब रक्त बेचते हैं। तमाम शराबी, ड्रगिस्ट अपनी लत की भूख मिटाने के लिए थोड़े से पैसे की खातिर कई-कई बार रक्त बेचते हैं। इनमें से अधिकांश गंभीर रोगों से भी ग्रस्त होते हैं। जरूरत पड़ने पर व्यक्ति इनसे रक्त तो ले लेता है, परंतु बाद में उसे इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

वस्तुतः भारत की कुल आबादी की एक प्रतिशत जनसंख्या भी रक्तदान नहीं करती है जबकि नेपाल जैसे देश में कुल रक्त की जरूरत का 90 फीसदी स्वैच्छिक रक्तदान से पूरा होता है तो श्रीलंका में 60 फीसदी, थाईलैण्ड में 95 फीसदी, इण्डोनेशिया में 77 फीसदी और बर्मा में 60 फीसदी हिस्सा रक्तदान से पूरा होता है। भारत में मात्र 46 लाख लोग स्वैच्छिक रक्तदान करते हैं। इनमें महिलाएं मात्र 06 से 10 प्रतिशत हैं। राज्यवार गौर करें तो सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला राज्य उ0प्र0 स्वैच्छिक रक्तदान के मामले में पिछड़े राज्यों में शामिल है, जहाँ मात्र 16 प्रतिशत लोग स्वैच्छिक रक्तदान में रुचि दिखाते हैं। मेघालय में 10, मणिपुर में 10.08, उ0प्र0 में 16 व पंजाब 19.04 प्रतिशत स्वैच्छिक रक्तदान के साथ निचले पायदान पर तो पश्चिम बंगाल (87.6), त्रिपुरा (84), तमिलनाडु (83), महाराष्ट्र (78), चण्डीगढ़ (75) की गिनती बेहतर राज्यों में की जाती है। ढाई हजार से ज्यादा ब्लड बैंक भी हमारी जरूरत को नहीं पूरा कर पाते। आज तक देश में एक भी केंद्रीयकृत रक्त बैंक की स्थापना नहीं हो सकी है जिसके माध्यम से पूरे देश में कहीं पर भी रक्त की जरूरत को पूरा किया जा सके। टेक्नोलॉजी में हुए विकास के बाद निजी तौर पर वेबसाइट्स के माध्यम से ब्लड बैंक व स्वैच्छिक रक्तदाताओं की सूची को बनाने का कार्य आरंभ हुआ। इसमें थोड़ी-बहुत सफलता भी मिली, लेकिन संतोषजनक हालात अभी नहीं बने। नतीजन, कहीं नकली खून का कारोबार बढ़ रहा है तो कहीं रक्तदान के नाम पर गोरखधंधा चल रहा है। ऐसे में जरूरत है इस संबंध में लोगों को जागरूक करने की और स्वयं पहल करने की ताकि स्वैच्छिक रक्तदान की प्रक्रिया को बढ़ाया जा सके और रक्त के अभाव में किसी को जीवन का दामन न छोड़ना पड़े। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट कहती है कि यदि देश में 5 प्रतिशत लोग स्वयं ही रक्तदान करें तो आवश्यक रक्त की पूर्ति हो जायेगी। तो फिर देर किस बार की। आइए संकल्प लें और रक्तदान कर दूसरों को जीवनदान देने का पवित्र धर्म निभाएँ। याद आती हैं एक कवि की कुछ पंक्तियाँ-

मैं हूँ इंसान और इंसानियत का मान करता हूँ,

किसी की टूटती सांसों में हो फिर से नया जीवन

मैं बस यह जानकर अक्सर 'लहू' का दान करता हूँ!!

आकांक्षा यादव , पोस्टमास्टर जनरल आवास

नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002

मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

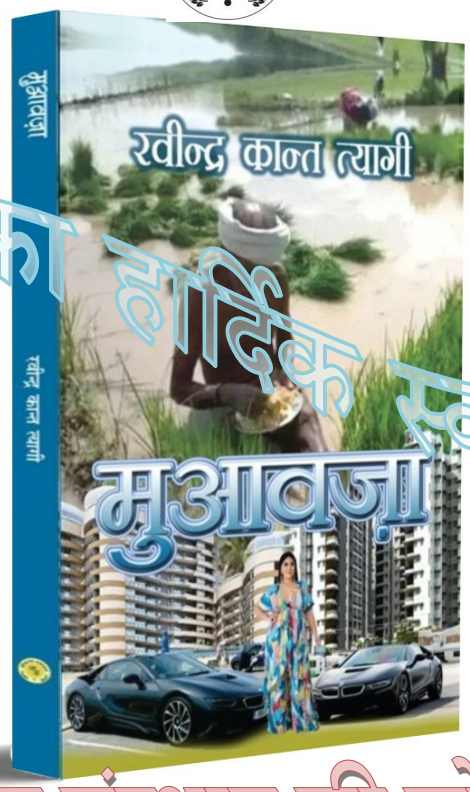

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

प्रतिस्पर्धा और अवसाद

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। हर व्यक्ति एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश कर रहा है। इस कोशिश में कुछ लोग सफल हो जाते हैं तो कुछ को निराशा हाथ लगती है। इन निराश लोगों में कुछ तो ऐसे हैं जो हार नहीं मानते और निरंतर प्रयास करते रहते हैं। ऐसे लोग अंततः सफल हो जाते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो असफल होने पर तनाव में आ जाते हैं।

तनाव एक द्वंद्व है जो व्यक्ति के मन एवं भावनाओं में अस्थिरता पैदा करता है। हमारी मनःस्थिति एवं बाहरी परिस्थिति के बीच सामंजस्य न होने के कारण तनाव उत्पन्न होता है। तनावग्रस्त व्यक्ति काम के प्रति एकाग्र नहीं रह पाता जिससे उसकी कार्यक्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अल्प मात्रा में तनाव होना जीवन का एक हिस्सा है और कोई भी व्यक्ति इससे बचा नहीं रह सकता। जीवन में प्रगति करने के लिए नियंत्रित तनाव होना बुरा नहीं है। लेकिन जब यह तनाव अनियंत्रित होकर हमारे भावनात्मक और शारीरिक जीवन का हिस्सा बन जाए तो अवसाद का रूप ले लेता है जो आगे चलकर बहुत खतरनाक साबित हो सकता है।

घोर अवसाद में व्यक्ति को स्वयं को ही ऐसी आवाजें सुनाई देती है कि वह किसी काम का नहीं है या असफल हैं। वह हमेशा अपने बारे में नकारात्मक विचार सुनता रहता है और वह व्यक्ति वैसे ही कार्य करने लगता है।

अवसाद से ग्रस्त व्यक्ति धीरे-धीरे समाज से कट जाते हैं एवं उनके दिमाग में आत्महत्या जैसे विचार आने लगते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अवसाद दुनिया भर में होने वाली सबसे सामान्य बीमारी है। विश्व में लगभग 35 करोड़ लोग अवसाद से प्रभावित हैं।अवसाद से बचने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपने आपको खुश रखे। कोई भी समस्या आने पर हताश न हो बल्कि समस्या को हल करने के प्रयास करे। यदि कोई प्रयास असफल हो जाता है तो उदास होने के बजाय पुनः प्रयास करे। अवसाद से बचने के लिए जीवनशैली और आहार में कुछ बदलाव लाने की ज़रूरत होती है।अवसाद से बचने के लिए प्रचुर मात्रा में पानी पीना चाहिए तथा ऐसे फलों और सब्जियों का अधिक सेवन करना चाहिए जिनमें पानी की मात्रा अधिक हो। पोषक तत्वों से भरपूर भोजन करना चाहिए जिसमें शरीर के लिए जरूरी सभी विटामिन्स और खनिज हो। हरी पत्तेदार सब्जियाँ एवं मौसमी फलों का सेवन करना चाहिए। धूम्रपान, मद्यसेवन या किसी भी प्रकार का नशे का सर्वथा त्याग करना चाहिए।

विनय बंसल, 76, विनय, शाहगंज रोड, बोदला, आगरा 282010

मोबाइल 9458060262

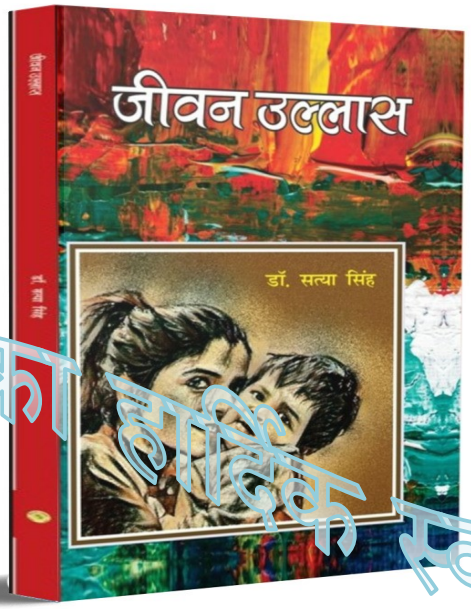

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता
जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सभी भारती एक हो जाएं

(डा.केवलकृष्ण पाठक)

किसी प्राणी को दुख ना दें हम
किसी का भी नहीं छीने हक
भेद भाव से दूर रहें हम
किसी को हानि ना पहुँचायें
जो भी करें राष्ट्र के हित में
देश प्रेम का भाव जगाएँ
शत्रु जो करे वार देश पर
अटूट वार कर मार भगाएँ
भारत माँ की रक्षा हेतु
तन मन धन देकर हर्षाएं
भूखा नंगा रहे ना कोई
सभी खुशहाल हो जाएँ
प्रेम से सबके मन को जीतें
सत्य प्रेम करुणा अपनाएँ
ऊँचा नाम करें भारत का
भारतवासी एक हो जाएँ

सम्पादक-रवींद्र ज्योति मासिक, 343/19
आनंद निवास ,गीता कालोनी, जींद हरियाणा

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

सरकारी अस्पताल

घुड़क रहा ऑर्डर सरकारी
फिर भी फैल रही बीमारी
जै हो बजते हुए गाल की
जै सरकारी अस्पताल की

एक रूपइये की रसीद पर
रजिस्टर्ड हैं ढेरों रोगी
डाक्टर साहब हाँफ रहे हैं
कब ओ पी डी ओवर होगी

मुँह चिढ़ा रही धूल से अटी
घड़ी पुरानी सुस्त चाल की

बैठा है चुपचाप मंगरुआ
तीन कोस चल कर आया है
दर्द सुन रहा उस पंखे का
जो आदम ने लगवाया है

उसको भी लग रही जरूरत
दवा सुई की देखभाल की

अस्पताल को गाँधी जी का
नुस्खा इतना मन भाया है
जो कुटीर उद्योग दवा के
दवा उन्हीं से मंगवाया है

खपत सुनिश्चित कर डाली है
घर में भी तैयार माल की

अस्पताल का सारा अमला
चौबीस घण्टे जगा हुआ है
अस्पताल पूरे जवार की
देखभाल में लगा हुआ है

आँखें फितरत देख रही हैं
हद से मोटी हुई खाल की

सूर्य प्रकाश मिश्र

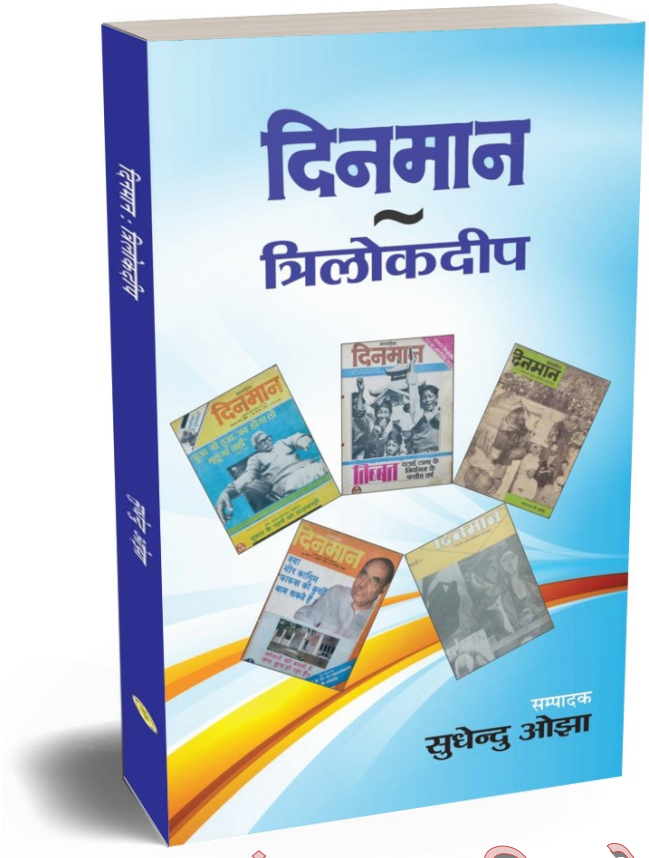

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सुखी राजकुमार

मूल लेखक : ऑस्कर वाइल्ड
अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

शहर से बहुत ऊँचाई पर एक लम्बे स्तम्भ पर सुखी राजकुमार की मूर्ति खड़ी थी। उसकी पूरी मूर्ति पर सोने का पानी चढ़ा हुआ था। मूर्ति की आँखों की जगह दो चमकीले नीलमणि जड़े हुए थे। और उसकी तलवार की मूठ पर एक बहुत बड़ा चमकीला माणिक जड़ा हुआ था।

एक रात एक नन्ही गौरैया शहर पर से उड़ते हुए वहाँ पहुँची। छह हफ़्ते पहले उसकी सभी सखियाँ और मित्र मिस्र चले गए थे , लेकिन यह नन्ही गौरैया पीछे रह गई। अब इस गौरैया ने भी मिस्र चले जाने का फ़ैसला किया। पूरा दिन उड़ते रहने के बाद रात में वह इस शहर में पहुँची।

" मैं कहाँ रुकूँ ?
" गौरैया बोली। " मुझे उम्मीद है , इस शहर ने भी आने वाली सर्दी के मौसम से निपटने की तैयारी कर ली होगी। "

फिर गौरैया ने ऊँचे स्तम्भ पर खड़ी मूर्ति को देखा। " मैं वहाँ रुकूँगी। " गौरैया ने चहक कर कहा। " यह एक अच्छी , हवादार जगह है। " इसलिए गौरैया उड़कर सुखी राजकुमार की मूर्ति के कदमों के बीच जा बैठी।

" मेरे पास सुनहरा शयन-कक्ष है ,
" चारों ओर देखते हुए गौरैया धीरे से बोली। फिर वह सोने की तैयारी करने लगी। लेकिन वह अपना सिर अपने पंखों से ढँक ही रही थी कि पानी की एक बड़ी बूँद उसके ऊपर पड़ी।

" क्या अजीब बात है !
" वह बोली। " पूरे आकाश में एक भी बादल नहीं है , चमकीले सितारे साफ़ नज़र आ रहे हैं , फिर भी बारिश हो रही है। "

फिर उस पर एक और बूँद टपकी।

" ऐसी मूर्ति का क्या फ़ायदा जो मुझे बारिश से न बचा सके ?
" उसने कहा। " मुझे एक अच्छी चिमनी की नली ढूँढ़नी होगी। " यह कह कर उस गौरैया ने वहाँ से उड़ने का मन बना लिया।

लेकिन इससे पहले कि गौरैया अपने पंख फैला पाती , पानी की एक तीसरी बूँद उस पर गिरी और उसने ऊपर देखा। अरे , उसे क्या दिखा ?

सुखी राजकुमार की आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। और उसके सुनहरे गालों से नीचे आँसुओं की बूँदें ढुलक रही थीं। राजकुमार का चेहरा चाँदनी में इतना सुंदर लग रहा था कि नन्ही गौरैया को उस पर दया आ गई।

" तुम कौन हो ? " उसने पूछा।

" मैं सुखी राजकुमार हूँ। "

" फिर तुम रो क्यों रहे हो ?
" गौरैया ने पूछा। " तुमने तो मुझे लगभग भिगो ही दिया है। "

" जब मैं जीवित था और मेरे पास इंसान का धड़कता हुआ दिल था ,
" मूर्ति ने जवाब दिया ,
" तब मैं नहीं जानता था कि आँसू क्या होते हैं , क्योंकि मैं एक महल में रहता था जहाँ दुख का प्रवेश वर्जित था। मेरे दरबारी मुझे ' सुखी राजकुमार ' कह कर बुलाते थे , और मैं वाक़ई सुखी था। मैं सुख से जिया और इसी अवस्था में मेरी मृत्यु हुई। और अब , जबकि मैं मर चुका हूँ , उन्होंने मुझे इतनी ऊँची जगह पर स्थापित कर दिया है जहाँ से मैं अपने इस शहर की सारी बदसूरती और यहाँ के लोगों के सारे दुख-दर्द देख सकता हूँ। हालाँकि मेरा हृदय सीसे का बना है पर पर मेरे पास रोने के अलावा कोई विकल्प नहीं। "

" यह क्या ? क्या यह मूर्ति ठोस सोने की नहीं बनी है ? "

गौरैया ने ने खुद से कहा। वह बेहद विनम्र थी , इसलिए व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं करती थी।

" बहुत दूर एक पतली-सी गली में एक टूटा-फूटा मकान है ,
" मूर्ति ने धीमी , संगीतमय आवाज़ में कहना जारी रखा। " उस जर्जर मकान की एक खिड़की खुली हुई है , जिसमें से मैं एक स्त्री को एक मेज़ के पास रखी कुर्सी पर बैठे हुए देख सकता हूँ। वह थके और निस्ते

ज चेहरे वाली एक गरीब स्त्री है। कई जगह सुई चुभ जाने के कारण उ सके हाथ लाल और खुरदरे हैं। दरअसल वह एक दरजिन है। वह महा रानी की एक खूबसूरत परिचारिका के साटन के चिकने घाघरे पर कढ़ा ई कर रही है। वह सुंदर परिचारिका दरबार में होने वाली अगली नृत्य-सभा में उस वस्त्र को पहनेगी। कमरे के दूसरे कोने में पड़े बिस्तर पर उ सका छोटा बच्चा बीमार पड़ा हुआ है। उसे बुख़ार है और वह अपनी माँ से खाने के लिए संतरे माँग रहा है। लेकिन उसकी गरीब माँ के पास उसे देने के लिए नदी से लाए पानी के अलावा कुछ भी नहीं है। इस लिए वह बच्चा रो रहा है। ओ प्यारी , नन्ही गौरैया , क्या तुम उसे मेरी तलवार की मूठ पर लगा माणिक ले जा कर नहीं दोगी ? मेरे पैर पत्थर के तल से जुड़े हुए हैं और मैं हिल भी नहीं सकता। “

“ मिस्र में मेरी प्रतीक्षा हो रही है। “ गौरैया बोली। “ मेरी सखियाँ नील नदी पर उड़ान भर रही हैं और वहाँ मौजूद बड़े-
बड़े कमल के फूलों को देखकर खुश हो रही हैं। जल्दी ही वे सोने च ली जाएँगी। “

राजकुमार ने गौरैया से एक और रात उसके पास रुककर उसका दूत बन ने के लिए कहा।

“ वह लड़का बहुत प्यासा है और उसकी माँ बेहद उदास

है।” राजकुमार बोला।

“ मुझे नहीं लगता कि मुझे लड़के अच्छे लगते हैं ,
“ गौरैया ने उत्तर दिया। “ मैं मिस्र जाना चाहती हूँ। “

लेकिन सुखी राजकुमार इतना उदास लग रहा था कि नन्ही गौरैया दुखी हो गई।

“ यहाँ बहुत ठंड है ,
“ गौरैया बोली। लेकिन वह एक रात राजकुमार के पास रुककर उस का दूत बनने के लिए तैयार हो गई।

“ शुक्रिया, नन्ही गौरैया , “ राजकुमार ने कहा।

गौरैया ने राजकुमार की तलवार की मूठ से वह सुंदर माणिक निकाल लिया और उसे अपने पंजों में दबा कर वह शहर के घरों की छतों के ऊ पर से उड़ चली। उड़ते-
उड़ते वह प्रधान गिरजाघर के बुर्ज के पास से गुजरी जहाँ सफ़ेद संगमर मर के देवदूत खुदे हुए

थे। वह महल के बग़ल से गुजरी जहाँ उसने नृत्य की आवाज़ सुनी। ए क सुंदर लड़की अपने प्रेमी के साथ छज्जे पर आई।

“ मुझे उम्मीद है , राजसी नृत्य-
सभा वाले दिन से पहले मेरी सुंदर पोशाक बन कर तैयार हो जाएगी। “ उसने कहा। “ मैंने आदेश दिया है कि उस पोशाक पर सुंदर फूलों की कढ़ाई की जाए , लेकिन ये दरजिनें इतनी आलसी हैं न। “

गौरैया नदी के ऊपर से उड़ी और वहाँ उसे जहाज़ों के मस्तूलों से लट की लालटेनें दिखीं। अंत में वह उस गरीब औरत के घर पहुँची और उ सने खुली खिड़की में से अंदर झाँककर देखा। बुख़ार में तड़पता हुआ लड़का बिस्तर पर बेचैनी से करवटें बदल रहा था और उसकी थकी हु ई माँ बिस्तर के दूसरी ओर सो गई थी। गौरैया फुदक कर कमरे के भीत र पहुँची और उसने मेज़ पर पड़े महिला के अंगुश्ताने के बग़ल में वह माणिक भी रख दिया। फिर वह धीरे से बिस्तर के चारों ओर उड़ी और उसने बिस्तर पर लेटे उस बीमार लड़के के माथे पर अपने पंख फड़फ ड़ा कर हवा कर दी।

“ मुझे कितना अच्छा लग रहा है ,
“ लड़के ने कहा। “ ज़रूर मेरी तबीयत ठीक हो रही है। “ यह कह कर वह एक सुखद नींद के आग़ोश में चला गया।

तब गौरैया उड़ कर सुखी राजकुमार के पास पहुँची और उसने जो कि या था , वह सारी बात राजकुमार को बताई।

“ यह अजीब बात है ,
“ गौरैया बोली। “ हालाँकि अभी मौसम काफ़ी ठंडा है पर मैं गर्माहट महसूस कर रही हूँ। “

“ यह इसलिए है क्योंकि तुमने एक नेक काम किया है। “

राजकुमार ने कहा। नन्ही गौरैया सोचने लगी , और फिर वह भी नींद के आग़ोश में चली गई। वह जब भी सोचना शुरू करती तो उसे नींद आ जाती।

अगली सुबह दिन चढ़ने के बाद गौरैया उड़ कर नदी पर पहुँची और उ सने नदी में स्नान किया।

“ आज रात मैं मिस्र के लिए निकल जाऊँगी ,
“ गौरैया चहचहाई। इस सम्भावना से वह उत्साह से भर गई थी। उसने उड़ कर शहर की सभी इमारतों को देखा और वह बहुत देर तक गिर जाघर के शिखर पर बैठी रही।

जब आकाश में चाँद निकल आया तो गौरैया सुखी राजकुमार के पास पहुँची।

“ क्या मिस्र में आपका कोई काम है ?
“ उसने चहक कर पूछा। “ मैं मिस्र के लिए निकलने ही वाली हूँ। “

“ ओ नन्ही गौरैया , क्या तुम एक और रात मेरे पास रुकोगी ? “

“ मिस्र में मेरे साथी और सहेलियाँ मेरी प्रतीक्षा रही हैं। “

“ ओ नन्ही गौरैया,
“ राजकुमार ने कहा। “ शहर में दूर एक छत पर बने एक कमरे में एक

युवक दिख रहा है। वह काग़ज़ों से भरी एक मेज पर झुका हुआ है। मे ज पर उसके बग़ल में रखे एक गिलास में बनफ़शा के फूल पड़े हैं। युव क के बाल भूरे और कड़े हैं और उसके होठ किसी अनार की तरह ला ल हैं। उसकी आँखें बड़ी और स्वप्निल हैं। वह नाट्यशाला के निदेश क के लिए एक नाटक लिख कर समाप्त करने का प्रयास कर रहा है। प र उसका कमरा बेहद ठंडा है जिसकी वजह से उससे और नहीं लिखा जा रहा है। कमरे में रखी अंगीठी में आग बुझ चुकी है और भूख से प स्त उस युवक पर बेहोशी छा रही है।

" मैं तुम्हारे पास एक रात और रुक जाती हूँ, " गोरैया

बोली। गोरैया अच्छे दिल वाली चिड़िया थी। उसने राजकुमार से पू छा कि क्या वह उस युवक के लिए एक और माणिक ले जाए?

" आह, अब मेरे पास कोई माणिक नहीं बचा है,
" राजकुमार ने कहा। मेरी आँखें ही मेरा सब कुछ हैं। वे दुर्लभ नीलम णि से बनी हैं जो एक हज़ार साल पहले भारत से लाई गई थीं। " राज कुमार ने गोरैया को आदेश दिया कि वह उसकी आँखों की जगह मौजू द नीलमणि में से एक को निकाल ले और उसे ले जा कर उस युवा नाट ककार को दे दे। वह उसे जौहरी को बेचकर अंगीठी के लिए कोयला और खाना ले आएगा। तब वह लिखा जा रहा अपना नाटक पूरा कर पाएगा।

" प्यारे राजकुमार," गोरैया बोली,
" मैं ऐसा नहीं कर सकती। " यह कहकर वह रोने लगी। " ओ नन्ही गोरैया, जैसा मैं आदेश दे रहा हूँ, वैसा करो। "

तब गोरैया ने राजकुमार की प्रतिमा की एक आँख की जगह मौजूद नी लमणि निकाल ली और उसे अपनी चोंच में दबा कर दूर स्थित उस यु वा नाटककार के कमरे की ओर उड़ चली। वह कमरे में आसानी से घु स गई क्योंकि उस कमरे की छत में एक सूराख था। इस सूराख में से हो कर गोरैया कमरे में प्रवेश कर गई। थके हुए युवक ने अपना सिर अपने हाथों से ढँका हुआ था। इसलिए वह गोरैया के पंखों की फड़फड़ाहट नहीं सुन सका। जब उसने अपने सिर से अपना हाथ हटाया तो उसे मुर झाए हुए फूलों पर एक सुंदर नीलमणि पड़ी हुई मिली।

" लगता है, लोग मेरे नाटकों की प्रशंसा करने लगे हैं। ज़रूर यह नील मणि मेरे किसी बहुत बड़े प्रशंसक ने दी होगी। अब मैं अपना नाटक लिख कर पूरा कर सकता हूँ। " यह कह कर वह बेहद प्रसन्न दिखने लगा।

अगले दिन गोरैया उड़ कर बंदरगाह पर पहुँची। वह एक बड़े जहाज़ के मस्तूल पर जा बैठी और उसने नाविकों को काम करते हुए देखा।

" मैं मिस्र जा रही हूँ,
" गोरैया चहककर बोली पर किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। ज ब चाँद आकाश में उग आया तब गोरैया दोबारा उड़ कर सुखी राजकु मार के पास पहुँची।

" मैं आप से विदा लेने के लिए आई हूँ। " गोरैया बोली।

" ओ नन्ही गोरैया,
" राजकुमार बोला। " क्या तुम एक और रात मेरे पास नहीं रुकोगी?
"

" अब सर्दी का मौसम आ चुका है। " गोरैया बोली। " जल्दी ही यहाँ बर्फ़ पड़ने लगेगी। मिस्र में खजूर के हरे पेड़ों पर धूप गर्म है और मगर मच्छ आराम से कीचड़ में पड़े हुए हैं। "

" नीचे चौक पर माचिस बेचने वाली एक छोटी-सी लड़की खड़ी है,
" सुखी राजकुमार ने कहा,
" उसके माचिस की सारी तीलियाँ नीचे नाली में गिर गई हैं और वे सब ख़राब हो गई

हैं। अगर वह कुछ रुपए-
पैसे लेकर घर नहीं गई तो उसके पिता उसे मारेंगे। इसलिए वह रो रही है। उसके पास जूते और जुराबें नहीं हैं।

इतनी ठंड में भी उसने सिर पर कोई टोपी नहीं पहनी हुई। मेरी दूसरी आँख की जगह लगी क़ीमती नीलमणि निकाल लो और जा कर उस छोटी लड़की को दे दो। तब उसका पिता उसे नहीं पीटेगा। "

" मैं तुम्हारे साथ एक और रात रुक जाऊँगी, " गोरैया ने कहा।
लेकिन मैं तुम्हारी दूसरी आँख नहीं निकाल सकती। ऐसा करने पर तुम पूरी तरह से अंधे हो जाओगे।

" ओ नन्ही गोरैया, " राजकुमार बोला। " जैसा मैं आदेश दे रहा हूँ, तुम वैसा ही करो।

इसलिए गोरैया ने नीलमणि से बनी राजकुमार की दूसरी आँख निकाल ली और तेज़ी से नीचे की ओर उड़ चली। उसने माचिस वाली लड़की के बग़ल से गोता लगाया और और उसकी हथेली में वह नीलमणि रख कर उड़ गई।

" यह कितनी सुंदर शीशे की चीज़ है, " छोटी लड़की ख़ुशी से किलक कर बोली और खिलखिलाते हुए अपने घर की ओर भाग गई।

फिर गोरैया राजकुमार के पास वापस लौट आई।

" अब तुम अंधे हो गए हो, " उसने कहा। " इसलिए मैं अब हमेशा तुम्हारे पास रहूँगी। "

" नहीं, नहीं गोरैया, " राजकुमार ने कहा, " तुम्हें अवश्य ही मिस्र चले जाना चाहिए। "

" नहीं , मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी , " गौरैया बोली और वह राजकुमार के पैरों के पास मौजूद जगह पर अपने पंख समेट कर सो गई।

अगले पूरे दिन गौरैया राजकुमार के कंधे पर बैठकर उसे उन अजीब जगहों की कहानियाँ सुनाती रही जहाँ वह गई थी।

" प्यारी नन्ही गौरैया , " राजकुमार ने कहा , " तुम मुझे अद्भुत चीज़ों के बारे में कहानियाँ सुना रही हो लेकिन लोगों के कष्ट, उनकी पीड़ा सबसे ज़्यादा अद्भुत होती है। कष्ट और दुर्गति से ज़्यादा रहस्यमयी चीज़ और कोई नहीं होती है। ओ नन्ही गौरैया , तुम मेरे शहर के ऊपर उड़ो और मुझे वे सारी चीज़ें बताओ जो तुम्हें यहाँ दिखती हैं। "

तब वह गौरैया उस बड़े शहर के ऊपर उड़ने लगी। उसने अमीर लोगों को अपने आलीशान मकानों में प्रसन्नता से रहते हुए देखा। दूसरी ओर बेचारे भिखारी मकानों के दरवाज़ों के बाहर बैठ कर भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों के ऊपर से गुज़री जहाँ फीके चेहरे वाले भुखमरी के शिकार बच्चे सूनी आँखों से काली, अँधेरी गलियों की ओर ताक रहे थे। पुल के मेहराब के नीचे ठंड से ठिठुरते छोटे गरीब बच्चे थोड़ी ऊष्मा के लिए एक-दूसरे से चिपक कर वहाँ शरण लिए हुए थे।

" हमें कितनी भूख लगी है , " वे बोले।

" तुम यहाँ नहीं लेट सकते , " चौकीदार उन पर चिल्लाया

और वे बारिश में भीगते हुए वहाँ से बाहर निकल गए।

तब गौरैया उड़ कर राजकुमार के पास लौटी और उसने राजकुमार को उन सभी दृश्यों के बारे में बताया जो उसने देखे थे।

" मेरी पूरी देह पर सोने की पत्तियाँ चढ़ी हुई हैं , " राजकुमार बोला। " तुम इन सबको मेरी देह पर से निकाल कर ले जाओ और गरीब लोगों में बाँट दो। जीवित लोग यही सोचते हैं कि सोना उन्हें ख़ुशी प्रदान करेगा। " तब नन्ही गौरैया ने एक-एक करके राजकुमार की देह पर लगी सोने की सारी पत्तियाँ निकाल लीं और शहर के गरीब लोगों में बाँट दीं। अब राजकुमार की मूर्ति सजावट-रहित और धूसर लगने लगी। गरीब बच्चों के चेहरे अब प्रसन्न लगने लगे। वे अब गलियों में हँसते और खेलते हुए नज़र आए। " अब हमारे पास खाना है , " वे सब ख़ुशी से बोल रहे थे।

फिर बर्फ़बारी का मौसम आ गया। वह मौसम अपने साथ भीषण ठंड और पाला लाया। बर्फ़ में गलियाँ ऐसी लगने लगीं जैसे वे चाँदी की बनी हुई हों। सभी लोगों ने रोएँदार खाल के बने हुए कपड़े पहने हुए थे और छोटी उम्र के लड़के लाल टोपियाँ पहन कर बर्फ़ पर ' स्केटिंग ' कर रहे थे। बेचारी नन्ही गौरैया बर्फ़बारी की वजह से भीतर तक ठंडी होती जा रही थी। पर उसने राजकुमार को छोड़ कर नहीं जाने का निश्चय कर लिया था। वह राजकुमार से प्यार करने लगी थी। जब नानबाई नहीं देख रहा होता तो वह उसकी दुकान के बाहर पड़े खाने के कुछ टुकड़े उठा कर ले आती। खुद को गर्म रखने के लिए वह लगातार अपने पंख फड़फड़ाती रहती।

पर अंत में गौरैया समझ गई कि वह भीषण ठंड की वजह से मरने वाली थी। अब उसके पास केवल इतनी ही शक्ति और ऊर्जा बची थी कि वह एक बार और उड़ कर राजकुमार की प्रतिमा के कंधे पर बैठ पाती। उसने यही किया।

" अलविदा , प्रिय राजकुमार , " वह बुदबुदाई। " क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने की इजाज़त दोगे ? "

" ओ नन्ही गौरैया , मैं खुश हूँ कि आख़िर तुम मिस्र जा रही हो , " राजकुमार ने कहा। " तुम यहाँ बहुत ज़्यादा समय तक रुक गई। पर अब तुम मेरे होंठों को चूम लो क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। "

" मैं मिस्र नहीं जा रही हूँ , " गौरैया ने कहा। " मैं मृत्यु के घर जा रही हूँ। मृत्यु नींद की बहन है , क्या ऐसा नहीं है ? "

फिर गौरैया ने सुखी राजकुमार के होंठों को चूम लिया और मरकर उसके पैरों के पास गिर गई।

उसी पल राजकुमार की प्रतिमा के भीतर किसी चीज़ के चटख कर टूटने की आवाज़ आई। दरअसल राजकुमार की प्रतिमा में लगा सीसे का दिल दो हिस्सों में टूट गया था। वाक़ई भयानक ठंड पड़ रही थी।

अगली सुबह शहर का महापौर अपने सभासदों के साथ चौराहे के इलाक़े में टहल रहा था। जब वह मूर्ति के पास से गुज़रा तो उसने ऊपर देखा।

" हे ईश्वर ! सुखी राजकुमार की प्रतिमा कितनी भद्दी और दरिद्र लग रही है ! " वह बोला।

" कितनी भद्दी और दरिद्र ! " सभासद सहमति में चिल्लाए। वे हमेशा महापौर की हर बात से सहमत होते थे। वे सब प्रतिमा को गौर से देखने के लिए उसके और क़रीब गए।

" राजकुमार की तलवार की मूठ में लगा माणिक गिर कर कहीं खो गया है। किसी ने उसकी आँखें निकाल ली हैं और उसकी देह पर लगी सोने की पत्तियाँ भी अब वहाँ नहीं हैं। " महापौर ने

कहा। " दरअसल यह तो किसी भिखारी की मूर्ति जैसी लग रही

है।"

" यह तो वाक़ई किसी भिखारी की मूर्ति जैसी लग रही

है। " सभी सभासद एक स्वर में चिल्लाए।

" और इस प्रतिमा के पैरों के पास यहाँ एक मरी हुई चिड़िया पड़ी हुई है । " महापौर ने कहना जारी रखा ।

" हमें एक घोषणा करनी चाहिए कि यहाँ चिड़ियों को मरने की इजाज़त नहीं है , " शहर के मुंशी ने फटाफट इस सुझाव को काग़ज़ पर लिख लिया।

इसलिए उन्होंने सुखी राजकुमार की प्रतिमा को तोड़ कर गिरा दिया । " क्योंकि यह प्रतिमा अब सुंदर नहीं रही , इसलिए यह किसी काम की नहीं रही , " विश्वविद्यालय में कला संकाय के प्राध्यापक ने कहा ।

फिर उन्होंने उस प्रतिमा को भट्ठी में पिघलाया ।

" कितनी अजीब बात है , " उस ढलई-घर में मौजूद कामगारों के निरीक्षक ने कहा , " सीसे का यह टूटा हुआ दिल इस भट्ठी में नहीं पिघल रहा । हमें इसे फेंक देना चाहिए । " इसलिए उसने उस राजकुमार के सीसे के टूटे हुए दिल को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया जहाँ मरी हुई चिड़िया भी पड़ी हुई थी ।

" इस शहर की सबसे क़ीमती दो चीज़ें ला कर मुझे दो , " ईश्वर ने अपने एक देवदूत से कहा । देवदूत ने मरी हुई चिड़िया और राजकुमार का सीसे का टूटा हुआ दिल ला कर ईश्वर को दे दिया ।

" तुमने सही चीज़ें चुनी हैं ," ईश्वर ने देवदूत से कहा , " स्वर्ग के बगीचे में यह नन्ही चिड़िया सदा गीत गाती रहेगी और मेरी स्वर्ण-नगरी में सुखी राजकुमार सदा मेरी प्रशंसा करेगा । "

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

हनुमान जन्मोत्सव पर सुंदरकांड

हिंदू पंचांग के अनुसार, हनुमान जन्मोत्सव हर वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाई जाती है। इस वर्ष यह तिथि 23 अप्रैल को मनाई जाएगी। इस बार हनुमान जन्मोत्सव मंगलवार को पड़ने से यह और भी खास हो जाता है क्योंकि माना जाता कि हनुमान जी का अवतार दिवस मंगलवार ही था। इसीलिए मंगलवार को हनुमान जी का दिन माना जाता है। इस तिथि के अलावा कई जगहों पर यह पर्व कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को भी मनाई जाती है। मान्यतानुसार, हनुमानजी को भगवान शिव का अंशावतार माना जाता है। जिस प्रकार राम जी को भगवान विष्णु का अंशावतार माना जाता है। राम जी का अवतरण चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को और हनुमान जी का अवतरण एक सप्ताह बाद चैत्र शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को पिता केसरी व माता अंजनी के घर हुआ था। शास्त्रों के अनुसार, आज भी पृथ्वी पर हनुमान जी वास करते हैं। यह कहा जाता है कि हनुमान जी को चिरंजीवी का आशीर्वाद प्राप्त है। इसी कारण उनके अवतरण दिवस को हनुमान जयंती न कहकर हनुमान जन्मोत्सव कहा जाता है।

हनुमान जन्मोत्सव पर लोग सुख-समृद्धि की प्राप्ति के लिए पूजा-अर्चना के साथ ही हनुमान चालीसा व रामायण के सुंदरकांड का पाठ करते है। माना जाता हैं कि सुंदरकाण्ड के पाठ से हनुमानजी प्रशन्न होते हैं। सुंदरकाण्ड के पाठ से बजरंगबली की कृपा बहुत ही जल्द प्राप्त हो जाती है।

वास्तव में श्रीरामचरितमानस के सुंदरकाण्ड की कथा सबसे अलग है। हनुमानजी, सीताजी की खोज में लंका गए थे और लंका त्रिकुटांचल पर्वत पर बसी हुई थी। त्रिकुटांचल पर्वत यानी यहां 3 पर्वत थे। पहला सुबैल पर्वत, जहां के मैदान में युद्ध हुआ था।

दुसरा नील पर्वत, जहां राक्षसों के महल बसे हुए थे। तीसरे पर्वत का नाम है सुंदर पर्वत, जहां अशोक वाटिका निर्मित थी। इसी वाटिका में हनुमानजी और सीताजी की भेंट हुई थी। इस काण्ड की सबसे प्रमुख घटना यहीं हुई थी, इसलिए इसका नाम सुंदरकाण्ड रखा गया। संपूर्ण श्रीरामचरितमानस भगवान श्रीराम के गुणों और उनके पुरूषार्थ को दर्शाती है, सुंदरकाण्ड एक मात्र ऐसा अध्याय है जो श्रीराम के भक्त हनुमान की विजय का काण्ड है।

मनोवैज्ञानिक नजरिए से देखा जाए तो यह आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति बढ़ाने वाला काण्ड है, सुंदरकाण्ड के पाठ से व्यक्ति को मानसिक शक्ति प्राप्त होती है, किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए आत्मविश्वास मिलता है। राम चरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार हर तरह की समस्या से निजात पाने के लिए सुंदरकांड के पाठ से बेहतर कोई उपाय नहीं है। शास्त्रों के अनुसार जीवन में आने वाला हर बड़े से बड़ा संकट हनुमान जन्मोत्सव पर सुंदरकांड का पाठ करने से टाला जा सकता है। कहा जाता है इस शक्तिशाली पाठ के आगे हर संकट अपने घुटने टेक देता है।

सोनल मंजू श्री ओमर, 202 बी विंग, श्रीजी अपार्टमेंट, शांति नगर, रामापीर चौकड़ी, राजकोट, गुजरात - 360007 8780039826

सौभाग्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

जब वृक्षों की रक्षा के लिए दे दी कुर्बानी

विश्व पर्यावरण दिवस, पर विशेष

मनुष्य और पर्यावरण का संबंध काफी पुरानी और गहरा है। पर्यावरण के बिना जीवन ही संभव नहीं है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित पंच तत्व क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। ये तत्व आवश्यकतानुसार समस्त जीव के उपयोग-उपभोग में अपनी भूमिका निभाते हैं। मानव अपनी आकांक्षाओं के लिए इन तत्वों पर निर्भर हैं। इनका एक निश्चित तारतम्य जीवन को नए प्रतिमान देता है, पर जब किन्हीं कारणों से इनका संतुलन बिगड़ता है तो पर्यावरण-संतुलन भी बिगड़ता है, जो अंततः न सिर्फ मानव बल्कि सभ्यताओं को प्रभावित करता है। ऐसे में जरूरत है कि इनका दोहन नहीं बल्कि सतत् विकास द्वारा सवंदेनशील उपयोग किया जाए। यही कारण है कि सनातन धर्म में जीव और पर्यावरण में अन्योन्याश्रित संबंध माना गया है। हमारे देवी-देवता भी पर्यावरण के बिना अधूरे हैं। धर्म और अध्यात्म जैव विविधता को संरक्षण देते हैं। पौराणिक ग्रंथों से लेकर महाकाव्यों तक में प्रकृति और पर्यावरण की महिमा गाई गई है। सनातन धर्म में पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, प्रकृति की विभिन्न लीलाओं को इस रूप में प्रदर्शित किया गया है, ताकि उनके साथ सखा भाव उत्पन्न हो।

कृष्ण कुमार यादव

सनातन धर्म में जीव और पर्यावरण में अन्योन्याश्रित संबंध माना गया है। इन सबके बीच पर्यावरण के रक्षार्थ राजस्थान में जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में सन् 1730 में खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा के लिए विश्नोई जाति के के बलिदान की गाथा रोमांचक और प्रेरणास्पद है। अमृता देवी विश्नोई के नेतृत्व में 363 लोगों द्वारा वृक्षों के रक्षार्थ किया गया जीवन बलिदान अपनी पृथ्वी, वृक्ष और पर्यावरण के प्रति अनुकरणीय राह दिखाता है। राजस्थान में एक कहावत प्रचलित है- 'सर साठे रुंख रहे तो भी सस्तो जाण', यानी सिर कटवा कर भी वृक्षों की रक्षा हो सके, तो इसे फायदे का सौदा ही समझिए।

खेजड़ी या शमी एक वृक्ष है जो थार के मरुस्थल एवं अन्य स्थानों में पाया जाता है। यह यहाँ के लोगों के लिए जीवन रेखा का कार्य करता है। यह वृक्ष कुछ अन्य देशों में भी पाया जाता है जहाँ इसके अलग-अलग नाम हैं। इसे घफ़ (संयुक्त अरब अमीरात), खेजड़ी, जांट/जांटी, सांगरी (राजस्थान), जंड (पंजाबी), कांडी (सिंध), वण्णि (तमिल), शमी, सुमरी (गुजराती) इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। इसका व्यापारिक नाम कांडी है। खेजड़ी का वृक्ष जेठ के महीने में भी हरा रहता है। ऐसी गर्मी में जब रेगिस्तान में जानवरों के लिए धूप से बचने का कोई सहारा नहीं होता तब यह पेड़ छाया देता है। जब खाने को कुछ नहीं होता है तब यह चारा देता है, जो लूंग कहलाता है। इसका फूल मींझर कहलाता है। इसका फल सांगरी कहलाता है, जिसकी सब्जी बनाई जाती है। यह फल सूखने पर खोखा कहलाता है जो सूखा मेवा है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है जो किसान के लिए जलाने और फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसकी जड़ से हल बनता है। अकाल के समय रेगिस्तान के आदमी और जानवरों का यही एक मात्र सहारा है। सन 1899 में दुर्भिक्ष अकाल पड़ा था जिसको छपनिया अकाल कहते हैं, उस समय रेगिस्तान के लोग इस पेड़ के तनों के छिलके खाकर जिन्दा रहे थे। इस पेड़ के नीचे अनाज की पैदावार ज्यादा होती है।

खेजड़ली के बलिदान की गाथा आज भी राजस्थान में शान से सुनाई जाती है। सन् 1730 में जोधपुर के राजा अभयसिंह ने महल बनवाने का निश्चय किया। नया महल बनाने के कार्य में सबसे पहले चूने का भट्टा जलाने के लिए ईंधन की आवश्यकता बतायी गयी। राजा ने मंत्री गिरधारी दास भण्डारी को लकड़ियों की व्यवस्था करने का आदेश दिया। मंत्री गिरधारी दास भण्डारी की नजर महल से करीब 25 किलोमीटर दूर स्थित गांव खेजडली पर पड़ी। मंत्री गिरधारी दास भण्डारी व दरबारियों ने मिलकर राजा को सलाह दी कि पड़ोस के गांव खेजड़ली में खेजड़ी के बहुत पेड़ है, वहां से लकड़ी मंगवाने पर चूना पकाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। इस पर राजा ने तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी। खेजड़ली गांव में अधिकांश बिश्नोई लोग रहते थे। बिश्नोईयों में पर्यावरण के प्रति प्रेम और वन्य जीव संरक्षण जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा है। खेजड़ली गांव में प्रकृति के प्रति समर्पित इसी बिश्नोई समाज की 42 वर्षीय महिला अमृता देवी के परिवार में उनकी तीन पुत्रियां आसु, रतनी, भागु बाई और पति रामू खोड़ थे, जो कृषि और पशुपालन से अपना जीवन-यापन करते थे।

खेजड़ली में राजा के कर्मचारी सबसे पहले अमृता देवी के घर के पास में लगे खेजड़ी के पेड़ को काटने आये तो अमृता देवी ने उन्हें रोका और कहा कि "यह खेजड़ी का पेड़ हमारे घर का सदस्य है यह मेरा भाई है इसे मैंने राखी बांधी है, इसे मैं नहीं काटने दूंगी।" इस पर राजा के कर्मचारियों ने प्रति प्रश्न किया कि "इस पेड़ से तुम्हारा धर्म का रिश्ता है, तो इसकी रक्षा के लिये तुम लोगों की क्या तैयारी है?" इस पर अमृता देवी और गांव के लोगों ने अपना संकल्प घोषित किया

"सिर साटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण" अर्थात् हमारा सिर देने के बदले यह पेड़ जिंदा रहता है तो हम इसके लिये तैयार हैं। उस दिन तो पेड़ कटाई का काम स्थगित कर राजा के कर्मचारी चले गये, लेकिन इस घटना की खबर खेजड़ली और आसपास के गांवों में शीघ्रता से फैल गयी।

कुछ दिन बाद मंगलवार 21 सितम्बर 1730 ई. (भाद्रपद शुक्ल दशमी, विक्रम संवत 1787) को मंत्री गिरधारी दास भण्डारी लावलश्कर के साथ पूरी तैयारी से सूर्योदय होने से पहले आये, जब पूरा गाँव सो रहा था। गिरधारी दास भण्डारी के साथ आए लोगों ने सबसे पहले अमृता देवी के घर के पास लगे खेजड़ी के हरे पेड़ों की कटाई करना शुरु किया तो, आवाजें सुनकर अमृता देवी अपनी तीनों पुत्रियों के साथ घर से बाहर निकली। उसने ये कृत्य विश्नोई धर्म में वर्जित (प्रतिबंधित) होने के कारण उनका विरोध किया उद्घोष किया "सिर साटे रुख रहे तो भी सस्तो जाण" और अमृता देवी गुरू जांभोजी महाराज की जय बोलते हुए सबसे पहले पेड़ से लिपट गयी। क्षण भर में उनकी गर्दन काटकर सिर धड़ से अलग कर दिया। फिर तीनों पुत्रियों पेड़ से लिपटी तो उनकी भी गर्दनें काटकर सिर धड़ से अलग कर दिये। इस बात का पता चलते ही खेजड़ली गांव के लोगों ने अपनी जान की कीमत पर भी वृक्षों की रक्षा करने का निश्चय किया। चौरासी गांवों को इस फैसले की सूचना दे दी गई। सैकड़ों की तादाद में लोग खेजड़ली गांव में इकट्ठे हो गए और पेड़ों को काटने से रोकने के लिए उनसे चिपक गए। उन्होनें एक मत से तय कर लिया कि एक पेड़ के एक विश्नोई लिपटकर अपने प्राणों की आहुति देगा। सबसे पहले बुजुर्गों ने प्राणों की आहुति दी। तब मंत्री गिरधारी दास भण्डारी ने बिश्नोईयों को ताना मारा कि ये अवांच्छित बूढ़े लोगों की बलि दे रहे हो। उसके बाद तो ऐसा जलजला उठा कि बड़े, बूढ़े, जवान, बच्चे स्त्री-पुरुष सबमें प्राणों की बलि देने की होड़ मच गयी। बिश्नोई जन पेड़ो से लिपटते गये और प्राणों की आहुति देते गये। एक व्यक्ति के कटने पर तुरंत दूसरा व्यक्ति उसी पेड़ से चिपक जाता। इसमें कुल 363 बिश्नोईयों (71 महिलायें और 292 पुरूष) ने पेड़ की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी। खेजड़ली की धरती बिश्नोईयों के बलिदानी रक्त से लाल हो गयी। जब इस घटना की सूचना जोधपुर के महाराजा को मिली तब जाकर उन्होंने पेड़ों की कटाई रुकवाई और भविष्य में वहां पेड़ न काटने के आदेश दिए। उन्होंने बिश्नोईयों को ताम्रपत्र से सम्मानित करते हुए जोधपुर राज्य में पेड़ कटाई को प्रतिबंधित घोषित किया और इसके लिये दण्ड का प्रावधान किया।

इस बलिदान में अमृतादेवी और उनकी दो पुत्रियां हरावल में रहीं। पुरुषों में सर्वप्रथम अणदोजी ने बलिदान दिया था और बाद में विरतो बणियाल, चावोजी, ऊदोजी, कान्होजी, किसनोजी, दयाराम आदि पुरुषों और दामी, चामी आदि स्त्रियों ने अपने प्राण दिए। मंगलवार 21 सितम्बर 1730 (भाद्रपद शुक्ल दशमी, विक्रम संवत 1787) का वह ऐतिहासिक दिन इतिहास में सदैव के लिए प्रेरणा बनकर अमर हो गया। खेजड़ली के इन वीरों की स्मृति में यहां हर वर्ष भादवा सुदी दशमी को मेला लगता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग इकट्ठे होते हैं।

खेजड़ी को लोक साहित्य में भी खूब स्थान मिला है। राजस्थानी भाषा में कन्हैयालाल सेठिया की कविता 'मींझर' बहुत प्रसिद्ध है। यह थार के रेगिस्तान में पाए जाने वाले वृक्ष खेजड़ी के सम्बन्ध में है। इस कविता में खेजड़ी की उपयोगिता और महत्व का सुन्दर चित्रण किया गया है। आज भी राजस्थान में दशहरे के दिन शास्त्रों के साथ-साथ शमी के वृक्ष की पूजा करने की परंपरा जीवंत है। लंका विजय से पूर्व भगवान श्रीराम द्वारा शमी के वृक्ष की पूजा का उल्लेख मिलता है। यही कारण है कि आज भी रावण दहन के बाद घर

लौटते समय शमी के पत्ते लूट कर लाने की प्रथा है जो स्वर्ण का प्रतीक मानी जाती है। इसके अनेक औषधीय गुण भी है। इसका दृष्टान्त महाभारत काल में भी मिलता है और पांडवों द्वारा अज्ञातवास के अंतिम वर्ष में गांडीव धनुष इसी पेड़ में छुपाए जाने के उल्लेख मिलते हैं। शमी या खेजड़ी के वृक्ष की लकड़ी यज्ञ की समिधा के लिए पवित्र मानी जाती है। वसन्त ऋतु में समिधा के लिए शमी की लकड़ी का प्रावधान किया गया है। इसी प्रकार वारों में शनिवार को शमी की समिधा का विशेष महत्त्व है।

राजस्थान के रेगिस्तान में खेजड़ी की बहुतायत है। इसकी महत्ता के कारण ही 1983 में इसे राजस्थान राज्य का राज्य-वृक्ष भी घोषित किया गया। वस्तुत: यह सिर्फ एक वृक्ष ही नहीं है, बल्कि इसके पीछे बलिदान और आत्मोत्सर्ग का भाव भी छुपा हुआ है। आज पूरे विश्व में जिस तरह से पर्यावरण को लेकर चिंता जताई जा रही है, ऐसे में खेजड़ली गाँव में खेजड़ी वृक्ष को लेकर जिस तरह से सन 1730 में स्थानीय लोगों ने आंदोलन किया और हुकूमत को भी झुकने को मजबूर कर दिया, वह आने वाली अनेक शताब्दियों तक पूरी दुनिया में प्रकृति प्रेमियों में नयी प्रेरणा और उत्साह का संचार करता रहेगा।

आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के परिप्रेक्ष्य में मानव और पर्यावरण के मध्य संबंधों में महती परिवर्तन हुआ है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास ने मानव को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप पर्यावरण को आकार देने के उद्देश्य से अप्रत्याशित अवसरों को जन्म दिया है। यदि इन अवसरों को नियंत्रित ढंग से उपयोग नहीं किया गया तो अनेक गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न होंगी। सनातन संस्कृति में इन सबसे बचाव हेतु पहले से ही प्रकृति और पर्यावरण के प्रति प्रेम भाव को सन्निहित किया गया है। मानव को यह नहीं भूलना चाहिए कि हम कितना भी विकास कर लें, पर पर्यावरण की सुरक्षा को नजरअंदाज कर किया गया कोई भी कार्य समूची मानवता को खतरे में डाल सकता है। अगर दुनिया भर में प्राकृतिक संसाधनों का सोच-समझकर और सम्भलकर उपयोग नहीं किया गया, तो धरती लोगों की जरूरतों को पूरा नहीं कर पाएगी। देश, धर्म और जाति की दीवारों से परे यह ऐसा मुद्दा है जिस पर पूरी दुनिया के लोगों को एक साथ खड़ा होना होगा। पर्यावरण संरक्षण सिर्फ भाषणों, फिल्मों, किताबों और लेखों से ही नहीं हो सकता, बल्कि हर मनुष्य को धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी, तभी कुछ सकारात्मक प्रभाव नजर आ सकेगा। खेजड़ली के बलिदान की गाथा भी यही बताती है कि अभी से प्रकृति व पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत हुआ जाए और इसे समृद्ध करने की दिशा में तत्पर हुआ जाय।

कृष्ण कुमार यादव, पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002 मो0- 09413666599

हसीन क्षण

जब भी देखोगी आईने में अपना तन
बहुत याद आएँगे, भेंट के हसीन क्षण।
भिगो-भिगो जाएगी पुरवाई पवन
एक टीस उभर आएगी तुम्हारे आनन ।।

सँभाले न सँभलेंगे तुम्हारे चरण
भटकेगा, कहीं चौकड़ी भरेगा मन ।
अधरों पर देगी दस्तक नीरव वन
दाँतों के नीचे दबकर करेगी समर्पण।।

विकल हो जाएँगे कनकाचल चितवन
नेत्रनीर विहर, प्रसर, धाराधर नयन ।।
जब भी देखोगी आईने में अपना तन
बहुत याद आएँगे,भेंट के हसीन क्षण।।

डॉ.वीरेंद्र प्रसाद
राजवंशी नगर, पटना बिहार 8000023

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

डॉ० रामशंकर भारती (चार पर्यावरण कविताएँ)

1- मगर नदी प्यासी थी

घाटों पर बहुत भीड़ थी
नदी एकदम अकेली उदास
गुमसुम लुटी हुई-सी
अपनी म्लान धाराओं के संग
बोझिल मन से
बहाए ले जा रही थी
आस्थाओं से खिलवाड़ करते
कर्मकाण्ड
लोग जीभरभरकर
तृप्त हो रहे थे
मगर
नदी
एक-एक बूँद के लिए
प्यासी थी।

2-हर रोग की दवाई है नदी

छुटपन में बाबा
हम बच्चों को
बताया करते थे
गाँव की माई है नदी
पालती-पोषती है सबको नदी
जाड़ा हो या गर्मी
धूप हो या बरसात
हर मौसम में नदी के दूर तक फैले पाटों पर
हँसती रहती है हरियाली
हरजू की भेड़-बकरियाँ,
उस्मान का ऊँट,
बब्बन का टट्टू,
मटरू का खच्चर
पुजारी की गाय
जमींदार के चौपाए
नदी के कछार में
छितराई
हरी घास चरते है साथ-साथ
होकर बेखौफ
सभी एक साथ एक ही घाट पर
गटर-गटर पीते हैं नदी का पानी
नदी के धुबनारे घाट पर
गाँव की हर घरों कीं गोरियाँ-छोरियाँ हँस हँसकर
फींचती हैं उन्ना-लत्ता-कपड़े
मल मलकर नहातीं हैं
बरसात में आती है जब बाढ़
गा-बजाकर पूजी जाती है नदी
मल्लू मल्लाह खेता है नाव
मुल्ला-पंडित- छूत-अछूत
सब सटकर बैठते हैं नाव में
एकता का संतुलन बनाकर
नदी, जातपाँत नहीं पूँछती
नाव, धर्म, मजहब में भेद नहीं करती
इसीलिए हो जाते हैं सभी नदी के पार
नदी पानी बाँटती है खेतों को
तभी भरते है फसलों के भण्डार
बाबा कहते थे -
नदी माँ है- समृद्धि का द्वार है
प्रकृति का उपकार है नदी
गंगा का उपहार है नदी
जीवन का आधार है नदी
नदी को नदी रहने दें
उसे अपनी गति में बहने दें
गाँव की माई है नदी
हर रोग की दवाई है नदी

3- नदी का रेत हो जाना

मन के भीतर भी बहती है
एक नदी
प्यार की पावन अलकनंदा
अविरल मंथर-मंथर
मदिर-मदिर
गाती-गुनगुनाती-हँसती-मुसकराती
जैसे धरती पर बहती है सदानीरा गंगा
बंजर-ऊसर को भिगोती
अविराम-अभिराम बनाती
मोतियों-माणिकों वाली नदी
जीवनदायिनी नदी
अपने मुक्त हाथों सें देने को आतुर
अनंत समृद्धियों के असंख्य उपहार
"मुझे सूखने न दें-पथराने न दें"
कहती है प्यार से, दुलार से
अक्सर हमसे
चुपचाप नदी
और कभी-कभी गर्जना करते हुए भी
हमें चेतावनी देती है
मगर हम सुनते ही कहाँ हैं

नदी के मन की बातें
उसके मशविरे
कभी दंभ में-कभी ऐंठ में
कभी सनक में-कभी हनक में
अनुसुना कर देते हैं हम
नदी के सृजनधर्मी संवादी स्वरों को
कर्कशताओं के कोरस
लोकेष्णाओं के लिबलिबे नृत्योन्माद
हमें अपनी अजगरी पकड़ में फाँसे रहते हैं
अपनी उपेक्षाओं के दंश सहते-सहते
एक दिन
पथरा जाती है मन के भीतर बहनेवाली
सुकोमल नदी
फिर रेत होते-होते
एक दिन सहरा और रेगिस्तान बन जाती है
मन की नदी
नदी धरती की हो या मन के भीतर की
उसका रेत हो जाना अभिशाप है
एक भयावह त्रासदी है
अगर बचना है इन त्रासदियों से .
तो सुनिए रहिए
अंतःसलिला के
आह्लादिक प्रेम गीत।

4- जीवन का प्रेमगीत

नदी ने गुनगुनाते हुए कहा
मेरी अविरल धार में एक लय है
जो तुम्हें प्रलय से बचाती है
एक समृद्धशालिनी गति है
जो तुम्हें दुर्गति से बचाती है
मुंडेरों पर किल्लोल करते
पंछियों ने हँसते-फुदकते हुए कहा
मेरे कलरव में असीम शांति है
जो तुम्हें विप्लव से बचाती है
कानों में फुसफुसाते हुए
सुवासित अलमस्त हवा ने कहा
मेरी मकरंदी छुअन में
आनंदगंधी जीवन है
जो तुम्हें मरण से बचाता है
गुदगुदाते हुए
हरे-भरे सजे-सँवरे खेतों ने
अँगड़ाइयाँ लेते हुए कहा
मेरा संसार प्रेमिलताओं का असीम सिंधु है
जो तुम्हें कुटिलताओं से मुक्ति देता है
आँखों में आँखें डालकर
अपनत्व भरे आकाश ने
गंभीर होते हुए कहा ...
सद्भावनाओं का विराट विस्तार हूँ में
इसलिए अब तक असीम हूँ/अनंत हूँ
चुका नहीं हूँ/ झुका नहीं हूँ
कभी सूरज जलाता है मुझे
तो कभी बरसात भिंगोती है मुझे
और कभी जाड़ा जीभर कपाता है
मैं सब कुछ सहता रहता हूँ स्थिर होकर
तुम चाहो तो मेरी सहनशीलता ले जाओ
बहुत काम आएगी तुम्हारे
रसगंधी धरती ने लरजते हुए धैर्य से कहा
जीवन का प्रेमगीत है मेरी भाषा
इसीसे लिखे जाते हैं सौंदर्यबोधी महाकाव्य
यही भाषा सिरजती है
सृजन के महाख्यानों को
सच में मेरी भाषा और कुछ नहीं
सिर्फ और सिर्फ मनुजता सिखाती है
आदमी को मानव बनाती है
आओ मेरी भाषा ध्यान से सुनो .....
यही तुम्हारी अंतःअनुभूतियों को वाणी देगी
अब आग की बारी थी
आग ने धधकते हुए कहा
मैं साधनाओं का हवनकुंड हूँ
दुष्प्रवृत्तियों को जलाना ही मेरा धर्म है
मैं तुम्हारी मलिनताओं को जलाकर
तुम्हें निर्मल कर दूँगी....
जलना चाहोगे मेरे दहकते अँगारों में?
मगर
मैंने सबको अनसुना कर दिया
न पवन की सुनी न गगन की गुनी
न अगन की सुनी न धरती की न पानी की
उत्तरआधुनिक युग का सयाना आदमी जो ठहरा मैं
इन पंचमहाभूतों के झाँसे में कहाँ आने वाला था
सभी को धता बताते हुए मैंने कहा
मैं "कल-युग" में यांत्रिक जीवन जीता हूँ
आकाश में जब सूरज तीन बाँस ऊपर चढ़ जाता है
तब एलार्म की गुटुरगूँ से जागने का आदी हूँ मैं
आज के भौतिकवाद के सिद्धांतों पर
मेरा विशेष शोध है-गहन अध्ययन है
जीवनमूल्यों की घुट्टी पीने से पेट नहीं भरता
हाँ,जब जरूरत पड़ेगी
खरीद लाऊँगा इन्हें
अब बाजार में हर चीज बिकाऊ है।

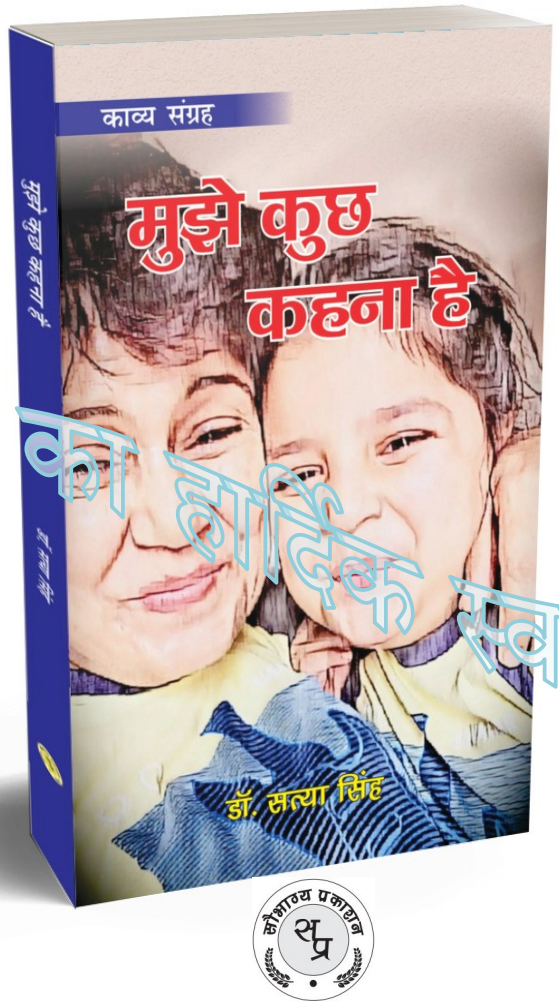

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

अंधेरों से आगे

अंधेरों से आगे (लघुकथा-संग्रह) / विष्णु सक्सेना
मार्च 03, 2024
अंधेरों से आगे (लघुकथा-संग्रह)
विष्णु सक्सेना
ISBN: 978-93-95846-69-1
मूल्य ₹ : 125.00 रुपये
© विष्णु सक्सेना
आवरण : विनय माथुर

भूमिका

सकारात्मक और दिशावाही सोच से लबरेज लघुकथाएँ : बलराम अग्रवाल

विष्णु सक्सेना जी कितने वरिष्ठ साहित्यकार हैं इस बात का अनुमान इसी तथ्य से लग जाता है कि उनकी काव्य कृति 'बैजनी हवाओं में' भाषा विभाग, हरियाणा द्वारा 1972 में पुरुस्कृत की जा चुकी थी और उनकी लघुकथाएँ 1974 में प्रकाशित 'गुफाओं से मैदान की ओर' में संकलित थीं। यह भी उल्लेखनीय है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में उनकी कृतियों पर तीन 'एम फिल' संपन्न हो चुकी हैं। लघु कथा संग्रह 'एक कतरा सच' के बाद उनकी लघु कथाओं का यह दूसरा संग्रह है।

विष्णु सक्सेना जी की लघुकथाएँ जीवन के सकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत करती हैं। इसीलिए वे शिक्षाप्रद भी हैं और बोधपरक भी। सकारात्मक पक्ष को प्रमुखता देने के कारण ही उनकी लघुकथाओं में मानवेतर पात्रों को भी समुचित स्थान मिलता है।

मंच सांझा करने की इच्छुक कवयित्री को किन-किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है और कितना साहसिक कदम उठाना पड़ता है, उसकी एक झलक 'सम्मोहन किसके प्रति' में देखने को मिलती है। 'जीवन का महत्व' के केंद्र में 'लिव एन' और 'लव जिहाद' दोनों हैं। 'सामर्थ्य की अनुभूति' में विष्णु सक्सेना जी ने समूचे जीवन को ढालने का यत्न किया है। यह वस्तुतः सास बहु के संबंधों की ऐसी कथा बन गई है जिसका आधार अनबन ही है। 'जीवन एक संघर्ष' नई पीढ़ी की बहु के बर्ताव से आहत सास को प्रस्तुत करती है, तो 'नई पीढ़ी नई सोच' नई

पीढ़ी की बेटी के बर्ताव से स्तंभित माँ को।

लघुकथा 'चबूतरा' राजनैतिक संरक्षण पाकर दुर्घर्ष हो उठे ठेकेदार आदि और एक ईमानदार अधिकारी के परस्पर संघर्ष का अत्यंत रोचक चित्र उपस्थित करती है। परिणाम जो भी रहा हो, लघुकथा में मूल्य स्थापना करते चरित्र का आना ही लेखन की सार्थकता को रेखांकित करता है। विष्णु सक्सेना जी इस सकारात्मकता के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

'कभी कभी किसी की इज्जत बचाने के लिए, किसी का नुकसान किये बगैर की गई थोड़ी सी बेईमानी भी ईमानदारी कहलाती है।' यह कहना है लघुकथा 'उपकार' का और यही हमारा शास्त्र भी कहता है। लघुकथा 'जमीर' को साहसिक कथा कहा जाए तो गलत न होगा। उसी तरह 'अंधेरों से आगे' को नैतिक बल जागृत करने वाली कथा कहा जा सकता है।

'माया का खेल' में विष्णु सक्सेना जी वर्तमान में निजी अस्पतालों के आसुरी चरित्र का पर्दाफाश करते हैं। 'खूंटा' और 'कागजी रिश्ते' जैसी लघुकथाएँ पारिवारिक रिश्तों में आई जड़ता के वावजूद भारतीय त्योहारों की प्रासंगिकता को रेखांकित करती हैं।

विष्णु सक्सेना जी को लघुकथाओं के शिल्प की ओर, मुझे लगता है कि ध्यान देने की आवश्यकता है। कथ्य प्रस्तुति की दिशा में लघु कथा काव्य ही है। किसी भी तरह की असावधानी कथा रसोद्रेक में कमी लाती है।

श्रम साध्यता की दृष्टि से उनकी अनेक लघुकथाओं में बोध और दृष्टान्त शैली तथा विक्रम- बेताल शैली के भी दर्शन होते हैं, तो अनेक में मानवेतर पात्रों के माध्यम से भी उन्होंने अपनी बात कही है। मानवेतर पात्रों की लघुकथाओं में 'आईना, 'मोहभंग' आदि का उल्लेख किया जा सकता है। उनके इस दूसरे संग्रह के प्रकाशन पर मेरी ओर से बधाई और मंगल कामनाएँ।

-मो. 8826499115

रोशनी का मार्ग है सकारात्मक सोच

जीवन परिवर्तन का पर्याय है, या कहा जाए कि जहाँ परिवर्तन है, वहीं जीवन है। जीवन सुख दुःख की गहमागहमी है। इसमें अन्धेरें भी हैं रोशनी भी। अँधेरे जहाँ मन में अवसाद उत्पन्न करते हैं, वहीं व्यक्ति की सकारात्मक सोच उसे रोशनी की राह भी दिखाती है- मेरी लघु कथाएँ यही कहने का प्रयास करती हैं।

समाज की व्यवस्था कुछ नियमों पर चलती है। यह नियम कुछ मर्यादाहीन लोगों को रास नहीं आते। वह अपने आचरण को ही नियम समझने लगते हैं। यहीं एक संवेदनशील लेखक की कलम उठती है और एक सशक्त लघुकथा का सृजन होता है। जो समाज में एक सकारात्मक सन्देश देती है।

साहित्य जब वर्तमान से सम्बद्ध होता है तब वह समाज का प्रतिबिम्ब बन पाता है और तभी वह जन मानस के लिए उपयोगी व प्रेरक हो सकता है। आज के सामाजिक वातावरण में पनपती अनेक समस्याओं पर मैंने लघु कथाएँ लिखने का प्रयास किया है। अपने पहले लघु कथा संग्रह 'एक कतरा सच' में, जब मैं - एच.एम.टी में एक प्रबंधक के तौर पर था एवं सेवा निवृति के बाद एक पत्रकार के रूप में लम्बे कार्यकाल के अपने आस पास फैले परिवेश को रेखांकित करती लघु कथाएँ सम्मिलित की थीं। 'अंधेरों से आगे .....' लघु कथा संग्रह में कुछ अलग हटकर ज्यादातर ऐसी लघुकथाएँ हैं, जो संवाद शैली, नाटक शैली, तोता मैना शैली, वैताल पचीसी शैली व डायरी शैली में लिखी गई हैं। इनमें मानवीय संवेदना, मानवीय गुणों, परिवारिक परिवेश व सामाजिक परिवेश पर लघु कथाओं द्वारा एक सकारात्मक सोच प्रदान करने की कोशिश की है।

एच.एम.टी पिंजौर में प्रबंधक के पद पर कार्य करते हुए वर्ष 1995 में एच एम.टी. प्रबंधन के आग्रह पर मैंने चौपाल कथाओं की शैली में कुछ लघु कथाएँ लिखी थी, जिनके माध्यम से प्रशासक, अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के बीच आपसी प्रेम और भाईचारा बढ़ाने का प्रयास किया था। इनका भरपूर स्वागत हुआ। यह 'एच.एम.टी न्यूज डाइजेस्ट 'पिंजौर व लघु पत्रिका 'कथालोक' तथा 'दैनिक अमर उजाला 'के कानपुर संस्करण में प्रकाशित हुई।

यह मेरा सौभाग्य रहा कि 1974 में प्रकाशित देश के प्रथम लघु कथा संग्रह 'गुफाओं से मैदान की ओर' जो भाई रमेश जैन व भाई भगीरथ के संपादन में निकला था, मेरी दो लघु कथाएँ 'परिवर्तन' व 'संतोष, दया, कृपा' प्रकाशित हुई थी।

इसके उपरांत मेरी लघु कथाएँ यदा कदा विभिन्न पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। क्योकिं मेरा मुख्य लेखन, काव्य विधा की ओर मुड गया था। इस कारण 1972 में भाषा विभाग हरियाणा द्वारा मेरे काव्य संग्रह 'बैंजनी हवाओं में 'को राज्य श्रेष्ठ कृति पुरुस्कार व 1000 राशी एवं 2014 में हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा मेरे पहले खंड काव्य 'अक्षर हो तुम 'को राज्य श्रेष्ठ कृति पुरुस्कार व 21 हजार की राशी प्रदान की गई। जब कि मेरे दूसरे खंड काव्य 'सुनो राधिके सुनो 'को 2021 में उ प्र हिंदी संस्थान द्वारा खंड काव्य वर्ग में 'जय शंकर प्रसाद' मानद पुरुस्कार व 75 हजार की राशि के साथ तथा जयपुर साहित्य संगीति ने भी श्रेष्ठ कृति पुरुस्कार व 3100 की राशी के साथ पुरुस्कृत किया गया।

समय के साथ हो रहे परिवर्तन को झेलते हुए 2018 में अपना पहला लघु कथा संकलन 'एक कतरा सच' सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया था तथा अब दूसरा लघु कथा संकलन 'अंधेरों से आगे ' प्रबुद्ध पाठकों को अर्पित है। आप सब की बहुमूल्य प्रतिक्रियाएँ मुझे आगे और अच्छा लिखने को प्रेरित करेंगी।

विष्णु सक्सेना, एस जे 41, शास्त्री नगर, गाजियाबाद 201002. उ.प्र.

मो : 9896888017

अनुक्रम

सकारात्मक और दिशावाही सोच से लबरेज लघुकथाएँ
रोशनी का मार्ग है सकारात्मक सोच
अंधेरों से आगे
चबूतरा, जमीर, स्वभाव नहीं बदलता, अहंकार, माया का खेल, खूंटा, उतरन, जागरूकता, दोगले, अपने अपने स्वार्थ, बदलते मूल्य, बदलाव, लहरों जैसा है जीवन, समझौता, कागजी रिश्ते, कब बदलेंगे? जागृत किया विवेक, उपहार, उँगलियों का खेल, विश्वास किस पर?, उदारवादी दृष्टिकोण, विकास का मार्ग, योगदान, अंधी दौड़, माँ हमेशा ही सुहागिन!, अधिकार लेना पड़ता है, परोपकार, संवेदना, सीमा रेखा, प्रेम, आँसू, अचूक अस्त्र, सस्ता वाला चालान, एक सेटिंग यह भी, तगमे की ताकत, मुस्कराहट के लिए, लेन-देन, दूरदृष्टि, सुहाग, घर से बाहर?, अपना अपना परिवेश, निरीक्षण ऐसे भी, फुटबाल बनना ही नियति, सब कुछ बदल जाता है, सिमटते रिश्ते, उड़ते हुए लोग, ढोल तो ढोल है, मोह भंग, डर, आइना, राजनीति, कैसे-कैसे कलाकार, ऐसा भी होता है, बटवारा, व्यवहार, सौदा, उपकार, माया कहे पुकार के, पैसा बोलता है, इच्छा का सम्मान, भविष्य नजर आया, भ्रष्ट हो गया तंत्र, जीवन एक संघर्ष, सामर्थ्य की अनुभूति, जीवन का महत्व, नई पीड़ी नई सोंच, सम्मोहन किसके प्रति?, डूबते सूरज को कौन पूजता?

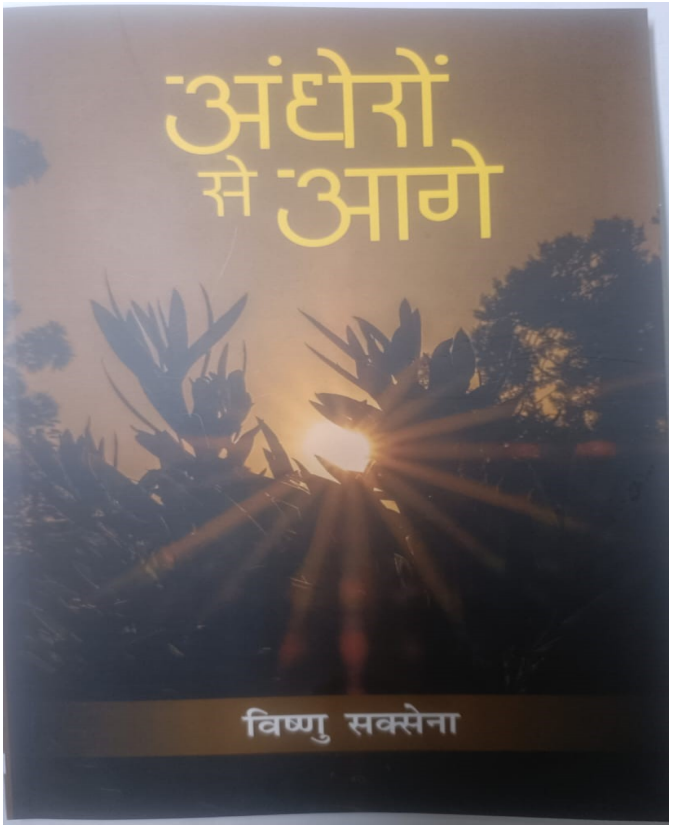

विष्णु सक्सेना

माता : श्रीमती कौशिल्या देवी
पिता : स्व. महाशय विशम्भर दयाल
जन्म : 26 जनवरी, 1941, दिल्ली
शिक्षा : डी. एम. ई (आनर्स) रुडकी (1964)
संप्रति : डिप्टी चीफ इंजीनियर के पद से एच. एम. टी. पिंजौर से सेवा निवृत्त।
प्रकाशित कृतियाँ : काव्य संग्रह-बैंजनी हवाओं में, गुलाब कारखानों में बनते हैं, धूप में बैठी लड़की, सिहरन साँसों की; खंड काव्य-अक्षर हो तुम, सुनो राधिके सुनो; कहानी संग्रह-बड़े भाई, वापसी; लघु कथा संग्रह-एक कतरा सच, अंधेरों से आगे
श्रेष्ठ कृति सम्मान : बैंजनी हवाओं में (भाषा विभाग हरियाणा 1972), अक्षर हो तुम (हरियाणा साहित्य अकादमी 2014), सुनो राधिके सुनो (उ. प्र. हिंदी संस्थान-जय शंकर प्रसाद सम्मान 2022) व क्षेष्ठ काव्य कृति सम्मान (जयपुर साहित्य संगीति 2021)
लघु शोध : विष्णु सक्सेना-व्यक्तित्व व कृतित्व (1998), कहानीकार विष्णु सक्सेना (2004), अक्षर हो तुम में मानव मूल्य (2017) तीनों कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हरियाणा से एम. फिल के लिए स्वीकृत।
सम्मान : राष्ट्रीय हिंदी सहस्त्राब्दी सम्मान 2000 (मानव संसाधन मंत्रालय), टेगोर अवार्ड (कालका प्रशासन), साहित्य सम्मान (पंचकुला प्रशासन) व अनेकों संस्थाओं द्वारा विशिष्ट सम्मानों से सम्मानित।
संपादन : कलादीप-लघु पत्रिका हरियाणा (1973 से 1975) व चित्रांश उदगार-चंडीगढ़ (1997)
विशेष : दूरदर्शन दिल्ली व जालंधर तथा आकाशवाणी जालंधर, रोहतक व रामपुर से कविताएं, कहानियां, वार्ता तथा साक्षात्कार का प्रसारण। देश भर की प्रतिष्ठित पत्र व पत्रिकाओं में सैकड़ों लेख, कविताएं, संस्मरण, कहानियां व लघु कथाएं प्रकाशित।
संपर्क : एस. जे. 41, शास्त्री नगर, गाजियाबाद-20002
मो. : 9896888017
ई मेल : vishnusaxena26@yahoo.com

पुस्तक समीक्षा

उजालों की तलाश में

हर अंधियारा अपने साथ उजाले लेकर आता है ।उजाला यानी उम्मीद। उम्मीद वैसी दुनिया की , जैसी हम गढ़ना चाहते हैं। वैसी और उतनी सांस्कृतिक भी नहीं ,जिसके लिए बार बार अतीत से प्रेरणा लेनी पड़े। खासकर ऐसे उथले समाज में जहां आदमी कदम कदम पर मिथकों से

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

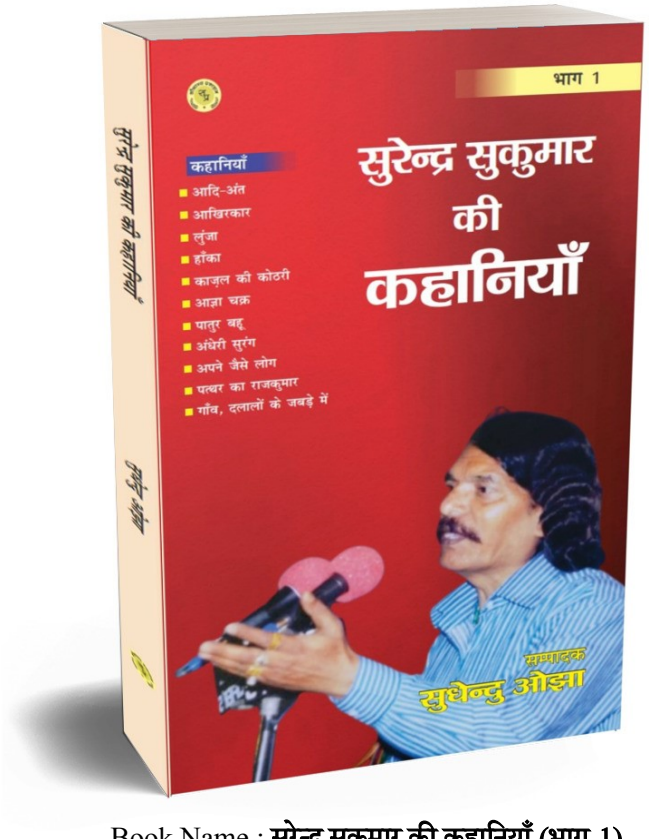

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

प्रेरणा लेता और डगमगाता है। दुनियां ऐसी होनी चाहिए, जिससे हम पूरी दुनियां के साथ पूरे सुकून और आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ सकें। जो इस देश के लोकतांत्रिक परिवेश के अनुकूल हो। इस कसौटी पर " अंधेरों से आगे" की बात करूं तो यत्किंचित डगमगाहट के बावजूद लेखक ने उम्मीद बनाए रखी है। करीब करीब हर लघुकथा अंधेरों से आगे की राह दिखाती है। यहां तक उन लघुकथाओ में भी जहां भ्रष्टाचार के भरोसे आसान रास्ता खोज लिया जाता है अथवा व्यावहारिकता के तकाजे को देखते हुए भ्रष्टाचार को समझौते की तरह अपना लिया जाता है _ उनमें भी एक तरह का संदेश है कि आगे की स्थितियां शायद वैसी न हों। कि आने वाला समय अवश्य ही बदला हुआ होगा। गंदगी या दाग दिख जाना इसलिए महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि उसके ए सफाई की जरूरत महसूस की जाने लगती है। सुधार और तरक्की की डगर इसी तरह आगे बढ़ती है। लेखक संवेदनशीलता की ताकत को जानता है। इसीलिए अपनी हर रचना में संवेदना और विवेक के संतुलन को बनाए रखना चाहता है। इसके लिए वह बधाई का पात्र है।

भारतीय संस्कृति में संतोष को अत्यधिक महत्व दिया गया है, इतना कि कबीर जैसा विद्रोही भी संतोष की विरुदावली गाने लगता है। इस संग्रह में "बदलाव" भी इसी कोटि की रचना है। लघुकथा में दृष्टांत शैली को अपनाया गया है। नायक राघव आधुनिक संस्कृति में ढला हुआ है। इक्कीसवीं शताब्दी का हवाला देकर वह संतोष से भी बदलने को कहता है। संतोष मृगतृष्णा बताकर कदम पीछे ले लेती है। राघव की आंधी दौड़ उसे "दया" और "कृपा " के सहारे जीने पर मजबूर कर देती है। संतोष और उसके बीच की दूरी बढ़ती ही जाती है। देखा जाए तो कम शब्दों की कसी हुई लघुकथा है। ऐसी रचनाएं लिखना आसान नहीं होता। लेकिन जिन्हें लिखना आसान नहीं होता, उन्हें कई बार समझना भी मुश्किल हो जाता है,खासकर बात जब दृष्टांत की हो , जहां संदेश सूत्रों में छिपा होता है।

लघुकथा कहानी की विधा है। उसमें कहानीपन रहना ही चाहिए। दृष्टांत में प्रतीकों के सहारे कही गई बात अक्सर कहानीपन की हत्या कर देती है। जो इस कठिन चुनौती को साध लेते हैं, वे अपने समय के खलील जिब्रान कहलाने का हक पा लेते हैं। "बदलाव " की बात करें तो असल समस्या है, कंज्यूमर कल्चर। रचनाकार की विशेषता है कि बिना उपभोक्ता संस्कृति का नाम लिए भी पाठक का ध्यान उस ओर चला जाता है। अगर इस रचना में कहानीपन को भी बचा लिया जाता तो मील का पत्थर कही जाती।

जिस समाज में हम जी रहे हैं,उसमें संतोष से अधिक सपने महत्वपूर्ण होते हैं।संतोष मनुष्य को आराम की नींद सुला देता है,सपने सोने ही नहीं देते। सो ऐसा रास्ता निकालना चाहिए कि संतोष की मर्यादा बनी रहे और सपने भी बिखरने न पाएं। मगर यह काम रचनाकार का नहीं होता। उस समाज का होता है,जिसको बेहतर बनाने की उम्मीद में रचनाकार कलम उठाकर समस्या की ओर इशारा करता है। अच्छी बात यह है कि संग्रह की कई लघुकथाएं सपनों के महत्व को सामने रखती हैं। " लहरों जैसा है जीवन "में शानू का कथन _ जीवन आड़ी तिरछी रेखाओं से ही बनता है, सीधी रेखाएं तो जीवन के अंत की ओर ही इशारा करती हैं। "हार _ जीत" हार जीत के बाद फिर उठ खड़े होने की प्रेरणा देती है। "विकास का मार्ग" में पिता के पुत्र को लेकर सपने हैं , जो पुत्र के निरंतर निखरते कौशल पर अपनी खुशी को इसलिए मन में दबाए रखता है , ताकि पुत्र घमंड में आपा खोकर लक्ष्य से भटक न जाए। ठीक ऐसे ही सपने देखती हुई लघु कथा है" दूर दृष्टि"। उसमें एक पिता अपने छोटे बेटे के सपनों को बचाए रखने का संकल्प लेता है।

"मां हमेशा सुहागन है ", "अधिकार लेना पड़ता है " जैसी कई लघु कथाएं अपने प्रेरणादाई संदेश के साथ मौजूद हैं वे न केवल परिवर्तनकामी और संबंधों को गरिमा प्रदान करने वाली हैं, बल्कि रचनात्मकता को उठान देने वाली भी हैं। ऐसे लघु कथाकार जो रचना में बिट और विदग्धता की उपस्थिति को अपरिहार्य मानते हैं, जिन्हें लगता है कि बिना व्यंग्य के लघुकथा हो ही नहीं सकती, उन्हें ध्यान देना चाहिए लघु कथा की अनिवार्यता कहानीपन है व्यंग्य नहीं।

पुस्तक की कुछ और रचनाओं पर बात करना चाहूंगा। "जागरूकता "शीर्षक से लिखी गई लघु कथा आसपास की सफाई को प्रेरित करने वाली है , लेकिन अनजाने ही यह लघु कथा पन्नी यानी प्लास्टिक की थैली का समर्थन करती प्रतीत होती है, जो पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा है। एक कहानी "तगमे की ताकत" आरक्षण को लेकर सामान्य सोच की ओर इशारा करती है पुस्तक में कुछ और भी रचनाएं हैं, जिनके पात्र दलित हैं, देश को आजाद हुए तीन चौथाई से अधिक शताब्दी बीत जाने के बावजूद समाज के एक वर्ग का दलित बने रहना या खुद को दलित कहने को मजबूर होना कि लोग उसे दलित समझे _यह अपने आप में ही त्रासदी है।पुस्तक की लघु कथाओं में कई रचनाएं अपने सकारात्मक दृष्टिकोण और सघन संवेदनशीलता के कारण मानक हैं। मैं फिर कहूंगा कि उन कथाकारों को अवश्य पढ़ना चाहिए ,जो लघु कथा और लघु व्यंग्य की दूरी को भुला बैठे हैं। मानते हैं कि बिना व्यंग्य या विदग्धता के अच्छी लघु कथा लिखी ही नहीं जा सकती मेरी ओर से सक्सेना जी को अशेष बधाइयां। साधुवाद।

समीक्षक : ओम प्रकाश कश्यप
पुस्तक :अंधेरों से आगे (लघु कथा संग्रह)
लेखक : विष्णु सक्सेना

यह पाप किसके सर होगा

रोज देखती हूं
घर के पीछे सबसे उंचे पेड़ पर
नीलकंठ के जोड़े को ,
हंसते गाते क्रीड़ा करते,

उनको हंसते गाते कीड़ा करते
देख कर लगता है
ईश्वर भी ऐसे ही मुस्कुराता होगा ,

एक कही दूर चला जाता है
तो दूसरा उसे
पुकार लगा-लगा बुला लेता है,
कुछ देर में आ बैठते हैं
पास और बतियाने लगते हैं ,
अपने दुख -सुख, खुशी -गम ,
मगन रहते ,
अपनी दुनिया में ,

उनकी दुनिया में
पेड़, आसमान,
नदिया उसका साथी,
इसके अलावा कोई नहीं है ,
लेकिन वह खुश है
एक दूसरे के साथ,

मोहल्ले में आज लगा है
लाउडस्पीकर ,
अपनी पूरी तेज ध्वनि में ,
अपने इष्ट का
अर्चन करने के लिए ,

उसकी तेज ध्वनि
कभी-कभी मन बेचैन करती ,
घबराहट भर देती सीने में ,
तो कहीं दूर
एकांत में जाना पड़ता है,

लेकिन अपना दुख लेकर
यह नीलकंठ कहां जाएं ,
तेज ध्वनि के चलते
उसकी पुकार ,
उसके साथी तक नहीं जा रही है ,

जिसके चलते
वह अकेले उदास, निराश बैठा है ,
उसकी उदासी का पाप
किसके सर होगा??

□□□□

रेखा शाह आरबी
बलिया(यूपी)

मुझे अच्छा लगता है

दोस्तों के साथ उठना बैठना गप्पें लड़ाना
सुबह की सैर पर निकलना ठहाके लगाना
पार्क में बैठ कर पुरानी बातों को याद करना
बच्चों को खेलते देख कर बचपन में खो जाना
मुझे अच्छा लगता है

मुश्किल वक्त में किसी के काम आना
बच्चों से मिल कर बच्चों सा बन जाना
दूसरों को खुश देख कर खुश हो जाना
गम में किसी के शामिल हो आना
मुझे अच्छा लगता है

गांव की गलियों में यूं ही घूम आना
मंदिर में जाकर जोर से घंटी बजाना
बटबृक्ष के नीचे बैठकर यादों में खो जाना
बुजुर्गों को रिश्ता लगाकर बुलाना
मुझे अच्छा लगता है

अपनों संग मिलकर खुशी का जश्न मनाना
पुराना मधुर सा कोई गीत गुनगुनाना
दुनियाँ में लगा रहेगा यूं ही सबका आना जाना
मन ही मन यह सोचकर मुस्कुराना
मुझे अच्छा लगता है

गांव के खेत में काम करना हल चलाना
खेतों में दूर दूर तक घूमने निकल जाना
रास्ते में मिलने वालों से बतियाना
अपने घर के आंगन में जमीन पर बैठ जाना
मुझे अच्छा लगता है

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

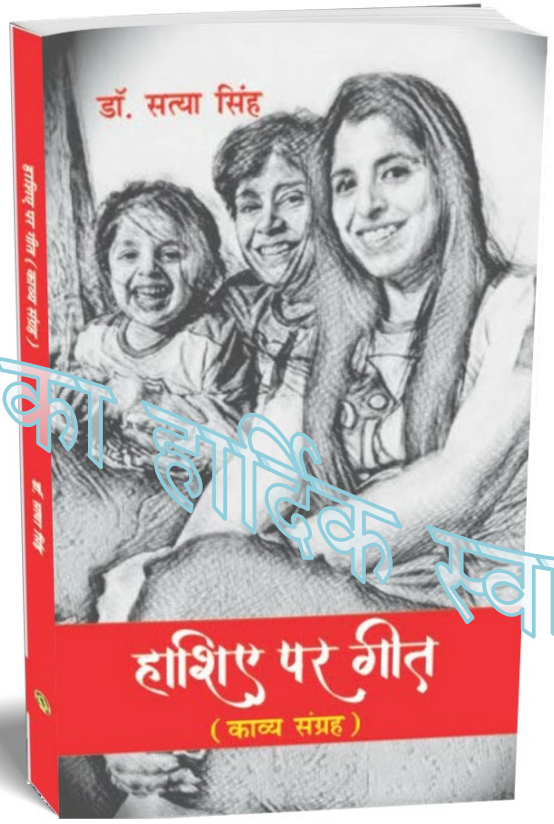

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

प्रिया देवांगन "प्रियू"

प्री वेडिंग – एक फिज़ूलखर्च

शादी फिक्स होते ही लोगों का सबसे पहला सवाल– "प्री वेडिंग हो गई?" हो गई तो अच्छी बात है नहीं हुई तो क्यों नहीं हुई? आजकल तो सभी करवा रहे हैं। इस आधुनिक युग में ये सब आम बात है, अरे भाई! शर्माना कैसा? आप बस तैयारी शुरू करो। आपको एक बहुत अच्छे फोटोग्राफर और प्लेस(स्थान) बताने की जिम्मेदारी हमारी रहेगी। ज्यादा खर्च नहीं आएगा बस वही..... 'साठ से सत्तर हजार मात्र' ही लगेंगे! और भी...अच्छी फोटोग्राफी चाहिए तो रुपए बढ़ा देना।

आजकल ये हर रिश्तेदार का स्वभाव बन गया है।

भारतीय संस्कृति में विवाह– हमारी भारतीय संस्कृति में विवाह को ईश्वर का वरदान और आशीर्वाद के रूप में माना जाता है। बड़े बुजुर्गों का मानना है कि जोड़ी ईश्वर की बनाई हुई होती है। इसमें कोई संदेह नहीं है लेकिन आजकल के मानव इन सभी रीति-रिवाजों से धीरे–धीरे मुँह मोड़ने लगे हैं। इसके अलावा पश्चिमी परंपराओं को अपनाते जा रहे हैं। ये कहाँ की नीति है? हिंदू धर्म में लड़का और लड़की का विवाह के पहले मिलना धर्म के विरुद्ध माना जाता है। आधुनिकता के चलते इन सब बातों को दरकिनार किया जा रहा है। विवाह सात जन्मों का पवित्र बंधन होता है। आजकल की युवा पीढ़ी इन सब बातों का तात्पर्य नहीं समझते।

प्री वेडिंग– विवाह से पहले युवक–युवती एक–दूसरे से मिलने के साथ ही साथ अलग–अलग स्थानों में जा कर फिल्मों की तरह फोटोशूट कराते हैं। नए–नए आधुनिक कपड़े, नए जूते, वगैरह.....वगैरह....! आजकल के युवक–युवती अपने बड़े बुजुर्गों, माता–पिता, भाई –बहन के सामने ऐसे फोटो शूट कराते हैं मानो.... जन्मों से नाता हो। पश्चिमी सभ्यता को अपनाना और भारतीय संस्कृति को भूलना कहाँ तक उचित है? अगर कोई रोक–टोक करे तो बारूद की तरह फटने में देर नहीं करते। "देहाती" शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अरे! तुमको क्या पता ये प्री वेडिंग शूट क्या होता है? अच्छा! सोच बदलो सोच। ठीक है, सोच बदलना ही चाहिए। लेकिन सोच के साथ–साथ मर्यादा, धर्म और संस्कृति पर निष्ठा रखनी चाहिए। छोटे–छोटे कपड़े पहनकर एक–दूसरे को आलिंगन करना, प्रेम का इजहार करना, शर्मशार कर देने वाली हरकतें करना। क्या इन्हीं सब बातों के लिए सोच बदलना है? जिस इंसान से आप कुछ ही हफ्ते पहले मिले हैं, बिना एक–दूसरे को जाने, सोशल मीडिया में प्रेम का इजहार कर के क्या बताना चाहते हैं कि हम एक–दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं? विवाह के पहले ही सब कुछ खुलेआम हो जा रहा है। लज्जा व संकोच नाम की चीज बची ही नहीं है और लोग बोलते हैं सोच बदलो। प्रेम दिखावा नहीं है जो दुनिया के सामने दिखाया जाता है। जिन चीजों में मर्यादा है उसको सरे-आम दिखाया जा रहा। यही आजकल के नई पीढ़ी की सोच बन गई है।

रीति–रिवाज– हमारी भारतीय संस्कृति में कन्या का हाथ वर के हाथ में तभी दिया जाता है, जब वर–वधु मंडप में बैठते हैं। सभी रस्म, रीति–

रिवाजों के साथ एक–दूसरे से जन्म-जन्मांतर का नाता जोड़ा जाता है। आधुनिक युग के चलते ये सभी रस्म प्री–वेडिंग के दौरान ही हो जाता है। बस... औपचारिकता ही बची रहती है। अगर ऐसे आयोजन में होने वाले फिजूलखर्ची को शादी वाले घरों में अथवा अनाथ आश्रम में दान करने बोल दिया जाएगा तो.... आग बबूला होने से पीछे नहीं हटेंगे, वहीं प्री वेडिंग में लाखों रुपए फेंकने से हिचकते नहीं हैं। स्वागत समारोह में सार्वजनिक रूप से प्रोजेक्टर के माध्यम से लोगों को दिखाया जाता है कि हम शादी से पहले ये सभी रस्मों को निभा चुके हैं। बस समाज के सामने मंत्रोच्चारण द्वारा शादी करना ही रह गया था। प्रोजेक्टर के माध्यम से ऐसे प्रसारण करते हैं मानो... बहुत ही अच्छा कार्य किया गया हो। सम्मान मिलने के स्थान में उनकी बदनामी होती है खैर....क्या फर्क पड़ता है...? पड़ोस में शादी हुई तो उनके बेटे–बहू ने प्री वेडिंग करवाया था, सो.....हम उससे भी अच्छी जगह जा कर करवाएंगे प्री वेडिंग!लोग स्वयं को दिग्भ्रमित कर लेते हैं और भेड़ की चाल चलने लगते हैं।कहीं–कहीं बड़े बुजर्गों को नजरें झुका कर चलने में मजबूर कर देते हैं। पश्चिमी सभ्यता के अनुसार सोच बदल ही रहे हैं तो एक बात है की वहां एक नहीं अनेक विवाह करने की सभ्यता है, पति या पत्नियां बदलना वहां फैशन सा है। तो क्या? हमारे हिंदू युवक–युवती भी आने वाले समय में इसे अपनाने में कसर नहीं छोड़ेंगे? बच्चों पर क्या असर पड़ता है इसका ख्याल रखना भी जरूरी है। ये सब परंपराएं बंद होनी चाहिए।

रिश्तेदार और मित्र ऐसे खुश होते हैं जैसे खुद की शादी हो रही । "थ्री डेज़ टू गो..." स्टेटस ऊपर स्टेटस!इंतजार ही नहीं होता। कब वो दिन आए और कब आनंद लें! फिर क्या, शादी के बाद पूछता ही कौन है? चुनाव जीतने के बाद प्रत्याशी कहाँ गए पता ही कहाँ चलता है। जैसे–जैसे शादी नजदीक आती है रिश्तेदारों और मित्रों का स्टेटस के माध्यम से प्रचार–प्रसार बना रहता है।शिष्टाचार बखूबी निभाते हैं।

फोटोग्राफर– हाँ! इन दिनों फोटोग्राफर की कमाई में कोई शक नहीं, क्योंकि प्री वेडिंग के चलते उनकी कमाई दुगुनी हो गई है। फ्री में खाना –पीना, नए–नए जगहों में जाना। उनके जीवन में बदलाव आने लगा है। पाँचों उंगलियाँ घी में डूबी होती हैं। काफी खुश दिखाई पड़ते हैं। तीन मिनट के वीडियो में लाखों रुपए कमाना। वाह! वे सोचते हैं हर दिन ऐसे ही लोग प्री वेडिंग कराते रहें। और हम नोट गिनते रहें।

नोट:– मेरी बातों से बहुत से सामाजिक/सज्जन व्यक्तियों को ठेस पहुँची होगी। तीखी मिर्ची भी लगी होगी, क्यों? क्योंकि..... वे स्वयं अपने–अपने विवाह से पूर्व प्री–वेडिंग करवा चुके होंगे।सो..... "सच तो कड़ुआ होता है न!" (सत्यं सदा कटु एव भवति)। निवेदन है कि पश्चिमी सभ्यता को छोड़कर भारतीय परंपराओं पर प्रकाश डालें। बच्चों को धार्मिक और आध्यात्मिकता से जोड़ें। विदेशों में भारतीय परंपराएं अपनाई जा रही हैं और हमारे देश के सभ्य नागरिक अपने ही गौरवशाली और मर्यादित रीति–रिवाजों में पीछे होते जा रहे हैं।

हो जीवन उद्गार प्रिय

इंद्रधनुषी सतरंगी
झिलमिल हो नभ पंथ
कनक थाल में मेघ सजा हो
हो जीवन उद्गार प्रिय।

सुरमई शाम
आँगन में दीप
नूपुर की रुनझुन से,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

अंतर्मन भर पुलक
अरुण का सूर्य कलश
पाँव में महावर हो,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

अलि गूँजित मधुवन
सुधि से सुरभित स्नेह
स्पंदन ले अंक में,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

चिर अनमोल बंधन
प्रेम की परिधि
सागर की मोती सा, हो जीवन उद्गार प्रिय।

अंबर में विद्युत
उर में है बादल
साँसों के सौरभ-सा,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

मधुरता अलक्षित
स्वर्ग सा श्रृंगार
संगीत की झंकार से
हो जीवन उद्गार प्रिय।

पवन हौले मृदुल पावस का पलक डोल
तारों की चाँदनी-सा,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

बबिता सिंह,
हाजीपुर वैशाली
बिहार

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

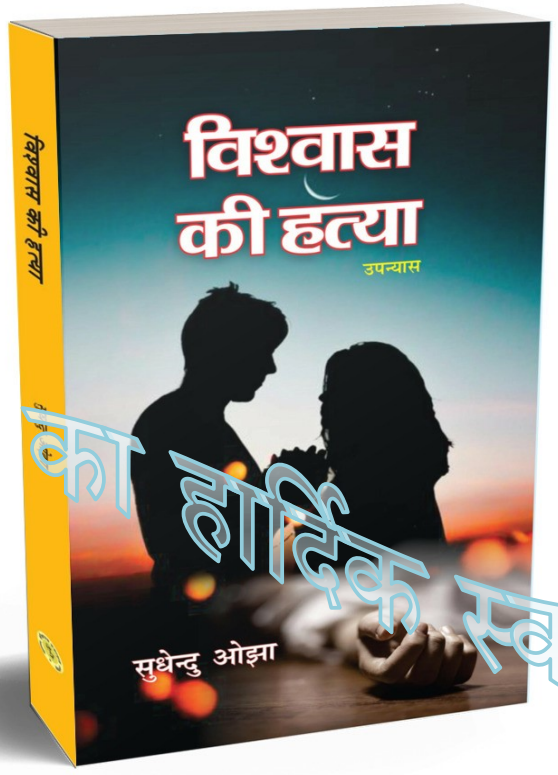

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

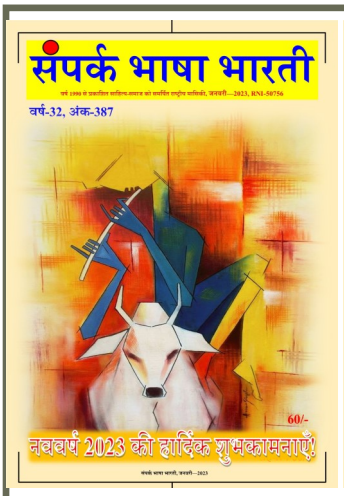

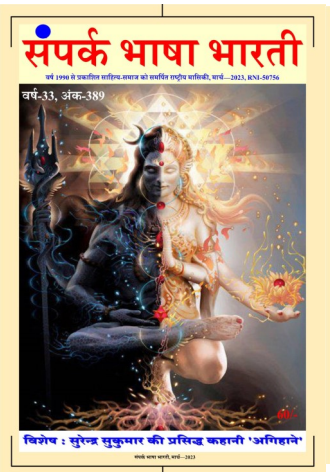

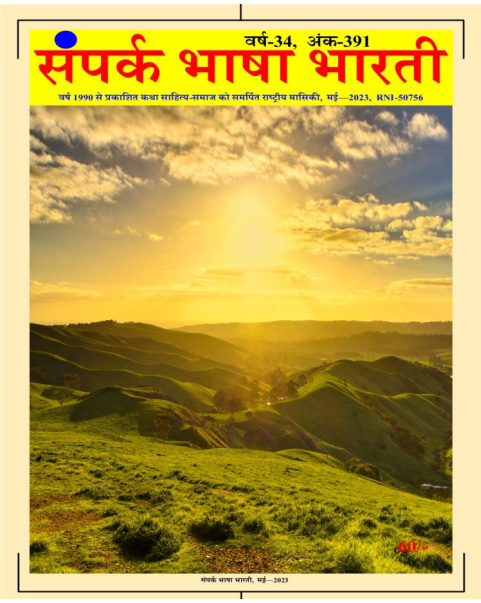

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

गर जिद बाँध ले
मुश्किल नहीं है कुछ भी

गर जिद बाँध ले I
गिरना उठना फिर गिरकर उठने
क्या चींटी से नहीं सीखा तूने
अरे जिंदगी तो संघर्ष है फिर
क्यों परवाह करता है बावले,
मुश्किल नहीं है कुछ भी गर
गाँठ बाँध ले ।।
सीख उस माउंटेन मैंन (दशरथ माझी)से
जिसने एक हथौड़े छेनी से
पहाड़ का सड़क बना डाला
जिसमें कोई विघ्न आड़े न आ
पाए ऐसी गांठ बाँध ले I
मुश्किल नहीं है कुछ भी गर
जिद बाँध ले ।।
असफलता और दुख को बना
दोस्त क्योंकि दोस्त ही है
जो तुझे अकेला नहीं छोड़ेगा
हैरान कर दे उस बोली को
जो बोलता तुझे बोली है
मन वो विचार ठान लें I
मुश्किल नहीं है कुछ भी गर जिद
बाँध ले।।

निर्मला कुमारी, 1A/8 यमुनानगर
नैनी,प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

1

किनारा भी वहाँ मझधार सा है।
जहाँ दरिया किसी किरदार सा है।

हवा के साथ ग़र कश्ती चले तो,
सहारा वो किसी पतवार सा है।

रहेगा राह भर मिलकर हमेशा,
मुसाफ़िर साथ में दिलदार सा है।

कभी खामोशियाँ कहती हैं हमसे,
इशारा आपका इकरार सा है।

कभी आगे कभी पीछे चलेगा,
ज़माना चाँद की रफ़्तार सा है।

रिवायत इश्क़ है मुश्क़िल तो लेक़िन,
निभाना भी जिसे दरकार सा है।

2

कहने भर की ख़ूब कमाई।
हँसती है हम पर महँगाई।

बाजारों के भाव सुने तो,
नोटों की कीमत झुठलाई।

धंधे बाजों की आसानी,
मुश्क़िल में हैं कम तनख़्वाई।

कर-चोरी,कमतोल,मिलावट,
घोर मुनाफ़ाख़ोरी छाई।

रुपयों का व्यवहार रहा बस,
भूले पैसे , आना ,पाई।

बढ़ता निजी का फैशन सब,
लगता है अब जेब कटाई।

आजादी के इस आलम में,
छूट मिली है कितनी भाई।

नवीन माथुर पंचोली
अमझेरा धार मप्र
मो 9893119724

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

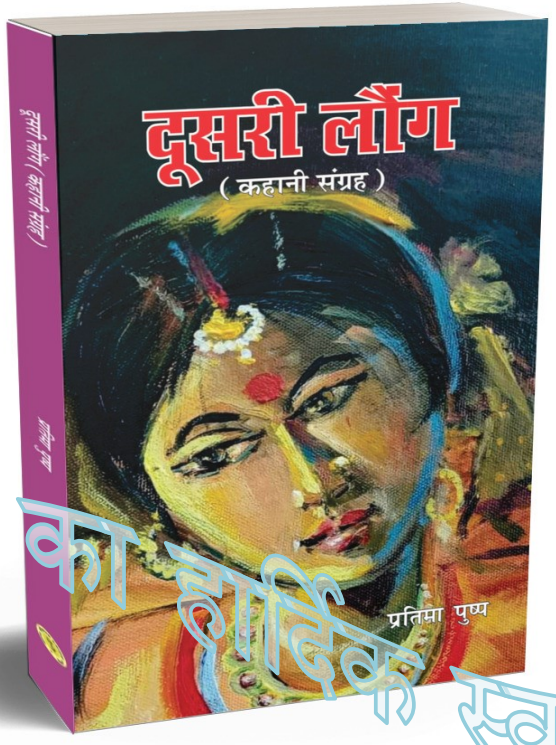

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

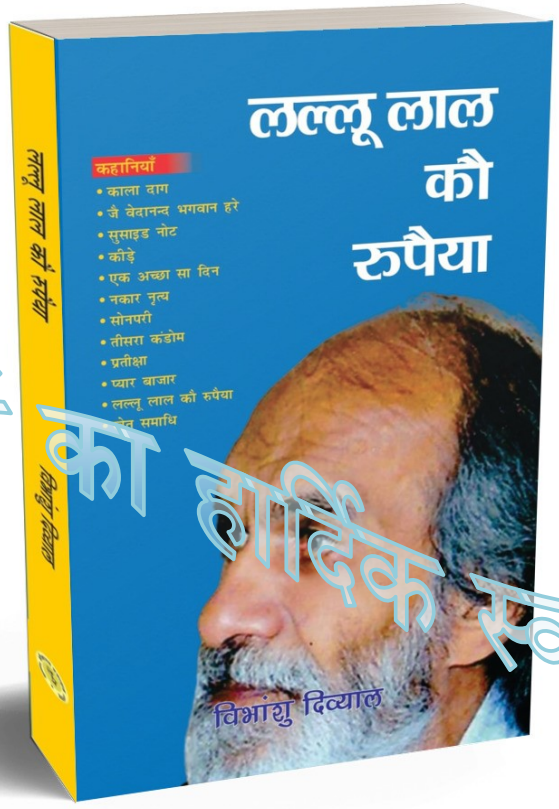

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

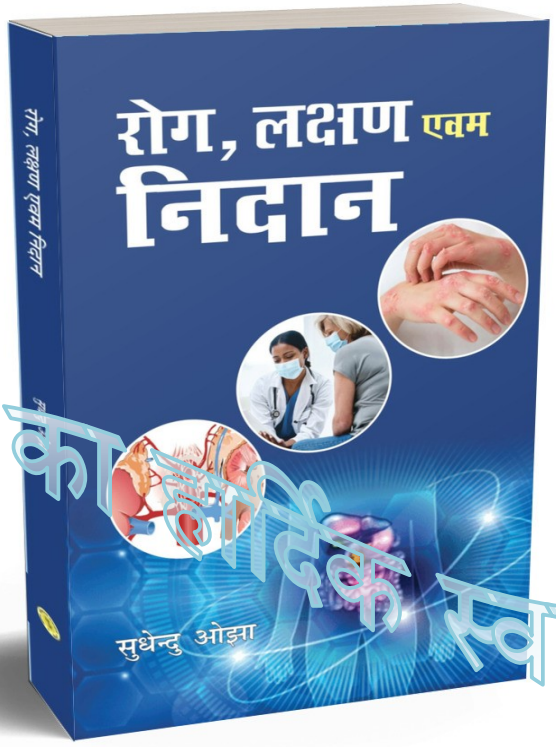

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

मोबाइल का झूठ

मेरे मोबाइल में सुरक्षित हैं नम्बर-
दोस्तों,रिश्तेदारों के,
हॉकर के, अस्पताल, काम वाली बाई,
दूध वाला,डिश वाला,
ऑफिस, स्कूल..और वकील के।

इसमें नहीं मिला नम्बर मुझे-
हरहराती नदी का, मचलते जंगल का,
गर्वीले पहाड़ों का, सुरमई भोर का,
ताकती साँझ का,
चहकती चिड़िया का..और
स्फूर्ति भरी बेफिक्र भोर का।

गुड मॉर्निंग की जगह यदि आपके पास
इनके नम्बर हो तो भेजिएगा!
मुझे सहेजना है-
प्रकृति का हरापन,
नदी की पवित्रता और
चहकती ज़िंदगी के बीच
अपने छोटे से घर में एक बाग़ीचा।

मोबाइल के चारों ओर
बहानों एवं झूठ की दुनिया आबाद है
मोबाइल एक जेल है
जिसकी कैद में घुट रही है-
मेरी प्रकृति,मेरी जिंदगी और
मानवीयता के सभी सरोकार..।

.....

रमेश कुमार सोनी
24 LIG, कबीर नगर 2, रायपुर,
छत्तीसगढ़, पिन-492099

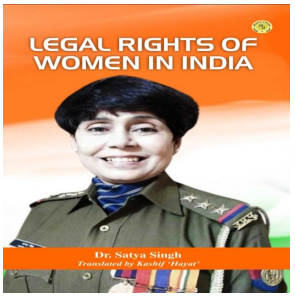

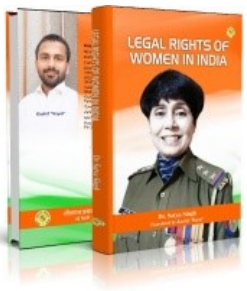

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
जून–2024, RNI-50756
वर्ष-34, अंक-403 मूल्य 150/-